खम्ब-थोइबी



कालाचान्द

खम्ब-थोइबी

• • •

लेखक :

श्रीलोइतोंगबम कालाचान्द सिंह

मूल्य रु० [redacted]

प्रकाशक
ओ० के० छोर
इम्फाल

१९६३
१,००० कोपियाँ

मुद्रक
वीणा प्रिन्टिं वार्कस
इम्फाल



ग्रंथकार

दो शब्द

मणिपुरमें 'खम्ब-थोइबी" की कहानी बड़े चावसे सुनी तथा पढ़ी जाती है। यहाँ कदाचित ऐसा व्यक्ति मिलेगा जिसने खम्ब-थोइबी की कहानी कुछ न कुछ न सुनी हो। इससे इस कहानी की लोक-प्रियता प्रामाणित हो गयी है। किन्तु दुख की बात है कि मणिपुर में अभी तक ऐसी पुस्तक न प्रकाशित हुई है, जिसमें इस कहानीका पूर्ण-रूपसे वर्णन किया गया हो। राष्ट्र भाषा हिन्दी में तो किसीने अब तक इस लोकप्रिय कहानी को पूर्ण रूपसे प्रस्तुत करनेका प्रयास नहीं किया है। इस अभाव को कुछ अंशोंतक दूर करनेके उद्देश्यसे "खम्ब-थोइबी" नामक यह पुस्तक लिखी गई है, जो उपन्यास के रूपमें प्रस्तुत है।

यह पुस्तक हिन्दी में इसलिए लिखी गई हैं कि मणिपुर और मणिपुर के बाहर के हिन्दी जानने वाले व्यक्ति भी इसे पढ़ सकें और इसकी लोगप्रियता अधिकसे अधिक फैले इस पुस्तक के लिखने में मैंने स्वर्गीय हाउदैजम् चैतै द्वारा सन् १९०३ इ० में लिखी "खम्ब-थोइबी' नामक पुस्तकसे सहायता ली है। इसके अतिरिक्त स्व० हिजम अङाहल की पुस्तक "खम्ब-थोइबी भाग १" से भी सहायता की गयी है। अतः मैं इन दोनों लेखकोंके प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मैं सर्व श्री एन० नीलमणि सिंह एम:, ए:, हिन्दी साहित्य रत्न, अरिबम धनश्याम शर्मा हिन्दी पारंगत, और राज कुमार बीदिरचान्द

सिंह राष्ट्रभाषा रत्न का भी आभारी हूँ। जिन्होंने इस पुस्तक के भाषा संशोधन में सहायता प्रदान की थी।

पाठकगण इस पुस्तक की त्रुटियोंपर विशेष ध्यान न देकर पढ़ें तो मैं अपने प्रयासको सफल समझूँगा। हो सकता है कि इस पुस्तक में कुछ व्याकरण सबंधी अशुद्धियाँ रह गई हों, उन्हें अगले संस्करण में शुद्ध किया जायगा।

मणिपुर सरकार के शिक्षा विभागने पुस्तक प्रकाशन के लिए ७०० रुपयेका अनुदान प्रदान करनेकी बड़ी कृपा की। अतः उपयुक्त विभाग के अधिकारियोंको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

आपका

एलः कालाचान्द सिंह

अनुक्रमणिका

खम्ब-थोइबी

पहला-परिच्छेद

'स्थान'

करीब इम्फालसे दक्षिणमें २८ मीलके फासलेपर एक सुन्दर स्थान है। इसका नाम मोइरांग है। प्राचीन कालमें यह स्थान सभ्यताके ऊँचे शिखरपर था। इस नगरकी प्राकृतिक छटा मनो-रंजक है। जब कोई कवि इस नगरके दृश्यको देखता है तब उसके मनमें आनन्दकी लहरें जाग उठती थीं।

यह नगर तीनों ओरसे पर्वत-मालाओंसे परिवेष्टित है। पश्चिमकी ओर सबसे ऊँचा पहाड़ थांगजिंग है। पूर्वमें एक छोटीसी पहाड़ी है, इसका नाम है खौदेम। यहाँ एक बड़ी झील है। उसका नाम लोकताक है। यह झील पूर्वी भारतमें सबसे बड़ी झील है। इस सुन्दर झीलके बीचोंबीच छोटी छोटी पहाड़ियोंकी पंक्तियाँ हैं। वे मणियोंकी माला जैसी हैं; उनमें थांग और कारांग प्रमुख हैं।

लगभग आजसे आठ-सौ वर्ष पूर्व मोइरांगमें एक राज्य था। थांगजिंग पहाड़की तराईमें उस राज्य कालकी पुरानी टूटी फूटी चीजोंका चिन्ह वर्तमान है।

षण-शेन्बा

(गाय चराना)

एक वाटिकाके बहुत पुराने टूटे-फूटे घरमें भाई और बहिन बातचीत कर रहे थे। वे बहुत गरीब थे, उनके माता-पिता छुतपनमें उन्हें छोड़कर चल बसे। इस कारण छोटे-भाईके पालन पोषणका भार बहिनके सिरपर आ पड़ा। उनके लिए इस गाँवमें कोइ सहारा नहीं था। धन-सम्पत्ति भी कुछ नहीं थी। उसके परिवारमें दोनोंके अलावा कोई नहीं था। इन परिस्थितियोंको देखकर बड़ी बहिनके मनमें बहुत दुख हुआ।

उनके जीवन निर्वाहकी समस्या एक बड़ी समस्या थी। रोज बड़ी बहन गाँवके घर घर जाकर काम करती थी। उससे मिली हुई मजूरी ही दोनोंकी जीविका थी। लेकिन मजूरी न मिलनेपर कभी-कभी वे उपवास भी करते थे। बड़ी बहिन माँकी भाँति अपने भाई खम्बका पालन पोषण करती थी। कहीं कहीं पहाड़पर जाकर लकड़ी भी काट लाती थी और उसे बाजारमें बेचकर घरका खर्च चलाती। बहनकी ऐसी अवस्थाको देखकर खम्बका दिल रोने लगा।

एक दिन खम्बने अपनी बड़ी बहन खम्नुकी ओर देखकर कहा 'बहन ! आजसे मैं तुम्हें माँ कहकर पुकारूंगा। तुम बचपनसे मेरे लिए बहुत कठिन काम करती आ रही हो। प्रत्येक घर जाकर धान कूटनेसे तुम्हारे हाथमें छाले पड़ गए। इतना कष्ट

उठाकर मुझे तुम पाल रही हो। मेरे लालन-पालनके लिए द्वार द्वार जाकर भीख माँगनेकी जरूरत नहीं। तुम घरमें बैठो रहो। मैं जवान हो गया हूँ। तुम्हारे सब काम मैं कर सकता हूँ। मैं केगे मुहल्लेके किसी आदमीके वहाँ नौकरी करके तुम्हारा पालन पोषण करूँगा। इसलिए आजसे तुम ये सब काम छोड़ दो। मेरी अच्छी बहन! तुम मेरा कहना मान जाओगी न?'

अपने छोटे भाईकी बातें सुनकर बहन क्षीण स्वोरसे कहने लगी। मेरे भाइ! तुम कैसे नौकरी कर सकोगे? तुझे घर बाहरका कुछ भी ज्ञान नहीं है। किसके यहाँ जाकर तुम नौकरी करोगे? तुम मर्द हो, यह भी मैं जानती हूँ। फिर भी अपने प्यारे भाईको किसी भी हालतमें अपने जीते जी नौकरी करने नहीं दूँगी। तुम जवान हो गए हो।

पहननेके लिए अच्छे कपड़े तुम्हारे पास नहीं। ऐसी अवस्थामें तुम बाहर निकालोगे तो लड़कियाँ तुम्हारा मजाक करेंगी। उनके सामने तुम कैसे जा सकते हो? यदि तुम बाहर निकालोगे तो संसारकी कई वासनाओंमें फंस जाओगे। हमारे चारों ओर विघ्न बाधाएं हैं; इसलिए तुम्हें निकालना नहीं चाहिए। हमारा भी समय आएगा। कोई बात नहीं, हमारे माता-पिताने मुझे अङोम फैरोइजाम्बके हाथोंमें मेरा हाथ दिया था। उसकी सहायतासे तुम्हारे भाग्यका उदय होगा। इस वक्त तुम्हें बाहर जानेकी आज्ञा न दूँगी। यह वचन सुनते ही भाईका हृदय शान्त हो गया।

पैबन्द लगी हुई मेखला (फनेक) पहनकर खमनु रोजगारके लिए घर घर जाकर भीख माँगनेकी तैयारीमें थी। अपने हृदयमें तरह तरहकी भावनाएँ आ रही थीं। मेरे भाईको अधिक खानेकी आदत है, घरमें खाने पीनेको कुछ भी नहीं। यह सोचकर खमनुकी आँखोंसे आँसूओंको धारा बहने लगी। दुखकी सीमा न रही, पर खम्बकी इच्छा दूसरी है; किसीने खम्बको आदेश दिया 'हे खम्ब! तुम्हारी बड़ी बहन अधिक दुखित है। तुम्हारी बड़ी बहनका लालन-पालन करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।' इस विचारके आते ही खम्ब अपनी बहनके पास जाकर कहने लगा—'बहन मेरी बात ध्यानसे सुनो। तुम कहाँ जा रही हो? माँगनेका काम आजसे बन्द कर दो।' यह कहकर खम्ब उसके चरणोंमें गिर पड़ा।

भाईका मधुर बचन और निराशसे भरे चेहरेको देखकर बहनका हृदय पिघल गया। वह भाईको उठाकर बोली—'मेरे प्यारे भाई! तुम्हें नौकरी करनेको मैं कैसे कहूँ?' बहनकी बात सुनकर खम्बने गद्-गद् कंठसे कहा 'मेरी प्यारी बहन! बचपनसे तुम्हारी आज्ञा पालन करता आ रहा हूँ। एक दिन भी ऐसा नहीं था कि तुम्हारे आदेशका उल्लघंन मैंने किया हो। ऐसी शक्ति मेरे पास कहाँ? अतएव आज आपके चरण छूकर मैं यह अंतिम प्राथंना कर रहा हूं कि मैं जवान हूं और ताकतवर हूँ, मुझ जैसे भाईके रहते हुए भी तुम इस तरहके नीच काम करती रही और मैं देख रहूँ। यह कैसे हो सकता

है। इस केंगे ईलाकेमें कामका अभाव नहीं है। मेरे लिए सब कुछ सम्भव है। तुम मेरा कहना मान लो। हमारे माता पिताने तुम्हारे लिए कोई दहेज छोड़ नहीं रखा है। अगर तुम्हें फैरोइजाम्बसे व्याह करना है तो सब खर्च उसकी तरफसे होगा यह मैं कैसे सहन कर सकता हूँ। मैं चाहता हुँ कि बड़ी बहनका विवाह मेरे धनसे हो हो यदि मैं काम करूँ तो कुछ धन जमाकर रख सकूँगा।'

भाईकी तर्कयुक्त बातें सुनते ही खमनु कुछ देरतक मौन रही। आखिर मौन भगकर दीनतासे खम्बकी ओर देखकर उसने आदेश दिया—'मेरे हृदयके मणि! तुम्हारी इच्छा पूरी हो'

बहनकी दयाभरी बातें सुनकर खम्ब आनन्दके सागरमें डूबता हुआ बोला 'मेरी बहन, तुम्हारी आज्ञा पालन करनेकी शक्ति मुझे थांगजिंग देवता दे।' यह कहते हुए खम्ब अपनी फटी पुरानी धोती पहनकर शरीरमें मलिन और मोटी चादर ओढ़े, हाथमें छड़ी ले बाहर निकला। इस दृश्यको देखकर खमनुको अपने मृत पिता भी याद आयो और वह फूट-फूटकर रोने लगी। वह सोचने लगी काश! मेरे पिता जीवित होते।'

खम्बकी उम्र बीस सालकी थी। वह पहलवान था। उसकी ताकत अद्वितीय थी। वह घरसे बाहर आया और वायुकोणकी ओर मुड़कर चला गया। उसने चलते चलते सोचा 'केंग लैकाईके धनी लोगोंको मैं नहीं जानता, वह मन ही मन पूछने लगा—किसके यहाँ नौकरी करूँ ?' आखिर उसने आनुमान किया

'यदि सुन्दर मकान, बड़ा फाटक, गाय और भैंस आदिसे युक्त स्थान हो तो वह धनी लोगोंका भवन होगा। ऐसे भवनको देखते ही मैं नौकरीके लिए प्रार्थना करूँगा।' यह सोचकर खम्ब जा रहा था। सौभाग्यसे एक बड़ासा मकान मिला जिसमें गाय, बैल, कुटिर आदि सब कुछ थे। उसको देखकर खम्ब शीघ्र ही घुस गया।

इस वक्त बड़े भवनके प्रांगणमें चिंखुब युवराज आसनपर बैठकर हुक्का पी रहे थे दूसरी ओर उसकी सर्वांग सुन्दरी राजकुमारी थोइबी सामने शामुकके ऊपर तकिया और तकिये पर मेखला रखकर अपने कोमल हाथसे कसीदाका काम कर रही थी। उसके निकट दासी सेनु कान्न (रेशम) ठोक कर रही थी। इस समय खम्ब उसी घरके समीप आ पहूँचा। राजकुमारी थोइबीका रूप इतना सुन्दर था मानो पुनमका चाँद। उसकी सुन्दरताके आगे अप्सराए नहीं ठहर सकती। सुन्दर चेहरेके आस पास फैली हुई केश राशि मानो नागिन है। इस रूपवती कुमारीको देखकर खम्ब चकित रह गया।

चिंखुब युवराजकी दृष्टि उसपर पड़ी, एक अपुर्व सुन्दर युवकको सामने देखकर वे दंग रह गए। 'वेशभूषासे तो मालूम होता कि यह युवक गरीब है।' यह भावना मनमें आने लगी। उन्होंने पूछा वत्स, तुम कहाँसे आए हो, क्या काम है ? बताओ, तुम क्या चाहते हो ?"

युवराजकी बाणी सुनकर खम्बने जबाब दिया 'हे तात! आपके पास नौकरी करकनेको आया हूँ। जो कोई भी काम आप मुझे सौंपे मैं वही करूँगा, ताकि मैं अपना जीवन निर्वाह कर सकूँ।

यह बात सुनते ही थोइबी और सेनु हंस पड़ीं। थोइबीकी दृष्टि खम्बकी ओर आकर्षित हो गयी। उन दोनोंमें आँखें चार हो गयीं। खम्बको देखते ही थोइबी पत्थरकी मूर्तिकी तरह खड़ी रह गयी। वह मंत्र-मुग्ध होकर देखती रही।

'वाह! वाह! कितना आपूर्व रूप है?' खम्बकी बात सुनकर चिंखुबने फिर पूछा 'बत्स! तुम कहाँ रहते हो? तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे माँ बाप अभितक जिन्दा हैं? माता-पिताके नाम क्या है? तुम्हारे परिवारमें कितने भाई और बहन हैं? क्या तुम बड़े खानदानके लड़के हो?

खम्बने उत्तर दिया 'मैं केगे मोइरांगका निवासी हूँ। मेरा नाम खम्ब है, बचपनसे ही मेरे माता-पिता स्वर्गवास हो गए। उनके नाम मुझे मालूम नहीं। सिर्फ मेरी एक बड़ी बहन है।"

'केगे मोइरांगमें कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझको न जानते हो? क्या तुम मुझे नहीं पहचानते? चिखुबने पूछा।

चिंखुबका प्रश्न सुनकर खम्बने उत्तर दिया 'आपका कहना सोलह आने ठीक होगा। मैं अनाथ हू, इस हेतु यहाँ रहनेका मुझे बहुत कम मौका मिला। कई मासतक निर्जन स्थानमें छिपा रहा। मोइरांग चेंगै पातके सीमान्तमें एक-पर्ण कुटिरमें अपनी

बहनके साथ रहता हूँ। आज तो पेटको समस्या हल करनेको बाहर आना पड़ा।'

खम्बकी असहायताको बातोंने चिंखुबके हृदयमें तीक्ष्ण-बाणकी भांति प्रहार किया। खम्बकी दीन दशा देखकर वे अधीर हो गए! खम्बकी ओर दया दृष्टिसे देखकर अपने दिलमें सोचा, 'हाय! मेरे देशमें अनेक गरीब लोग भूखे मर रहे हैं? इन गरीबोंका पालन-पोषण करना मेरा काम है।' इस तरह सोचनेके बाद चिखुबने थोइबी और सेनुकी ओर देखा और अत्साहित स्वरसे कहा 'अरे! आसन क्यों नहीं बिछाया? अतिथिका स्वागत करना और आसन बिछाना तुम्हारा कर्त्तव्य है, जानती नहीं हो मेरी बेटी!" कुछ देरतक खम्ब यों ही खड़ा रहा।

पिताजीकी ममता भरी बाणी सुनकर थोइबीने मुस्कराकर नौकरानी सेनुको इशारा करते हुए कहा 'मेरी प्यारी सखि! आसन बिछाओ, मुझे सिरमें दर्द है और काम करनेकी शक्ति नहीं। सेनुने भीतरसे एक आसन लाकर रख दिया। चिंखुबने आज्ञा दी 'वत्स! बैठ जाओ, इस घरको अपना ही समझो।' खम्ब उस आसनको जरा खींचकर दायें हाथसे उसको छूकर अपने माथेपर तीनबार लगाता और उसपर बैठ गया। यह राजव्यवहार देखकर चिंखुबको आश्चर्य हुआ और उन्होंने सोचा 'इस लड़केने कितना उचित व्यावहार किया है? उसकी तरह राज भक्ति मैंने कहीं भी नहीं देखी। यह अनाथ युवक है।'

वह कितना सुन्दर है! सामने आसनपर बैठा हुआ है, फिर भी थोइबीकी आँखें नीची हुई। चित्रकी भाँति वह मौन बैठी रही। वह दिवा स्वप्न देख रही थी। उसने अपने हृदय मन्दिरमें इस युवककी मूर्ति स्थापित की। पूजाका श्रीगणेश किया और वह एक कल्पित फूल-माला लेकर उसके गलेमें डालने लगी।

कुछ क्षणतक सब चुपचाप रहे। कुछ देरके बाद मौनभंग करते हुए चिंखुब फिर बोला 'हे वत्स! सुनो! मोइरांगके महाराजके छोटा भाइ चिखुब युवराजको तुम जानते हो? वह इस तहसीलका प्रभावशाली व्यक्ति है।'

'जी हाँ, मैंने सुना तो है, लेकिन पहचाना नहीं।' खम्बने उत्तर दिया। 'और उसकी थोइबी नामक एक कुरूप बेटी भी है यह भी तुमने सुना होगा?' चिंखुबने कहा। जी हाँ मैंने सुना है, पर कुरूप लड़कीके रूपमें नहीं बल्कि सर्वश्रेष्ट सुन्दरीके रूपमें।' इस तरह खम्बने जवाब दिया। उसके बाद खम्बने फिर थोइबीकी ओर देखा तो कुछ सन्देह हुआ खम्बके कमल नयनसे निकले हुए तीक्ष्ण बाण थोइबीके हृदयमें चुभ गया। आकाशमें उड़ती हुई चिड़ियोंकी भाँति राजकुमारी थोइबी खम्बके काम बाणसे चोट खाकर भूमिपर गिर पड़ी।

खम्बने भी सिर झुका लिया। इस समय चिंखुब युवराज नम्र स्वरसे बोला 'हे वत्स! देखो, युवराज चिंखुब मैं ही हूँ। मेरे साथ बैठी हुई यह कुरूप लड़की ही थोइबी है।

यह बात सुनते ही गरीब युवककी आँखोंसे मोतिकी तरह आँसू बहने लगे और वह तीनोंकी ओर देखने लगा। उसको अपनी बहनकी आज्ञा याद आयी और उसने गलेमें वस्त्र बांध कर चिंखुब युवराजके चरण छूकर दण्डवत प्रणाम किया भय-भीत स्वरसे कहने लगा 'मेरा अपराध क्षमा कीजिए।'

खम्बकी यह दशा देखकर चिंखुब युवराजने दुख प्रकट करते हुए कहा 'क्या अपराध अज्ञानताके लिये क्या दोष!' यह कहते हुए युवराजने खम्बको उठा लिया और कहा 'फिक्र न करो वत्स! बैठ जाओ।' यह शान्त्वना देते हुए फिर थोइबीको हुक्म दिया 'मेरी बेटी क्यों बैठ रही हो? उठो पहननेके लिये एक सुन्दर धोती और एक अच्छी चादर ले आओ, इस युवकके लिए।

अपने पिताके यह वाणी सुनकर थोइबी प्रफुल्लित हो उठी और मुस्कराकर बोली 'इस युवकको मेरी तरफसे वस्त्र प्रदान करनेकी आज्ञा दीजिए।'

उसकी बातको युवराजने स्वीकार किया। थोइबी घरके अंदर चली गयी और एक सुन्दर कपड़ा बाहर ले आयी। एक स्वर्ण पात्रमें रखकर खम्बके निकट आई और प्रणाम करके उसने कपड़ा भेंट स्वरूप दिया। खम्बने धड़कते दिलसे उस स्वर्ण पात्रको उठाकर चिंखुब युवराजके चरणोंपर रख दिया। इस घटनाको देखकर चिंखुबने चकित होकर कहा 'युवक! तुमने

इस वस्त्र मेरे पेरोंके पास क्यों रखा है ?' यह सुनकर खम्ब नम्रता पूर्वक उत्तर दिया 'यह वस्त्र आपके चरणोंपर रखनेका कारण यह है कि आपके पहनने हुए पुराने वस्त्र मैं प्राप्त करना चाहता हूँ।'

खम्बका राजव्यवहार देखकर चिंखुबने उसके सिरपर हाथ रखकर मंगलाशीर्वाद दिया. तथास्तु ! यह वस्त्र प्रसन्तासे ग्रहन करो। खुशो खुशी तुम यहाँ रहो। मेरे भवनमें तुम्हारे ठहरनेका प्रबंध हो गया है। भोजन कर लो ! तुम खुद भोजन पकाओगे या मेरी बेटी थोइबाको पकाने दूँ।

पिताकी आज्ञा सुनकर राजकुमारो थोइबीके मनमें तरह तरहकी भावनाएँ उठने लगीं। 'यदि यह युवक मुझे पकानेके लिए कहे तो मैं अपना जोवन सार्थक समझूँगी।'

यह सोचकर थंजिंगकी आराधना करने लगी, पर दुर्भाग्य है ! खम्बने ठहरनेसे इनकार कर दिया और बोला युवराज ! कृपा करके मुझे एक काम दीजिए, नहीं तो मुझे उपवास रहना पड़ेगा। अपनी मेहनतकी कमाईसे बहनका पालन पोषण करना चाहता हूँ।'

चिखुबने हँसकर कृपा द्रृष्टिसे देखते हुए कहा 'तुम्हारी आशा पूर्ण हो। पहले कमसे कम कपड़ा तो पहन लो, इसके बाद तुमको काम देदूँगा।'

घरकी कोठरीसे नया आभूषण बदलकर खम्ब बाहर निकल आया और युवराजके समीप खड़ा हो गया। इस मूर्तिको देखते हो तीनों मंत्र मुग्धसे हो गया। मानो सूर्य उदयगिरिसे

निकला हो और नोंमाइजिंग पर्वतके स्वामी पांगनबा यहाँ आकर मौजूद हो। उसकी आकृति देखनेमें अद्भुत थी। उसके स्वरूपको देखकर ऐसा लगता है कि "वह मोइरांग प्रदेशको इसी क्षण लोक्ताक झीलमें डूबा सकेगा।"

थोड़ी देरतक निस्तब्धता छायी रही। कुछ देर सोचनेके बाद मौनको भंगकरके चिखुबने कहा ध्यानसे सुनो बेटा! गाय चरानेका काम अब तुम्हें दिया जाना है। सबसे बड़ा बलवान 'पुरुम' नामक एक बैल है. यह बैल सबसे अधिक मजबूत है। वह जंगली बैल जैसा है। उसे छोड़कर दूसरे जानवर जैसे बैलों और गायोंको चराओ।"

युवराजकी आज्ञा मानकर बड़ी प्रसन्ततासे खम्ब गोशालाकी ओर चल पड़ा। थोइबीको खम्बके स्वभावमें परिवर्तन देखकर आश्चर्य चकित हो गई। खम्बके जानेके बाद थोइबीने मन ही मन उसको धन्यवाद दिया

बचपनसे खम्ब निडर था, वह प्रतापशाली था निश्चिन्त होकर एकाएक खम्ब गोशालामें आ पहुंचे। पुरुम नामक बैलके सिवा सब बैल और गायोंको हाँकने लगा। सब बैल और गाय मैदानकी ओर चल पड़े, केवल पुरुम गोशालामें बाँध दिया गया। गायें और बैलोंके झुंडके झुंड चले जानेके बाद पुरुम गोशालाके अन्दर फूंक मारने लगा, मानो ललकारा रहे हो। ऐसा प्रतीत होता है कि शृंग दिखाकर खम्बको सिंहके समान छातीको छेदकर मार डालना चाह रहा है।

इस घमंडको देखकर खम्बसे रहा नहीं गया। उसने सहसा दो बाहुएँ फैलाकर बैलको दो शृङ्गको जोरसे पकड़ लिया और गोशालाके बाड़ेमें डबा दिया। इस समय यह मजबूत बल लाचार हो गया और उसके पास दूसरा उपाय भी नहीं था। आखिर यह बैल खम्बसे दबकर एक बछड़ा-सा हो गया।

इस तमाशाको युवराज थोइबी और सेनु तीनोंने देखा इस तरहके असम्भव दृश्य उन्होंने कभी नहीं देखा। वे सब आश्चर्यान्वित होकर देखते रह गए।

कुछ क्षणके बाद खम्ब बैलके साथ मैदानकी ओर चल पड़ा। एक मजबूत और खुंखार बैलको वशमें आते देखकर सबलोग अपना अपना काम छोड़कर चारों ओर भागने लगे। कोई खेतमें, कोई रास्तेमें और कोई झाड़ीमें छीप गए। कितना भयंकर बैल है. उसका स्वरूप देखते ही वृषभका स्वरूप सबके सामने दिखाई सा दिया। कितना मनोरम दृश्य था। यह स्थान निर्जन था। खम्ब और बैलके सिवा कोई नहीं था।

सब लोग हैरान हो गए। वह दिन सब लोगोंके लिए निराला खेल हो गया। मनुष्यों का ही नहीं अन्य गाय, बैल भी भयके मारे अपने प्राण बचानेके लिए भागने लगे। पहलवान खम्ब निःसन्देह होकर एक छोटेसे पुलपर बैठा रहा। इस दृश्यको देखकर सबलोग घबराने लगे।

कुछ लोगोंने छप्परपर बैठकर इस घटनाको आश्चर्यसे देखा और दूरसे खमनुने भी इसे देखा। एक परिपूर्ण और सुदौल

युवक एक छोटेसे पुलपर बैठकर एक भयंकर बैलको चरा रहा है। उसने सोचा कि यह युवक मेरा भाई खम्ब ही होगा, पर उसकी पोषाकको देखते ही उसके मनमें संदेह हो गया। किन्तु देखते देखते वह इस युवकके पास आ पहुंची। यह युवक कोई और नहीं था, खम्ब ही था खमनुने गदगद कंठसे कहा "भाई क्या कर रहे हो ? इस पागल बैलको तुम क्यों चराते हो ?"

बहिनके करुणाभरो स्वरको सुनकर खम्बने शान्तभावसे उत्तर दिया 'घबराओ मत बहन! मैंने उसको अपने काबूमें रखा है।' बहनने फिर कहा— यह सामान्य बैल नहीं है। अभी उसको पकड़कर न रखा तो सर्वनाश हो जायगा। उसके छूटते ही सबलोग दुखके सागरमें डूब जाएंगे। अपनी प्यारी बहिनकी बात सुनकर खम्बने मुस्कराकर कहा मेरी प्यारी बहन! चिंता मत करो। घर जाकर आराम करो। मैं भी जल्दी आ रहा हूँ।' अपने भाईकी बात मान कर वह घर चली गई।

इस समय महाराजने एक सन्देश युवराजके पास भेजा 'पुरुम जल्दसे जल्द पकड़ जाय।' इस राज-आज्ञाके अनुसार चिंखुब युवराज स्वयं एक घोड़ेपर सवार होकर उस ओर चले जहाँ खम्ब बैल चरा रहा था। उन्होंने पुकारकर खम्बसे कहा 'अरे तोम्पोक! राजाकी आज्ञा है कि अभी उस शक्तिशाली बैलको पकड़ लिया जाय।' युवराजकी आज्ञा पाकर भी खम्बने तुरन्त इस बैलको नहीं पकड़ा। वह लोगोंके सामने कुछ तमाशा दिखाना चाहता था। इसलिए वह थोड़े देर योंही बैठा रहा।

एक एक कर वहाँ बहुत आदमी जमा हो गए। इस समय खम्ब उठ गया। वह बैल पकड़नेके लिए मैदानकी ओर बढ़ा। लोगोंकी दृष्टि खम्ब पर थी। पांडु नन्दन भीमकी भाँति खम्बने लोगोंको सम्बोधन करके कहा 'आप लोगोंके आशीर्वाद हो तो यह बैल आसानीसे पकड़ सकूँगा। यह कहकर खम्ब बैलके पास आ पहुँचा। इतनेमें वह उन्मत्त बैल भी खम्बसे लड़नेके लिये झटपट उछल पड़ा। खम्बने फौरन उसके दोनों शृङ्ग पकड़ लिए कुछ देरतक दोनोंमे भयंकर युद्ध होता रहा मानो दो सिंह दहाड़ रहे हों।

अंतमें खम्बने महान शक्तिशाली बैलको पकड़ लिया। इस दृश्यको देखकर सबलोग आश्चर्य चकित हुए। खम्बने उस बैलको पकड़कर गलेमें रस्सा बाँध दी। उसके बाद गोशालाकी तरफ खींच ले गया। भीड़ तितर-बितर हो गया। दो पहरका समय था। खम्बके बलको देखकर राजकुमारीने अपनेको धन्य समझा। सबलोग रास्तेमें परस्पर बात-चीत करके जा रहे थे। 'यह युवराजका सेवक बहुत प्रचण्ड और प्रतापी वीर है' आजसे उसको 'तोम्पोक' (अद्वितीय) की पदवी दी गई।

'खम्बका अज्ञात वास'

खम्ब, युवराज, थोइबी और सेनु सब युवराजके भवनमें लौट आए। वे अपने अपने योग्य आसनपर बैठ गए। इस समय युवराजने खम्बसे कहा 'वत्स! भोजन कर लो, आज तो मेरे भवनमें ठहरो, कल तुमको पारितोषिक दिया जायगा।'

युवराजकी बात सुनकर खम्बने विनम्र स्वरमें प्रार्थना की आर्य! आज मुझे अपना पर्ण कुटीमें जानेकी आज्ञा दीजिए।'

युवराजने उसकी बात मान ली। युवराज थोइबी और सेनु तीनोंने बड़ी कुशलतासे गुप्त परामर्श करनेके पश्चात प्रांगणमें * पुरुम फिबोंग बिछवाया। जिसमें नाना प्रकारकी खाने-पीनेकी चीजें, अर्थात शराब दो तीन मन चावल, दाल, नमक और मरीच आदि रखे हुए हैं। इसके बाद तीन धोतियाँ भी खम्बको प्रदान की गई।

इस गठरीको उठाकर, खम्ब युवराजको प्रणाम करके अपने घरकी ओर चला गया। राजपथमें नोंगबान और उसके विश्वासी चरवाहोंसे खम्बकी मुलाकात हुई। खम्बको देखते ही नोंगबानने इशारा करते हुए कहा ईस लड़केने आज पुरुम बैलको पकड़ लिया है, वह मोइरांगका निवासी है।'

खम्बको रोकनेके लिए एक दासको भेजा। वहाँ उसको रोक दिया गया। नोंगयाइ खम्बने कहा "क्यों मुझको रोक लिया

---

* पुरुम फिबोंग—एक प्रकारका मोटा-सा कपड़ा।

है, आपको क्या चाहिए?" "अरे मोइरांग बेटा! तुम कौन हो, कहाँ रहते हो?" नोंगबानने पूछा।

नोंगबानके कटू वचन सुनते ही खम्बने कड़े शब्दोंमें उत्तर दिया। 'तुम मेरा पता क्यों पूछते हो? मैं उत्तर तरफके मुहल्लेमें रहता हूँ।' यह जवाब सुनेके बाद उत्तर तरफके मुहल्लेके चर-वाह खुश हुए 'नोंगबानको खम्ब पराजित कर सकता है।'

"क्या बात है, यह असभ्यकी बात है?" नोंगबान फिर कहने लगा। 'क्यों असभ्यकी बात! यही तो तुम्हारी बातका उत्तर था।"

'वाह! वाह! मुझसे मुकाबला करना चाहें तो तैयार हो जाओ।" नोंगबानने कहा। नोंगबानके घमंडको देखकर प्रतापशाली खम्बने अपनी गठरी जमीनपर रख दी और वस्त्रादि संभाकर मल्ल-युद्धके लिए तैयार हो गया। इसको देखकर उत्तर तरफके मुहल्लेके लोग खम्बके पक्षमें हो गए। आपसमें पक्ष-विपक्ष हो गए। खम्ब वस्त्र सम्भाल रहा था। उत्तर तरफके मुहल्लेके लोगोंने बुलन्द आवाजसे कहा 'भाई! घबराओ मत, तुम्हारे लिए हम हैं।'

सात वर्षोंतक नोंगबानने सभी पहलवानोंको हराया था। खम्बको देखते ही उत्तर तरफके मुहल्लेके लोग गौरवान्वित हो गए और उन्होंने प्रसन्नतासे कहा 'दक्षिणवाले क्या कर सकते हैं? उठो तुम्हारा गर्व कहाँ? तैयार हो जाओ।'

सबकी ध्वनि सुनकर नोंगबान खम्बकी ओर आगे बढ़े। दोनोंमें घोर मल्ल युद्ध हुआ। एक कहावत हैं कि खग जाने खग ही की भाषा, उसी तरह नोंगबान खम्बका गुण जानता है।

दोनोंको दर्शकोंने घेरा। इस तमाशापर सबकी दृष्टि पड़ी। थोड़ी देरके बाद खम्बने नोंगबानको आसानीसे ऊपर उठाया और फिर दो तीन बार घुमाकर जमीनपर पटक दिया।

उत्तरवालोंने अपनी अपनी चादरें उतारकर खम्बको उपहार स्वरूप दीं। कपड़ा इतना अधिक हो गया मानो कपड़ोंका एक पहाड़ हो गया हो। खम्बको उत्तर तरफके मुहल्लेके लोगोंने *'षणजेल्लोइ हनजब' नाम दिया। उसके बाद खम्ब अपने सामान लेकर घरकी ओर चल पड़ा।

खम्बने घर पहुंचते ही सब विवरण बहनको कह सुनाया। ये बातें सुनते ही खमनु घबरा गई और छाती पर हाथ मारने लगी। कुछ क्षणके बाद उत्तर तरफके मुहल्लेके चरवाह खम्बके घरमें आ-आकर इकठे हुए। सबकी आवाज सुनकर खमनुने मधुर स्वरसे कहा भाइयो! नोंगबानके साथ लड़ना मेरे भाई खम्बकी शक्तिके बाहर है, इसीलिए कृपया यह बात किसीके सामने प्रकट न करें।

एसी व्यवस्था तुमलोगोंको करनी चाहिए। मेरा भाई अनाथ है, वह अभाग्य है: नोंगबान तो बड़े खानदानका पुत्र है।'

*षणजेल्लोइ हनजब—ग्वालोंका सरदार।

बहनका बचन सुनते ही खम्बने फिर कहा 'मेरी बहन ! महेरबानी करके ऐसी बात मत कहिए। मुझे इस तरहकी बातें सुननेकी आदत नहीं। सब खमनुके मनकी बात समझ गए और कहने लगे कोई चिन्ता नहीं तुम्हारे भाईके लिए अनेक सहायक हैं। हम भी तुम्हारे भाईके साथ हैं। जब तक हमारे शरीरमें प्राण हैं तब तक तुम्हारे भाईको धन और बलसे सहायता करेंगे ' उधर नोंगबानने दक्षिणके चरवाहोंके साथ अपने भवनमें प्रवेश किया और सब नौकरोंसे कहा 'आज ही मैंने खम्बको मल्ल युद्धमें पराजित किया है '

नोंगबानकी झूठी बात सुनते ही सबलोग चुप हो गए। नोंगबान कितना वैभवशाली था ? मोइरांगमें द्वितीय राजाकी तरह शक्तिशाली और ऐस्वर्यके आसनपर विराजमान था। वह * आङोम निंथौका पुत्र था। वह स्वयं महाराज्यके मुखिया-सेनुंब नामसे विख्यात था।

दो तीन बार खम्ब अपने साथियोंके साथ युवराजके गोशालामें गए थे आखिर खमनुके रोकनेसे उसको गोशाला जानेकी शक्ति नहीं रही। वह अपनी बहनके अधिकारमें था। बीमार बहना करके घरमें पड़ा रहा। अपने दोस्तोंसे मिलना जुलना बिलकुल बन्द करके खम्बको खमनुने छिपा लिया। खानेके विषयमें असुविधा होते हुए भी वह अपना जीवन सुखसे निर्वाह करती थी।

* आङोम निंथौ—अङोम नामकवंशका राजा।

कहीं खमनु झीलमें जाकर मछली पकड़ती और कहीं पहाड़से लकड़ी काटकर लाती और उसे बाजारमें बेचती। यह जीवन क्रम खम्बसे नहीं देखा गया और अन्तमें वह भी जाकर बड़ी बड़ी लकड़ी काट लाता था। शामको उसकी बहन खमनु बाजारमें बेचा करती थी। ऐसे काम करते करते बहुत दिन बीत गए। किन्तु किसीने खम्बको कभी नहीं देखा। दिनके बाद दिन और महीनोंके बाद महीने गुजर गए।

थोइबीने कई महीने तक खम्बको नहीं देखा। उसके अंतः—करणमें विरह-वेदनाकी अग्नि दहकने लगी। हर समय खम्बकी मलिन पोशाक जो उसने छिपाकर रखी थी, उसे देखकर रोने लगी सेनुकी ओर देखकर कहा 'प्यारी सखि! मैं कहाँ चलूँ मेरे प्राणनाथ आजतक नहीं आए। उन्होंने कहा था 'मैं कल युवराजके भवनमें जरूर आऊँगा।' पर खेद है मैंने अभी तक उसके पूर्णिमाके चाँदसे अधिक सुन्दर बदनको नहीं देखा। मोइरांग निवासियोंके भयसे किसी निर्जन-स्थानमें उनका जीवन गुजर रहा होगा। तुम्हारी सहायतासे उन्हें खोजना पड़ेगा, बताओ क्या क्या उपाय है?"

सेनु करूण स्वरमें कहने लगी। समय बीत चुका है, दूसरा कोई उपाय नहीं।

'मेरे चाचा राजा हैं और पिता भी युवराज हैं तो भी मुझे संतोष नहीं। विधाताने मेरे भाग्यमें क्या लिखा होगा।' ऐसी बात कहती हुई राज-कुमारीके नेत्रोंसे आँसू बहने लगे।



१। एक : इनाओबी सिंह, इम्फाल, आर्ट कालेज।



१। एक : इनाओबी सिंह, इम्फाऊ, आर्ट कालेज। देखिए पृष्ठ १२

"राजकुमारी ! चिन्ता न करो ! यह थांगजिंगकी लीला है। मैं खोजूंगी इस युवकको, थांगजिंग उनकी रक्षा करे"। शान्तवना देती हुई संनुने कहा सेनुकी ओर देखकर थोइबीने करूण स्वरमें कहा 'हे प्यारी सखि ! मैं प्रतिज्ञा कर चुकी हूँ कि उसके सिवा किसी अन्य पुरुषसे मेरा सम्पंक नहीं रहेगा।

ऐसा प्रण राजा और युवराजके कानोंमें पहुँच गया। इतना ही नहीं बल्कि राज्यभरमें भी यह खबर फैल गई। दिनरात राजकुमारी थोइबी खम्बका वंष+ो छातीपर रखकर सिसक सिसककर रोने लगी। उन वस्त्रोंके अलावा उसके पास अपने प्रियतमका कोई चिह्न भी नहीं था। इस तरह बहुत दिन बीत गए।

× × × × × × × × ×

दूसरा परिच्छेद

कांग शान्नब (कांग खेलना)

बड़ी बहिन खमनुने पूरे चार वर्षोंतक खम्बको छिपा रखा। कोई भी उसका पता नहीं बता सका। मृत्युकी भाँति कई दिन थोइबी दुखके सागरमें डुबने लगी पर संयोगसे आज चार वर्षोंके बाद राजकुमारी *'अडन कैथेन' में निकली अपनी सहेली सेनु भी उसके साथ थी। बाजारके एक कोनेमें एक युवती सुखी लकड़ी बेच रही थी। इस रूपवती युवतीको देखते ही थोइबीके दिलमें प्रेमकी भावना उठने लगी और सेनुकी ओर मुँह मोड़कर बोली - 'देखो सेनु! उधर कोनेमें एक सर्व सुन्दरी युवती लकड़ी बेच रही है। उसका परिचय पूछ आओ। सेनु युवतीके पास गयी और उसको सम्बोधित करके धीरेसे पूछा प्यारी सहेली, सुनिए! राजकुमारी थोइबीने आपको याद किया है'।

सेनुका मधुर बचन सुनकर खमनु चौंक गई और वह मन ही मन सोचने लगी कि मुझ जैसी मोइरांगकी गरीब युवतीको राजकुमारी दासी बनायेगी इसलिए मुझे पकड़ना चाहती है। यह सोचकर वह कुछ देरतक मौन रहके सेनुकी ओर देखती रही।

होशियार सेनुने उसकी चिन्ता देखकर कहा 'कोई बात नहीं, फिक्र न करो दण्ड देनेके लिए नहीं बुलाया गया। राजकुमारी

---

* अडन कैथेन—मोइरांग बाजारका दूसरा नाम 'अडन कैथेन' कहते है।

तुमको सखी रूपमें ग्रहन करना चाहती है। सेनुके साथ युवतीने आकर थोइबीको प्रणाम किया। थोइबीने उसको उठाया और कहा 'आजसे तुम मेरी सखी हो, तुम बाजारमें लकड़ी क्यों बेचती हो? तुम्हारा नाम क्या है? कहाँ रहती हो? इन प्रश्नोंका जवाब देकर मेरे सन्देह को दूर करो'।

लकड़ी बेचनेवालीने विनयके साथ कहा 'मेरा नाम 'लाइरवी' है, मैं अनाथिनी हूँ और कंगे चोंगै लैकाइमें रहती हूँ'।

'बस, अच्छीबात है, मेरी सखी बनो'।

'मैं गरीब हूँ राजकुमारीके साथ सखी बनने लायक नहीं हूँ। गुस्ताखी माफ कीजिए'।

कोई बात नहीं, आजसे मैं तुम्हें सहेली कहूँगी और मुझको भी अपनी सहेली समझो।" यह कहकर थोइबीने लकड़ी मांगवाई और उसको अग्निमें स्वाहा कर दी। अन्तमें राजकुमारीने हाथ जोड़कर अग्निकी पूजा की और कहा "हे अग्नि देव! इस गरीबिनको आजसे लकड़ी बेचना बन्द कर दे।" पूजा समाप्त होनेके बाद थोइबीने मुट्ठी भर स्वर्ण मुद्राएं 'सेनगाओसे' (पर्श) निकालकर इस आनाथिनीको दिया।

उस युवतीने पहिले-पहल उसे लेना अस्वीकार किया और नम्र होकर कहा 'यह बहुत अधिक है, लेनेमें मैं असमर्थ हूँ। 'अभी मैंने तुमको दिया ही क्या है? यह तो कुछ भी नहीं मेरी कुछ और भी देनेकी इच्छा है। आगे चलकर तुम्हें मेरे दलमें कांग खेलना होगा। तुम मेरी सखी हो। मैं अपनी

सखोको दुःखी नहीं रहने दूगी। तुम्हारा लालन-पालनका भार आजसे मेरे ऊपर है, इसलिए मेरे साथ चलो।"

"अपराध क्षमा कीजिये, राज महलमें प्रवेश न कर सकूँगी। मेरी पोशाक मलिन है, राज व्यवहार भी मैं नहीं जानती। क्या मुँह लेकर मैं राजमहलमें आऊँगी।"

युवतीको एक मेखला और एक सुन्दर चादर देकर थोइबी और सेनु दोनों उसका हाथ पकड़कर भवनकी ओर चली गईं। महल पहुँचते ही थोइबीने युवराजसे सारी कहानी कर सुनायी और कहा 'पिता जी आजसे आपकी दो कन्याएं हैं।'

इस लकड़ी को देखकर युवराज वत्सल्य प्रेमसे मुग्ध हो गए और खमनुको आपनी बेटी थोइबी की तरह समझने लगे।

शामका समय था, तीनों युवतियोंने स्नान करके खाने पीनेका काम भी समाप्त कर लिया। इस समय थोइबीने नाना प्रकारकी छोटी छोटी धोतियाँ लेकर इस युवतीके सामने रखीं और कहा 'प्रिय सखि! ये धोतियाँ जितनी चाहे उतनी ले लो।'

युवतीने कहा 'मेरा एक छोटा सा भाई है, उसके लिये एक धोती ....'

थोइबीने एक छोटी से धोती लेकर दिखायी।

'नहीं राज कुमारी, यह धोती बहुत छोटी है।'

दूसरी धोती फिर दिखाकर बोली।

'मेरी प्यारी सहेली, क्या यह धोती लोगी?

"नहीं राजकुमारी।"

आखिर थोइबीने सबसे लम्बी चौड़ी धोती दिखाकर कहा – "मेरी सहेली यह धोती .... ।"

"जी हाँ ठीक है।"

धोती और सब सामान लेकर सेनु इस युवतीके साथ चली।

युवतीके जाते समय थोइबीने कहा—"मेरी प्यारी सखि! कलतो कांग खेलना है, इसलिए कल अँधेरे मुंह मेरे यहाँ आ जाना, भुलना मत। थोइबीकी आज्ञा पाते ही खमनु सेनु-सहित अपने घरकी ओर चली। दोनों खमनुके घर पहुँच गईं। इस समय खम्ब आंगनपर बैठा हुआ था। खम्बको देखते ही सेनुने आश्चर्य होकर सोचा "वह कौन है? देखनेमें पहलवान मालूम होता है और शरीर तो बहुत हृष्ट-पुष्ट है।"

अपनी बड़ी बहनको एक अन्य लकड़ीके साथ आते देखकर खम्ब घरके भीतर जाकर छिप गया। सेनुने सामान खमनुके आंगनपर रखा। खमनुसे बिदाई लेकर सेनु थोइबीके महलमें लौट आयी। उसने थोइबीके पास जाकर कहा "खमनुका घर बहुत बड़ा है, यह पुराना और टूटा-फूटा है। उसके आंगनपर एक सुन्दर तथा हृष्ट-पुष्ट युवक बैठा हुआ था। सहसा मुझको देखते ही वह घरके अन्दर घुस गया।"

थोइबीने कहा 'वह कौन हैं? तुमने नहीं पूछा?' सेनुने जवाब दिया 'मैं उस परिवारके बारेमें कुछ नहीं जानती। सामान रखकर मैं तो तुरन्त लौट आयी।'

थोइबाके मनमे सन्देह हुआ। अपने पिताजीके पास कल कांग खेलनेकी राजाज्ञा लेनेकेलिए आई और बोली 'पिताजी मैं कांग खेलना चाहती हूं, इसलिए * निङ्थोन-लाकपाके † कांग शंगकेलिए व्यवस्था कीजिए।

राजकुमारीके इच्छानुसार युवराजने मुखियाको आज्ञा दी। 'कल मेरी बेटा थोइबी कांग खेलना चाहती है, इसलिए केगे लैकाई भरमें घोषणा करो।' राजाज्ञा पाते ही केगे लैकाईके सब लोग दूसरे दिन निङ्थोन-लाकपके कांगशंगमे आ पहुँचे।

जिस तरह राजकुमारी थोइबी अवांग लैकाईकी प्रमुख है उसी तरह नोंगबनकी छोटी बहन तोरो 'मला लैकाईकी प्रमुख है। तोरो रूपवती होने पर भी उसके केश मेखके बालकी तरह है, ज्यों ज्यों उसकी उम्र बढ़ती गई त्यों त्यों उसके बाल बांके होते जाते। इस कारणसे उसका नाम तोरो पड़ा है। उसका बदन बहुत सुन्दर था। केवल केशके हेतु वह कुरूप मानी जाने लगी।

एकाएक निङ्थोन लाकपके कांगशंगमे सब लोग जमा हो गए। कांगका खेल आरंभ हुआ। खम्बके सामने खमनु भी नया आभूषण पहनने लगी। खमनुने आदेश देकर कहा "देखो भाई! आज मैं राजकुमारीके इच्छानुसार कांग खेलने जा रही हु। जब तक मैं वही लौटूंगा तब तक तुम कही बाहर न जाना।"

---

* निङ्थोन लाकपा—एक प्रकारका पदवी (कन्यारक्षनेवाले)

† कांग शंग कांग खेलनेका घर।

बहनका वचन सुनकर खम्बने कहा 'मैं कहाँठहरूँ ? खमनुने सलाह दी 'तुम गरीब लड़के हो! पहननेके लिए सुयोग्य पोशाक नहीं।

'चिंता न करो, बहिनकी आज्ञा पालन करना मैं अपना फर्ज समझता हूँ। जाओ, कांग अच्छी तरह खेलो, थांगजिंग तुमको कृपा करें।'

खमनु खम्बको समझा-बुझाकर कांगशंगकी ओर चली गई। खमनुके चले जानेके बाद खम्बने सोचा कि 'पहले उसकी बहनका कांग खेलना उसने कभी नहीं देखा। इस कारणसे अपनी बहिनको कांग खेलते हुए वह देखना चाहता है। यह सोचकर खम्ब भी अपने मलिन वस्त्र पहनकर कांगशंगमें जा पहुँचा और एक कोनेमें आदमियोंके बीचमें बैठ गया कांग खेलना शुरू हो गया। खम्बको देखते ही थोइबी दंग रह गई और सेनुकी ओर उसने इशारा किया।

खम्ब थोइबीके चेहरेको देखना चाहता था, तो भी अपनी बहिनके सामने उसकी शक्ति न रही। इसलिए वह चुप-चाप बैठा रहा। जब उदय पर्वतसे सूर्यदेवका प्रकाश फैलता है तब संसारमें अन्धकार कहाँ रहा जाता है? उसी तरह चार वर्षों तक अज्ञात रहनेवाले खम्बका चेहरा देखते ही थोइबीके हृदयका अन्धेरा दूर हो गया। स्वप्नकी तरह हठात निकलनेवाले नोंग-याईके बदनको जी भर देखने लगा। उसके मनमें तरह तरहकी भावनाएँ जाग उठीं। सामने फैली हुई जमीनको सागर जैसा

दिखाई पड़ा। सिर चकराने लगा और सारा शरीर पसीनेसे तर होगया। पसीना पोंछकर, सुन्दरी थोइबीने कांग उठाकर निशाना साधा और फेंका। उसके बाद सेनुकी तरफ संकेत करते हुए कहा 'ठीक है न?" इस दो अर्थवाले प्रश्नको सेनु समझ गई। मृग नयना थोइबीकी आँखें कभी खम्बको और कभी खमनुको देखने लगी।

क्षण भर खमनु खड़ी न रह सकी। वह घबराई, मन ही मन सोचने लगी 'कितना नादान बालक है, क्यों यहाँ आया है?' उसका होंठ पीला पड़ गया।

खम्बके कांगशंगमें रहनेसे खमनुकी निशानी चूक गई। थोइबीने कहा 'क्या करती हो सहेली! पराजय होनेसे क्या फायदा? लज्जित होकर खमनु पलभर मौन रही और उसने शांत भावसे उत्तर दिया। राजकुमारी मेरे सिरमें दर्द हो रहा है।' थोइबी फिर बोली मैं मन्त्र फूँकूँ' यह कहकर खमनुकी कानोंमें धीमें स्वरमें कहने लगी, कल्याण हो सेहेली-स्वाहा!' सभी हँसने लगीं, स्वयं खमनु खिल-खिलाकर हँस पड़ी। इसके बाद दोनों दल विजय पानेकी इच्छासे मन लगाकर खेलने लगे। खेल फिर शुरू हो गया

इतनेमें थोइबी हवा खोरीके लिए बाहर निकली और थांग-जिंग देवताको मन ही मन नमस्कार करके वर माँगने लगी। 'इबुधौ! कृपया मेरा कांग खम्बकी गोदमें गिरने दे। फेंकते समय कोई भी आदमी देख न सके। यह वरदान मुझे दीजिए।

वह मांगकर थोइबीने कांगशंगमें फिर प्रवेश किया और कांग खम्बकी ओर फेंका।

सौभाग्यसे यह कांग खम्बकी गोदमें गिर पड़ा, थांगजिंगकी कृपासे कोई भी देख न सका। दूसरी तरफ राजकुमारी थोइबी अपने कांगकी तलाश करने लगी और आस पासके लोगोंसे पूछने लगी। 'मेरा कांग किसने छिपा लिया है? मुझे अपना कांग दे दो। मैं पुनः खेलना चाहती हूं।'

इस घटनाको देखकर सब दर्शक हैरान हो गए। आपसमें कांग खोजने लगे। इस समय थोइबीने निङोन लाकपको खबर दी। राज कन्याके हुक्मके अनुसार निङोनलाकपाने घोषणा की 'सुनिये खिलाड़ियो और दर्शकगण! राजकुमारीका 'सना कांग' अभी अभी खो गया है, जिसने छिपा रखा है, वह कांग निकालकर राज कुमारीको दे, नहीं तो दण्ड दिया जायगा। इसलिए बिना गोलमाल किये निकालो, नहीं तो सभी को अपना अपना वस्त्र झाड़ना पड़ेगा।

महाबल खम्बके सिवा सभी निङोनलाकपकी घोषणा सुनकर अपने अपने वस्त्र झाड़ झाड़कर देखने लगे। स्वयं निङोल लाकपा सभाके मध्यमें प्रवेश करके कांग खोजने लगा तथा खम्बको देखते ही वह चौंक उठा। इस समय खम्ब गंभीर होकर बैठा हुआ था और सिंहके समान उसने गरजते हुए कहा 'क्यों मुझे तंग करते हो? कपड़े झाड़नेको क्या जरूरत है?'

यह अपमानकी बात है, मैं नहीं झाड़ूँगा। खम्बका निर्णय वचन सुनकर राजकुमारी थोइबीने निंङोन लाकपाकी ओर देखकर कहा 'निंङोन लाकपा! मेरा कांग खो जाने दो, उसकी कोई चिंता नहीं। यह व्यवहार सज्जनोंके प्रति उचित नहीं।'

राज कुमारीकी आज्ञा पाते ही, निंङोन लाकपा अपने आसन पर आ बैठा। थोड़े देरमें कांगका खेल समाप्त हो गया। इतनेमें खम्ब उठने लगा। यकायक वह कांग उसकी गोदमेंसे भूमि पर गिर पड़ा। इसको देखकर खम्बको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने डरकर कहा 'किसने इस कांगको मुझपर फेंका है? आश्चर्यकी बात है।" यह कहकर खम्बने यह कांग कुछ दूरीपर फेंक दिया।

इस समय राजकुमारीने संकेत करते हुए कहा 'वह कांग मैंने भेंट स्वरूप दिया है।'

राजकुमारीका इशारा समझकर खम्बने उस कांगको पुनः उठा लिया। कांग खतम होनेके बाद थोइबीने सभामें घोषणा की "सुनो भाइयो और बहिनो! कल पुरुषोंको छोड़कर सब नारियाँ लोक्ताक झीलमें मछली पकड़ने जायेंगी; और मछली पकड़नेके पश्चात हमें एकत्रित होकर भोज। करना पड़ेगा। इस-लिये सब स्त्रियाँ कल सबेरे मुंह अन्धेरे राज महलमें आनेकी कोशिश करें, यदि कोई गैरहाजीर हो तो महाराजका कठोर दण्ड मिलेगा।"

सब लोग अपने अपने घर चले गए। थोइबोने सब हाल अपने पिता युवराजको सुनाया। एक क्षणके बाद महाराजसे इज्जाजत लेकर एक पदाधिकारी घुड़ सवार ने राज्य भरमें जाकर हुक्म सुनाया।

"सुनो सुनो ग्रामवासियो! कल राजकुमारी थोइबो अपनी सहेलियोंके साथ लोक्ताक झालमें मछली पकड़ने जाएँगी। इसलिए कोई पुरुष लोक्ताकमें नहीं जा सकेगा। किसीने राजाज्ञाका उल्लङ्घन किया तो राज दण्ड मिलेगा। यदि किसीने आज्ञाका उल्लङ्घन किया तो वह सुगुनु वस्तामें निर्वासित किया जायगा। इतना ही नहीं लोक्ताक झालमें कपड़ोंके थैलोंमें रखकर उसको डुबा दिया जायगा और वह मछलियोंका आहार हो जायगा इसलिए नगरवासियो! सावधान हो जाओ

राजाज्ञा पाकर दूसरे दिन कोई भी पुरुष लोक्ताक नहीं गया और लोक्ताकमें रहनेवाले भी अपने अपने घरमें लौटकर छिप गए।

× × × × × × × × ×

इन चिंगबा

(जालसे मछली पकड़ना)

सवेरा हो गया, मोइरांगकी सभी छोरियाँ मछली पकड़नेकी तैयारीमें थीं। राजकुमारी भी जानेके प्रस्तुत हुई। सभी अपने अपने भोजन कर चुकी हैं। केंग मोइरांगके नाव-घाटमें सभी आ पहुँची।

दूसरी ओर खमनुने जानेसे पहले छोटे भाइको बहुत समझाया-बुझाया और कहा भैया! जब तक मैं लोक्ताकसे नहीं लौटूंगी तब तक तुम इस घरसे बाहर नहीं निकल जाना। यदि भूख लगेगा तो छींकेपर मछली रखी हुई है। नाश्ता कर लेना। यह आदेश देकर खमनु नाव घाटमें गई।

सब नारियाँ एक एक करके नावमें चढ़कर सेन्द्रा झीलकी ओर चल पड़ीं। इथिंग पहाड़ीके पास आ पहुंचीं। ङारम कोनजिन थमंगखांगकी नदीमें थादोइ थोइबीके मछली पकड़नेका स्थान है। यह सबसे पश्चिमकी ओर था। सबके तो पुर्वी दिशामें थे। थोइबीका स्थान सबसे अलग था। रंग-विरंगे गहने पहने हुए ये छोरियाँ देखनेमें अति सुन्दर हैं; मानो सरोवरमें नाना प्रकारके कमल खिल रहे हों।

लोक्ताक झील दर्पणकी भाँति चारों ओर फैली हुई थी। विविध प्रकारकी चिरियाँ आसमान पर उड़ रही थीं। सब नारियाँ

अपने अपने जाल ठीक करके पंक्तिबद्ध खड़ी थीं। देखनेमें अति मनोहर है। कहीं कहीं झीलके हर तरहके पक्षी भी सुविस्तृत जलकी लहरोंमें नाच रहे थे। बागुलोंके समूहके समूह आकाश पर उड़ रहे थे।

दो पहरका समय था, खम्बको भूख लगी और उसकी बहनकी बात याद आयी और भोजन करनेके लिए चौकेमें घुस गया। वहाँ मछली न मिलनेके कारण बहिनके पास जानेका निश्चय कर लिया और सोचने लगा 'राजकुमारी थोइबीके पास सब युवतियाँ लोक्ताक झीलमें जालसे मछली पकड़ती होंगी। उस दृश्यको देखूँ तो बहुत आनन्द मिलेगा' उस दृश्यका अनुभव करते हुए खम्ब थमंगखोंगकी ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचते ही सौभाग्यसे एक खाली नाव घाटमें बधी मिली। यह नाव पुरेन्बकी है; कई दिनोंतक लोक्ताक झीलमें डुबी रही

इसी नावमें चढ़कर, खम्ब थमंगखोंगके पश्चिमकी ओर नाव खेने लगा। जिस तरह पानीमें मछली तैरती है उसी तरह उसकी नाव पानीमें चलने लगी।

झीलके मध्यमें नौका पहुँचते ही अकस्मात कहींसे तुफान आया। नाव डोलने लगी। सहसा यह नाव एक पर्ण कुटीरमें जा पहुँची। यह कुटीर थोइबीके ठीक सामने थी। वहाँ खम्बको नावका रास्ता नहीं सूझा। इसलिए वह इधर-उधर नाव खेने लगा, पर दैवयोगसे एक नाव चले जानेका चिह्न उसको मिला। इस निशानके द्वारा वह नाव खेने लगा। दूसरी ओरसे थोइबीने

खम्बको देखा। खम्ब दूसरी ओर नाव ले जाना चाहता था पर सबंव्यर्थ।

नाव सहमा थोइबीके इरूमें (जालमें) फंस गई। थोइबीके जालकी छड़ी टूट गई। इस घटनाको देखकर राजकुमारी थोइ-बीने गम्भीर स्वरमें कहा 'अरे! अरे!! जालमें............"

खम्ब अपनासा मुंहलेकर खड़ा रहा और मौनको तोड़कर कहा 'कोई उपाय न था?' इस समय उसकी नाव किनारे पर जोरसे धक्का लग गई

थोइबीने आज्ञा दी 'सेनु इस नावको रोको, यह बड़ी झील है खेनेके लिए बहुत जगह हैं। वह घमण्डी युवक है।' सेनुने खम्बकी नाव पकड़ ली।

खम्बने विनीत स्वरमें कहा 'मेरा अपराध क्षमा कीजिए।'

थोइबीने कहा 'तुमने सुना होगा कि मैं युवराजकी कन्या हूं।'

मैंने सुना है, लेकिन पहचाना नहीं।' खम्बने उत्तर दिया।

'आज किसी भी पुरुषको लोक्ताक झीलमें जाना मना कर दिया है। यदि कोई आए तो उसे राजदण्ड मिलेगा। यही राजाज्ञा है शायद तुमने भी सुना होगा?'

'मैंने नहीं सुना।'

'क्यों?'

'गरीबोंको पापी पेटके लिए इधर-उधर जाना ही पड़ता है।'

'अभी तुम जालके लिए क्या करोगे?'

'मैं जरूर उसको ठीक करूँगा।'

थोइबीने सेनुसे कहा 'सेनु इस युवकको गिरफ्तार कर लो।' सेनुने खम्बको गिरफतार लिया। खम्बको देखते ही खमनु घबराई और खम्बको सम्बोधन करके उसने कहा 'तुम किसके लिए यहाँ आये हो? राजाज्ञा तुमने सुनी या नहीं?' यह कहकर खमनु सोचने लगी "अब क्या होगा"

एकाएक खमनुको देखते ही खम्बको आश्चर्य हुआ और बहनका आदेश याद आ गया। थोइबी खमनुसे कहने लगी 'सखि! क्या उपाय है? आज तो एक भी मछली नहीं पकड़ पायी। इतना ही नहीं मेरा हंगेल (छड़ी) भी तोड़ दी है। यहाँ मेरा मन नहीं लगता, इसलिए मुझे घर जाना चाहिए। मछली पकड़नेका काम तुम्हें सौंप देती हूँ। सेनुकी तरफ देखकर कहा "सेनु हगेल बनवाओ. नहीं तो दूसरा उपाय क्या है?"

कुछ दिन पहले राजकुमारी थोइबीने एक सुन्दर चादर और एक मोतियोंका हार खमनुको भेंट किया था। जो आज थोइबीको स्मरण आया। यह बात सेनुको सुनायी। आज मेरे दिये कपड़े पहनकर खम्ब आया है। उसी ओर राजकुमारीने संकेत किया। फिर खमनुकी ओर देखकर व्यंगमें पूछने लगी। 'सखि! इस युवकको पहचानती हो?'

"मैं नहीं जानती।"

'कुछ दिन पहले मैंने तुझे कुछ वस्त्र और एक मोतियोंका हार दिया था। क्या वे अभी तक तुम्हारे पास है या नहीं?' राजकुमारीने पूछा।

'अभी तक मेरे पास है, राजकुमारी !'

'बहुत सावधानसे रखना।'

थोड़ी देरतक सभी मौन रहे। उसके बाद सेनु एक छोटीसी रस्सी लेकर खम्बको पकड़नेके लिये आगे बढ़ी। सेनुको अपने भाईकी ओर रस्सी सहित बढ़ते हुए देखकर खमनु घबराई। मौका पाकर राजकुमारीने फिर तीव्र स्वरमें कहा 'सेनु मेरे पास पकड़ ले आओ, मैं भी घर जा रही हूँ। मैं अभी पिताजीके पास जाऊँगी और उस उद्दंड युवकको दण्ड दिलाऊँगी।

थोइबीका बचन सुनते ही खमनुकी आँखोंसे आँसूकी धारा मोतिकी भाँति बहने लगी। आखिर आँसू पोंछकर वह सविनय प्रार्थना करने लगी। अपराध क्षमा कीजिए, यह मोइरांगका युवक है। उस बेचारेको दण्ड दिलानेसे क्या लाभ ?

खमनुकी प्रार्थना सुनकर राजकुमारीने पूछा 'सच सच बताओ यह युवक तेरा क्या लगता है ?'

खमनुने डरते डरते जवाब दिया "यह अपराधी मेरा भाई है।" यह सुनकर थोइबीने व्यंग किया और कहा 'सखि ! मुझे मालूम नहीं था कि वह मेरी सखिका भाई हैं; कितना प्यारा लड़का है, यह मेरा भी भाई हो सकता है। फिर थोइबीने मुस्कराकर खम्बकी ओर देखा और कहा 'बुरा न मानना मेरा भैया ! मुझे मालूम नहीं था कि तुम, मेरी सखीका भाई हैं। आजसे तुम मेरे छोटे भाई हो।'

खमनु फिर प्रार्थना करने लगी इस युवकको तुरन्त छोड़ दीजिए। कोई देख लेगा तो मेरे भाईको नहीं बचा सकेगा।'

'कोई बात नहीं तू क्यों घबराती हो। छोटे भाईको बहनोंके पास आने-जानेका पूरा अधिकार है। कोई भी कानून छोटे भाईको अपनी बहनसे मिलने पर रोक नहीं सकता। बड़ी बहनके साथ छोटा भाईका रहना स्वभाविक है। तुम यहाँ निश्चित रहो भाई! तुम लोग अपनी अपनी जगहमें चले जाओ!' थोइबी हुक्म दिया।

खमनु लाचारीकी हालतमें अपनी जगहमें चली गई। सेनु राजकुमारीके पासमें ही रही।

राजकुमारीका छोटा भाई कहकर पुकारना खम्बको बुरा लगा फिर भी वह मौन रहा।

थोइबीने फिर कहा सुनो भाई, बुरा न मानो तो एक बात कहूँ?' अब खम्बसे चुप नहीं रह गया। उसने कड़ा जवाब दिया 'तुम्हारी उम्रसे मेरी उम्र अधिक है।'

थोइबी हँस पड़ी और 'बोली 'कोई बात नहीं, नाराज मत होओ। मैं तुम्हारी बड़ी बहनकी सहेली हूँ। इस कारण तुम मेरे भी छोटे भाई हो। इसलिए मैंने तुमको छोटा भाई कहा, इसमें तुम बुरा क्यो मानते हो? मुझे तो इसमें कोई असंगत बात दिखाई नहीं पड़ती। उम्रको बात छोड़ दो भैया!'

'तुम भले ही मेरी बड़ी बहिनकी सहेली हो, फिर भी तुम्हारा छोटा भाई कहकर पुकारना मुझे पसन्द नहीं' खम्बके मुँहसे

यह वाक्य हठात निकल गया। असलमें वह अपने मनकी बात इस तरह व्यक्त करना नहीं चाहता था।

'छोड़ो इन बातोंको, मैं अभी एक विशेष बात पूछना चाहती हूँ। तुम इसका सही सही जवाब दोगे न ?'
खम्बने फौरन जवाब दिया "पूछो।"

'तुम्हारी बड़ी बहिन अकेली रहती है। घर संभालनेमें वह असमर्थ है। अतः तुम्हारे ब्याहका अभीतक कोई प्रबन्ध नहीं किया गया है। केंग मोइरांगमें तुम्हारा मन पसन्द कोई लड़की हो तो बताओ मैं उसके साथ तुम्हारा ब्याह कराऊँगी; तुम्हारी क्या राय है ?'

थोइबीका मधुर वचन सुनकर खम्बने जवाब दिया 'कहनेसे क्या लाभ है ? तुम क्या कर सकोगी ?'

थोइबीने उत्तर दिया 'क्यों नहीं मेरे पिताजी युवराज हैं और चाचाजी महाराज हैं। मैं जो चाहती हूँ वही कर सकती हूँ। कहो मेरे छोटे भाईके लिए एक कन्याको ढूँढ़ निकालना बिलकुल आसान काम है। राजी खुशीसे बताओ, किस लड़कीको तुम पसन्द करते हो ?'

थोइबीकी व्यंगबाणी सुनकर खम्ब फिर पूछने लगा। केंग मोइरांगमें एकको छोड़कर मेरा किसी लड़कीसे प्रेम नहीं ! अच्छी तरह विचार कर लो, उस लड़कीको तुम नहीं दे सकोगी तो व्यर्थमें तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा। जिसको नहीं कर सकोगी उसे बतानेसे क्या फायदा।'

खम्बकी बातें सुनकर राजकुमारी काँप उठी और कहने लगी 'बताओ, वह सौभाग्यशालिनी लड़की कौन है?'

खम्बने मुस्कराते हुए कहा 'उस लड़की.........' यह कहकर अपने हाथसे थोइबीके जालमें पड़े प्रतिबिंबकी ओर संकेत किया।

"अरे! वही है!" यह कहकर थोइबी थोड़ी देर मौन रही और धीरे धीरे कहने लगी मेरे प्राणनाथ, तुमने कई महिनों तक मुझे दुखके सागरमें डुबा रखा मेरे हृदयमें प्रेमाग्नि प्रज्वलित होती आ रही है। अभी बहुत अच्छा मौका है, प्रेमरूपी नदीके मंझधारसे मुझे उठा लो।'

यह कहकर दोनों नायक नायिकाओंने जिन्दगी भर एक दूसरेको न छोड़नेका वादा किया। इस तरह संकल्प करनेके पश्चात, स्वर्णहारके निर्मल जल उन दोनोंने पिया। प्रतिज्ञा करनेके बाद दोनोंने जलपान किया। इस तरह वे दोनों बहुत देरतक प्रेमालाप करते रहे। उसके बाद खम्ब अपने घर लौट आया

शामका वक्त था। सूरज पश्चिमकी ओर धीरे धीरे डुब गया। संध्या होते देखकर मोइरांगकी सभी नारियाँ भी अपने अपने घरमें वापस गयीं। केवल सेनु, थोइबी और खमनु अभी तक घर नहीं पहुँचीं। वे चंगै झीलके समीप तक ही आ पहुँचीं

इस समय थोइबीने कहा "सेनु। हमें सहेली खमनुका घर देखना चाहिए," यह कह कर तीनों खमनुके घर तक गयीं। दूरसे ही

खम्बने देखा कि थोइबी अपनी बहनके साथ आ रही है। यकायक थोइबीने घरमें प्रवेश किया। इससे खम्बको बाहर जानेका मौका नहीं मिला। वह तुरन्त घरके अंदर एक कोनेमें छिप गया। एक कदम भी रुके बिना तीनों युवतियाँ घरके भीतर घुस आयीं। घरके कमरोंको देखनेका बहाना करके थोइबी इधर उधर खम्बको ढूंढ़ने लगी और उसने कहा "प्यारी सखि! तुम्हारा घर तो बहुत बड़ा है, क्या यह बिस्तरा तुम्हारा है ?"

इस समय खम्ब वायुकोणके कोनेमें एक बड़ी टोकरीके भीतर छिपा हुआ था। उसे देखकर थोइबी समझ गई और खमनुको ओर देखकर कहा 'यह कौन देवता है ?"

खमनुने उत्तर दिया "यह ···खुमन पोकपा······खुमनका कुल देवता है।" उसकी बात सुनकर थोइबीने पूछा 'खुमन कुल देवताका रूप ऐसा है क्या ?"

खमनुने जवाब दिया 'हाँ ऐसा ही रूप है। यह देवता सर्व शक्तिमान और अन्तर्यामी है, साकार और निराकार दोनों रूप धारण करनेवाला सर्वश्रेष्ठ देवता है! दर्शन करने भरसे पुन्य मिलता है।'

थोइबीने कहा 'मोइरांग * सलाईका कोई व्यक्ति इस देवताके दर्शन करे तो क्या आपत्ति या बुराई है ?"

'क्या आपत्ति होगी' खमनुने कहा।

---

* सलाई—सलाईका अर्थ वर्ण या जाति।

थोइबीने सेनुको आज्ञा दी 'सेनु देवताको पूजाके लिए सामग्री ले आओ।'

थोइबीकी आज्ञा पाते ही सेनुने कुछ फल-मूल और फूल लाकर इस देवताके समीप रख दिया। इसके बाद थोइबीने सेनुको आज्ञा दी कि यहाँ मेरा दम घुटता जा रहा है। तुम पिछले द्वारको खोलो।

सेनुने दरवाजा खोल दिया। इसके बाद थोइबी और सेनु हाथ जोड़कर घुटने टेककर निम्न लिखित वर माँगने लगी।

''हे खुमन देवता! दुखियोंका दुख हरनेवाले।
नाव है मंझधारमें, अब थामलो पतवारको॥
दुखकी नदी भरपूर है, सुखका किनारा दूर है।
देख न पावे देव, इस पारको, उस पारको॥
दुनिया नैयाके खेवैया, तुम ही खेवनहार हो।
क्यों लगाते देर है, भगवान, हमें पार लगानेमें॥
कोई यहाँ कोई वहाँ, दुख सह रहे होकर जुदा।
मनको सँभालें या सँभालें आसूओंके धारको!
मेरी इच्छा पूरण करें, कृपा करो दीनबंधु॥"

यह मन्त्र सुनते ही खम्ब हँसके मारे पिछले द्वारसे बाहर निकल भागा!

थोइबीने सेनुको हुक्म दिया 'पकड़ो! पकड़ो!! खुमन पोकपकी' यह कहकर दोनों खम्बका पीछा करने लगीं। पिछली झोंपड़ीमें खम्बको पकड़ लिया। खम्बके हाथको बाँधकर सेनु

घरके भीतर खींच लाया। सेनु और थोइबी दोनों हँस पड़ीं

स्वयं खम्ब हँसीके मारे अपने मुहपर हाथ लगाकर हँसी रोका रहा। थोइबीने मुस्कराकर मधुर स्वरमें कहा "तुम क्यों हंसते हो? 'कौन जाने हम तीनों ता अभी एक साथ आयी हैं। मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं। इस तरह देवता बनकर रहना शर्मकी बात है।' खमनुकी बात सुनते ही खम्ब एक कोनेमें घुस गया। सभी हैरान थे। राजकुमारी थोइबीने खम्बका अनुकरण किया और फिर सभी हँसने लगीं। हंसनेकी आवाज सुनकर खम्ब उस कोनेसे झांकने लगा। उस समय थोइबीने उसका अनुकरण किया यह देखकर खम्बने सोचा कि कितनी चंचल युवती है। पर थोइबी खम्बको देख न सकी। खमनुको थोइबीका यह अनुकरण देखकर आश्चर्य हुआ।

वतावरण बहुत सुखमय था, थोइबी अपनी घरको भूल गई और वहाँ उसको स्वर्गसे अधिक आनन्दमय मालूम हुआ। रूपवती थोइबीकी मूर्तिको देखकर खम्ब मोहित हो गया। थोइबी सब कुछ भूल गई। यह उसके लिए दूसरी दुनिया है। हँसते हंसते थोइबीने खम्बका अनुकरण करते हुए नाटकके ढंगसे खेल शुरू किया।

काफी देर हो गयी, रातका प्रथम पहर ढल चुका था। बराबर खमनुने कहा 'राजकुमारी देर हो रही है।' अतएव राजकुमारी थोइबी हँसते हँसते अभिनय कर रही थी। आखिर सहेली सेनुने कहा "राजकुमारी बहुत देर हो गयी, चलोगी न?"

सेनूकी बातें सुनकर थोइबीका हंसना रुक गया और उसने कहा 'चलो चलें।'

यह कहकर बाहर निकली फिर घरमें घुस गयी और बोली 'घोर अन्धकार है, हमसे चला नहीं जायगा। सखि! अपने भाईसे कहो कि हमें घर पहुँचा दे।'

खमनूने खम्बसे कहा 'अरे भैया! तुम राजकुमारीको राज महलतक पहुँचाओ। वे नारी हैं, इस घोर अन्धकारमें वे अकेली कैसे जा सकेंगी।'

बहनकी अनुमति लेकर खम्ब पिछली झोंपड़ीमें घुस गया। सूखी लकड़ीसे एक बड़ा-सा मशाल बनाया और आग सुलगाकर कहा 'आइये राजकुमारी' धीरे धीरे आगे बढ़कर थोइबीके पास खड़ा हो गया। खम्बका निषकपट व्यवहार देखकर राजकुमारी मुस्कराने लगी।

खमनुसे बिदा लेकर थोइबी और सेनु खम्बके पीछे मंद मंद जा रही थी! थोड़ी दूर चलनेके बाद दोनोंने आगे बढ़ कर कहा "हमें आगे जाने दो।"

'अच्छा, आगे बढ़ो तुम लोग पीछे चलोगे तो मेरी नकल करोगे।' खम्बके व्यंगभरी बातें सुनकर थोइबीने सेनुको गले लगाकर कहा 'आहा!'

इसके बाद थोइबी और सेनु चुप चाप चलने लगीं। चलते चलते वे चेंगैके समीप आ पहुँचे। इस समय तुफान आया

खम्बके हाथका मशाल बुझ गया। सहसा थोइबीने कहा अब अंधेरी और तूफानसे बचनेका क्या उपाय है?'

दोनोंने सोचा कि खम्बने जान बुझकर मशाल बुझाया है। सेनुने खम्बको सम्बोधन करके कड़े शब्दोंमें कहा 'महाशय! यही तुम्हारी आदत है क्या? तुम स्त्रियोंकी मजबुरीसे लाभ उठाना चाहते हो। थोइबीने सेनुसे तीव्र स्वरमें कहा 'सेनु इस तरहकी कड़ी बात क्यों कहती हो? हम कुरूप हैं। वह हमें देखना नहीं चाहते इसलिए मशालको ......।'

'ठीक है राजकुमारी, मेरा अपराध क्षमा कीजिए। उसी तरह व्यंग करते करते दोनों धीरे धीरे जा रहे थे। जाते जाते खम्बने कहा 'तुम दोनोंने अपनी अपनी धारणाके अनुसार मुझपर दोषारोपण किया है। लेकिन मेरे मनमें कोई बुरी भावना नहीं है। मशाल तो तूफानके आनेसे बुझ गया था। तुमलोग मेरे साथ जाना नहीं चाहो तो कोई बात नहीं, मैं अभी वापस जा रहा हूँ।'

थोइबीने घबराते हुए कहा 'सेनु! सेनु! उससे कहो वह ऐसा न करो, हमने कुछ कहा उसके लिए क्षमा मांगो। यहाँ तो हमें कोई डर नहीं है। राजमहलके सिंह द्वारके समीप एक बकुलका पेड़ है। उसकी घनी छायासे चारों तरफ अंधकार ही अंधकार है। इतना ही नहीं, लोग कहते है कि वहाँ एक भयंकर भूत भी रहता है। वहाँ हम दोनों कैसे जा सकेंगे?' थोइबीकी अनुनय

भरी वाणी सुनकर खम्ब दोनोंको पहुँचानेके लिए हो गया। अन्तमें उसने दोनोंको राजमहल तक पहुँचाया।

घरमें पहुँचे ही थोइबीने खम्बका अपने अलग घरमें स्वागत किया। वह घर राजसी ढंगसे सजा हुआ था। एक कमरेमें दो स्वर्ण जैसी पलंगे थे। यह घर नाना प्रकारके सुन्दर फूलोंसे सजाया गया था। इस घरमें खम्बको बैठाया गया। इसके बाद राजकुमारी थोइबी और सेनु दोनों बाहर निकलीं और राज भवनमें प्रवेशकर अपने अपने बिस्तर पर सो गयीं।

रातका दूसरा प्रहर था। राजकुमारी और सेनु दोनों चोरकी भाँति चुप-चाप जाग उठीं। धीरे धीरे जाकर रसोई घरसे खाने पीनेकी सामग्री लेकर उस घरमें चली आयीं; तीनों एक साथ भोजन करने लगे। भोजन समाप्त होनेके बाद सारी रात तीनों प्रेमालाप करते रहे।

सवेरा हो गया। सबलोग अपने अपने शय्यासे जाग उठे और काम करनेके लिए बाहर निकले। सवेरा होते ही देखकर थोइबी और सेनु घबराओं। खम्बको बाहर निकलनेका मौका नहीं मिला। इतनेमें बुद्धिमती थोइबीने सेनुको हुक्म दिया 'सेनु! एक तिकिया सुलगाकर गोशालाके छप्परपर रख दो।' थोइबीको आज्ञा पाते ही सेनुने हुक्मका पालन किया।

थोड़ी देरमें यह गोशाला जलने लगी। सब लोग जोर जोरसे पुकारने लगे। 'आग लग गयी! आग लग गयी!! बचाओ बचाओ'॥

मौका पाते ही थोइबीने खम्बको छोड़ दिया। खम्ब भी आग बुझानेके बहाने इधर-उधर भागते रहे और मौका पाकर वहाँ निकल गये।

× × ×   × × ×   × × ×

तीसरा परिच्छेद

कांगजै साम्नबा (हाँकीका खेल)

चार साल़के बाद एक दिन मोइरांग चाओबा नोंगथोनबा महाराजकी सेवामें उपस्थित हुए। इस समय नोंगथोनने महाराजसे कांगजैके बारेमें प्रस्ताव किया और कहा 'हे राजन! परम्परासे मोइरांगमें कई खेल चले आ रहे हैं। इनमेंसे कांगजै शाम्नबा कांग शाम्नबा और लमजेन (दौड़ना) तीनों ही प्रधान हैं। बहुत दिनसे कांगजैका खेल अच्छा नहीं रहा, अतः आगामी साल़के कांगजैका खेल़ ऊँचे स्तरका होना चाहिए। यही मेरी आशा है।

महाराजने कहा ठीक बात है नोंगथोनबा! यदि मेरा भाई युवराज राजी हो जाय तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। इसलिए मेरे भाईके पास जाकर उसकी राय जान लीजिए।'

नोंगथोनने युवराजके पास आकर प्रणाम किया और कहा 'सुनिए युवराज! मेरी राय है कि कई दिनोंतक कांगजैका खेल

अच्छा नहीं रहा है। इसीलिए आगामी सालके कांगजैका खेल ऐसा होना चाहिए जिसमें अच्छे अच्छे खिलाड़ी हों।

इसके संबंधमें आपसे प्रार्थना करने आया हूँ। आपकी क्या राय है?

युवराजने उत्तर दिया 'अच्छी बात है, लेकिन मेरा दल करीब सात वर्षोंसे पराजित होता आ रहा है। इसलिए मेरा दिल गम खा रहा है। इतना ही नहीं नोंगबानसे अवांग लौकाईके सब पहलवान पराजित हो गए। राज्यके लिए कांगजैका खेल अनिवार्य है। कांगजैका खेल बन्द करना मेरी समर्थके बाहर है।'

नोंगथोनबा राजनीतिज्ञ और नामी वकील थे। उसने युवराजके सामने घोषित किया युवराजके इच्छानुसार कांगजै खेलना जरूरी है, इसलिए आगामी साल कांगजै खेला जायगा '

दूसरे दिन कांगजैके लिए विज्ञापन निकाला गया सारे नगरमें हलचल मच गया। यह विज्ञापन सुनते ही खमनुने चिन्तित होकर कहा 'भैया, तुम कांगजै खेलने मत जाओ।'

खम्बने मनमें सोचा कि "मैं कांगजै खेलना चाहूँ तो भी बहनकी अनुमतिके विना नहीं हो सकता। इसलिए उसने कहा मैं कांगजै खेलने नहीं जाऊँगा "

इस तरह मिथ्या वचन कहकर खम्ब थांगजिं देवताकी आराधना करने लगा। 'हे इबुधो थांगजिं मेरा अपराध क्षमा करें, मुझे कांगजै खेलने और देखनेकी सुविधा दीजिए।'

दिनका तीसरा पहरका था। सूर्यदेव अस्ताचलकी ओर अग्रसर हो रहा है। गगनकी सुनहरी किरणोंसे विचुम्बित लोक्ताक झील ऐसा दिखाई पड़ी मानो स्वर्ण कमल खिल उठे हों। इस समय चिंगखुबा युवराज * चैराप दरबारसे लौटकर भवनके आंगनमें विराजमान हो रहे थे। इस समय राजकुमारी थोइबीने अपने पिताजीके पास आकर विनय की "पिताजी, आज आपका मुँह पीला क्यों पड़ गया है? प्रतिदिन मेरे लिए दरबारसे कुछ फल-मूल ले आया करते थे, आज क्यों नहीं लाये?'

'तुम्हारा कहना ठीक है बेटी! आज मेरा मन ठीक नहीं रहा है; क्योंकि कांगजैमें पूरे चार वर्षोंतक मेरा दल पराजित होता आ रहा है। महाराजकी तरफ बलवान नोंगबान है इसलिए प्रत्येक खेलमें महाराजके दलने ही विजय पायी है किन्तु मेरे दलमें कोई पहलवान और उत्तम खिलाड़ी नहीं। मेरे दलमें सिर्फ तुम ही हो। तुम प्रजाको प्रोत्साहित करते रहना, प्रजाको उत्साहित करना तुम्हारा काम है।'

थोइबीने अपने मनमें बहुत कुछ सोचने और अनुभाव करनेके बाद उत्तर दिया 'अच्छी बात है, पिताजी, मैं भी देखूँगी हमारा दल क्यों पराजित होता है?'

"प्रोत्साहनके लिए सब फल मूल लेकर प्रजाओंको खिला दो बेटी!" युवराजने कहा।

* चैराप—अदालत।

'पिताकी आज्ञाका पालन करना पुत्रीका परम कर्त्तव्य है।' थोइबीने कहा।

थोइबी अपने घरमें आई और सब हाल सेनुसे कह सुनाया। क्या कहूँ, सेनु मैं खुद अपने हाथोंसे मोइरांगके अन्य पुरुषोंको उपहार कैसे दूँ। लेकिन मेरे पिताकी यही आज्ञा है कि मैं उनको उपहार दूँ। मैं थमंगखोंगका संकल्प कैसे छोड़ सकती हूँ? मैं परायी स्त्री हो गई हूँ। अगर वह खेलमें विजय हो जाय तो फूलहार प्रदान कर सकूँगी, अन्य था नहीं।

'थमंगखोंगकी प्रतिज्ञा क्या है···खुमनकी प्रतिज्ञा है न?' सेनुने कहा।

'हाँ, वही प्रतिज्ञा है। मैं उसका उल्लंघन नहीं कर सकूँगी। वे दोनों इस तरह वार्तालाप करते करते थांगजिके मन्दिर तक चली गईं। थोईबीने थांगजिसे खम्बको कांगजैमें शामिल करानेके लिए प्रार्थना की।

सबेरा हो गया। सूर्यदेव उदय-गिरिसे उदित हो रहा है। सबलोग अपने अपने काम-काजमें लगे हैं। पक्षीगण पेड़ोंकी डालियोंपर बैठकर अपनी अपनी भाषाओंमें ईश्वरके गुण गान करने लगे। खेलका समय हुआ। खेलके मैदानमें सब लोग जमा हो गए। सबके अन्तमें राजकुमारी थोइबी आयी और नारियोंके सबसे आगे बैठ गई।

दूसरी ओर मोइरांग चाओबा नोंगथोनबने चिंखुबा युवराजसे निवेदन किया 'युवराज, कांगजैका खेल शुरू किया जाय। इसलिए मैं आपकी सेवामें हाजिर हुआ हूँ। आप जानेका कष्ट करें।

नोंगथोनकी बात सुनकर युवराजने गम्भीर स्वरमें कहा 'मेरा तबियत ठीक नहीं, इसलिए कांगजै नहीं देखूँगा।' यह कहकर युवराजने जानेसे इनकार कर दिया। इसके बाद नोंग-थोन मैदानमें जा पहुँचे।

प्रजा और सब मुखियोंने कहा 'राजा और युवराजके आनेके पहले कांगजै शुरू नहीं किया जा सकता, लेकिन आखिर नोंगथोनने सभाके बीचमें आकर घोषणा की 'सुनो भाइयो और बहिनो! आज महाराजने युवराजको आजके खेलकी जिमेन्दारी सौंप दी पर दुर्भाग्यसे युवराजकी तबियत ठीक नहीं, इसीलिए वे पधार नहीं सकेंगे। युवराजने आज्ञा दी है कि कांगजै शुरू किया जाय।'

दिनका दूसरा पहर था। नोंगथोनकी बात सुनकर कांगजै आरम्भ हुआ। आजका खेल पहले सालोंके खेलोंसे महत्वका है। अङोम नोंगबान थोइबीको सामने देखकर एक मस्त हाथीके समान प्राणपणसे खेल रहा था। अप्रिय नोंगबानका चेहरा देखकर राजकुमारी थोइबीने अपने कमल नयनको दूसरी ओर कर दिया। थोइबीके सामने घमंडी नोंगबानने अपने मनमें सोचा 'पुरुषोंमें मैं अद्वितीय हूँ। उसका प्रेम मेरे प्रति क्यों नहीं होगा। मोइरांगमें कौन ऐसा पुरुष है जो राजकुमारीको प्रेमका अधिकारी है। मेरे गुणके आगे राजकुमारी थोइबीके कमल नयन चंचल क्यों नहीं होंगे नोंगबान अपने घमण्डके कारण सभीको तुच्छ

समझता था। नोंगबानका सामना करनेवाला आवांग लैकाईमें कोई नहीं था।

नोंगबानका मुकाबला करने लायक केवल एक पुरुष था। वह नामोइजाम्ब अब बूढ़ा हो गया था। इसलिए सिंह जैसा बलवान नोंगबान सब विपक्षोंको पछाड़नेका तैयार था।

भयके मारे विपक्षी नोंगबानसे लड़नेका हिम्मत नहीं रखते थे। इतनेमें नामोइजाम्ब नोंगबानके बिरोधमें खेलनेके लिए मैदान को ओर बढ़ा। सब दर्शकोंमें हलचल मच गई। मैदानकी वह आवाज अपने घरके आंगनमें बैठे हुए खम्बके कानोंमें गूंजने लगी। खम्बका मन अस्थिर हो उठा। उसको देखकर खमनुने खम्बको, सलाह दी "भाइ, तुम्हारे मनमें क्यों उत्सुकता हो रही है, जाओ घरके भीतर"

खम्बके मनमें खेलनेकी भी प्रबल इच्छा हुई। उसने थांगजि ईश्वरसे प्रार्थना की "हे इबुधौ थांगजि, मुझे खेल कूदके मैदानमें पहुँचाओ।"

दासकी इच्छा पूरी करनेके लिए थांगजिने काइरेल लैमाको (काइरेल नामक नियति) उसकी बहनके मनमें प्रवेश कराया। थांगजिकी कृपा पाते ही खमनुके दिलमें विपरीत विचार आया और कहने लगी 'भाई! मैं स्नान करने जा रही हूँ। इसके साथ ही साथ कुछ खाने पीनेके लिए सिंघाड़ा, मजीढ़, हरहुची और गिमेशाक आदि ले आऊंगी।' यह कहकर खमनु हाथमें गगरी लेकर नदीकी ओर चली गई।

अपनी बहनके बाहर जाते ही खम्ब घरसे तुरन्त निकल भागा और नम्र स्वरसे पुकार पुकारकर कहने लगा 'बहन अब मैं चलता हूँ।' खमनु खम्बकी आवाज सुन न सकी। खम्ब तुरन्त मैदानमें आ पहुँचा। कांगजौ देखनेके लिए एक कोनेमें बैठ गया।

चकोर पक्षी चाँदनीसे अमृत पानेकी अभिलाषासे आसमानकी ओर लालचभरी दृष्टिसे देखता है, वैसे ही थोइबी खम्बके चन्द्रबदनको पानेके लिए इधर-उधर देख रही थी। वह शुभक्षण आया, उसकी दृष्टि खम्ब पर पड़ी। खम्बको देखते ही थोइबीने कहा 'सेनु वह भी आया है।'

खम्बको पति मानकर राजकुमारी अपने अतःकरणमें ध्यान लगाकर थांगजि ईश्वरसे प्रार्थना की और ऐसा वर मांगा 'हे इबुधौ, कृपा करके मेरे पतिको कांगजौमें शामिल कराया जाय। यदि इस खेलमें नोंगबान हार जाय तो आगामी साल नवछत्र भेंट करूँगी।'

नोंगबानके खेलनेका ढंग खम्बको अच्छा नहीं लगता था। जालमें फँसे हुए सिंहके समान खम्ब उपाय हीन था। आवांग लौकाईके दलने कांगजौ उठाकर बुलन्द आवाजसे ऐलान किया 'सुनिए दर्शक-गण नोंगबान बेनियम खेल रहा है। इस तरह खेले तो हम खेल नहीं सकेंगे। वह बहुत घमंड हो गया है।

नोंथोनने कहा 'सुनो नोंगबान! नियमके अनुसार खेलो, दूसरोंको मारनेके लिए खेलना ठीक नहीं। खेल, खेल ही है।

तुम इतना घमण्ड क्यों करते हो, यह राज सभा है। केगे राज्यमें तुम अकेले हो वीर पुरुष हो, ऐसा मत समझो। भाईका भाईसे सामना करना मैं नहीं चाहता। इससे परिवारमें बदनाम हो जायगा। मेरा बेटा फैरोइजाम्ब भी है। तुम किस बातके लिए इतना घमंड क्यों, करते हो?"

यह बात सुनते ही नोंगबानने निश्चिंत होकर प्रजाके सामने कहा 'अङोमके विरोधमें अङोमका कोई खेले तो भी मैं तैयार हूं। इसमें कोई बदनामकी बात नहीं है।' नोंगबानकी बात सुनकर आवांग लौकाईके दलके लोग खेल जीतनेको इच्छासे राज कुमारी थोइबीके समीप चले आए और उन्होंने थोइबीसे प्रार्थना की। उनको देखकर राजकुमारीने कहा खिलाड़ियो! यदि तुम लोग विजय चाहते हो तो देखलो! वायुकोणमें एक पहलवान युवक बैठा हुआ है। उसको तुम्हारे दलमें लादोगे तो खेलमें जरूर तुमलोगोंकी विजय होगी यह बात *इपु नोंगथोनसे कहो'

यह वचन चाओबा नोंगथोनको कह सुनाया। थोड़ा देरके बाद एक दूत खम्बके पास आया और बोला 'भाई! नोंग-थोनकी आज्ञा ही है कि आप उनके पास जाएं।' दूतकी बात सुनकर पहले पहल खम्बने जानेसे इनकार किया। बातमें उसने सोचा कि नहीं, मुझे जरूर जाना चाहिए, यह सोचकर खम्ब नोंगथोनके समीप आ पहुँचा और प्रार्थना करते हुए उसने

*इपु—दादा

कहा 'मैं आपकी सेवामें उपस्थित हूं। आप मुझे क्या आज्ञा देंगे।'

'मोइरांग बेटा! तुम कहांके निवासी हो, तुम्हारा नाम क्या है ?'

"मेरा नाम खम्ब है।"

खम्ब नाम सुनते ही नोंगथोनबको अपने प्यारे मित्र स्वर्गीय पुरेन्बका नाम याद आया और बोला।

"तुम्हारे कितने भाई-बहन हैं ?"

"मेरी एक बड़ी बहन है।"

"उसका नाम क्या है ?"

"उसका नाम खमनु है।"

"तुम्हारे माता पिताके नाम ?"

"अपने माता पिताके नाम मुझे मालूम नहीं।"

"क्यों"

"जब हम बहुत छोटे थे तक हमारे माता पिता स्वर्गवास हो गए।

"अच्छा मेरी बात सुनो! तुम कांगजै खेलना चाहते हो ?"

'क्यों नहीं! पर मेरा कपड़ा ....। (अपने मलिन कपड़ेकी ओर देखना है)

"फिक्र न करो वत्स! तुमको कपड़ा दिया जायगा।"

यह कहकर नोंगथोनने एक सुन्दर गुलाबी रंगको धोती खम्बको दी। इस दृश्यको थोइबीने दूरसे देखा और मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रही थी! खम्बने इस नये आभूषणको पहना।

इस समय तोंगथोनने कहा धोती अच्छी तरह पहन लो, समय हो गया।'

खम्बने धोती पहनी लेकिन उसके मनमें संकोच हुआ और उसने कहा 'यह धोती बहुत मूल्यवान है, मैं गरीब हूँ, खेलते समय यदि कहीं फट जाय तो दूसरी धोती देनेको मेरे पास नहीं है।'

यह बात सुनकर नोंगथोनकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। कोई हर्ज नहीं, बस्स! यह वस्त्र बिना मोलके ले लो। मैंने यह वस्त्र तुझे दिया है।

खम्बने यह वस्त्रको सम्भालकर ओढ़ा। उसकी मलीन पोशाकको चाओबने रख लिया। खम्बकी दशाको देखकर चाओबको दुख था एक लम्बी पगड़ी खम्बको दी।

यह लम्बी-चौड़ी पगड़ी पहनकर खम्ब एक मजबूत कांगजौ (हॉकी) चुननेके लिए पश्चिमकी ओर आया। यहाँ अपना उपयुक्त कांगजौ नहीं मिला। खम्बने एकके बाद एक उठाकर देखा। अन्तमें निराश होकर सभी कांगजौ रख छोड़ा। चारों ओर घूमकर देखा, उसके बाद अङोम फैरोइजाम्बके पास आकर प्रार्थना की। मेहरबानी करके आपका कांगजौ मुझे दीजिए।'

'कोई बात नहीं, खुशीसे ले लो। यह कांगजौ तुम्हारा योग्य है, क्योंकि कांगजौ बहुत मजबूत है। मैंने यह कांगजौ तुमको विना मूल्य भेंट स्वरूप दिया है। नोंगबान बहुत घमंडी है फिर भी वह मेरा भाई है। भाईके प्रति भाईकी दुश्मनी ठीक न समझकर मैं उसके कांगजौ नहीं खेलता। नहीं तो वह मेरे सामने

टिक सकता ! मैं जानता हूँ, तुम उसको जरूर हरा सकोगे।'

खम्बने कहा 'आप लोगोंकी कृपा है।" यह कहकर खम्ब खेलके मैदानमें जहाँ नोंगबान है जा पहुँचा। खम्बको देखते ही सबलोग चुप-चाप बैठ गए।

खम्ब मतवाले गजकी तरह नोंबानका मुकाबला करनेकी इच्छासे फौरन घुस गया। फिर खेल शुरू हो गया, गेंद फेंकने लगा। खम्ब और नोंगबान दोनों कांगजो खेलने लगे। सब दर्शक हैरतसे देख रहे थे। खेल जम गया।

मौका पाकर नोंगबान खम्बसे कहने लगा।

"तुम कौन हो, मोइरांग बेटा!"

"मैं? मैं हूँ, तुम क्या चाहते हो?"

"तुम यहाँ क्यों आये हो?"

"तुम्हारा मुकाबला करनेके लिए मैं आया हूँ।" समझे? खम्बको पहचानते ही नोंगबान ठिठक गया।

नये खिलाड़ी खम्बको पाकर बहुत खुश हो गए। प्रत्येक दलमें सात सात खिलाड़ियाँ थे। सभी जी लगाकर खेलने लगे। गेंद आकाशपर पक्षीको भाँति उठने लगी। फिर जमीन पर गिर पड़ी। खम्बने झपट कर गेंदको मारा। वह गेंद नोंगबानके सिर पर गिरने वाली ही थी कि खम्बने दाहिना पैर भूमि पर जोरसे मारकर वाईं तरफ सात-हाथोंके प्राय कूदा और गेंदको पकड़ लिया। नोंगबानने भी दाहिना पाद जमीन पर मारकर दाहिनी तरफ कूदा, पर उसका प्रयास वृथा हो गया।

खम्बने उस गेंदको पकड़ा और कांगजै (लाठी) को इधर उधर घुमाकर दौड़ रहा था। इस वक्त नोंगबान खम्बपर आक्रमण करनेके लिए उसके पीछे पीछे तेजसे दौड़ा। नोंगबानके पहुँचते ही खम्बने गेंदको निशाना लगाकर गेंदको कांगजैसे जोरसे मारा।

दूरसे देखनेवालोंने ऐसा देखा मानो खम्बने नोंगबानके गालमें जोरसे कांगजैसे मारा है।

यह गेंद उत्तरकी ओर उड़कर राजकुमारी थोइबीके पास गिर पड़ी। इस वक्त नोंगबानने अधिक तेजसे दौड़कर खम्बके कमरको थोइबीके सामने ही अधिक जोरसे पकड़ लिया। दोनों तुमुल मुक्का (कुस्ती) कर रहे थे। सभीको बहुत आनन्द आया, देखने लायक है, समान ताकत व विद्यावाले योद्धा हैं। जब नोंगबानने खम्बको ऊपर उठाया तब खम्ब नोंगबानके गर्दन पर चिपक गया। मोइरांगकी सभी प्रजा घबराने लगी।

सभीने अपने अपने मनमें सोचा कि खम्बको हार हो जायगी। नोंगबानने खम्बको फेंकने की कई बार चेष्टा की पर वह निष्फल हो गया। खम्ब नोंगबानके गर्दन पर ऐसा चिपक गया कि नोंगबान उपाय हीन हो गया था। थोड़ी देरके बाद खम्बके पांव धीरे धीरे जमीन आ गए। उसके बाद खम्बने नोंगबानको दायीं तरफ खींचकर थोइबीके सामने नीचे दबा दिया। नोंगबानके मुखको काफी चोट लग गई।

नोंगबानकी दशा देखकर सभी लोग कहने लगे 'आहा! सात वर्षोंतक नोंगबान ही विजयी रहा है, पर दुर्भाग्यसे आज

उसको पराजय हो गयी। इस तरह वह गेंद धीरे धीरे आकर थोइबीके आंचलमे गिर गई। बादको थोइबीने वह गेंद पकड़ कर खम्बको ओर फेंकी और कहा "मेरे पिताजीके बहादुर खिलाड़ी बड़े उत्साहसे खेलो।"

नोंगयाइ खम्ब गेंद लेकर फिर दौड़ा। नोंगबान सहसा उठकर हमला करनेके लिए खम्बके पीछे दौड़ा, किन्तु पकड़ नहीं सका। खुमन (खम्ब) आसानसे मंजिल पहुच गया।

उत्तर दलके सभा लोगोंने खम्बको अच्छे कपड़े पारितोषिकके रूपमे दिये। कहाँ तक गिनायें खम्बके सामने इतने अधिक कपड़े हो गए मानो सामने कपड़ेका एक पहाड़ खड़ा है। इतना ही नही मणिहार, फूलमाला आदि समूहके समूह खम्बको प्रदान करने लगे।

खम्बके पाछे सर्वाङ्ग सुन्दरा राजकुमारी थोइबो जा रही थी। वह ऐसी सुन्दरी है मानो ताता भूमि पर जा रहा है अथवा मोर नाच रहा है। थोइबी मंद गतिसे मैदानके मध्य-स्थलमें खम्बके पास जा रही था। खम्बको नाना प्रकारके अमूल्य आभूषण और फल-मूल प्रदान किया और मधुर स्वरमे कहा 'मेरे पिताजीके वार खिलाड़ी, तुम थक गए होगे, मै तुम्हे क्या खिलाऊँ। यह फल मूल स्वीकार करो।

यह कहकर नव युवती थोइबी अपने आसनपर आ बैठी। इस समय दक्षिणको उत्तरने १५-५ से हरा दिया। उधर दलके

सब खिलाड़ी खुशीसे फूले नहीं समाते थे। समय काफी व्यतीत हो गया दिनका तीसरा पहर ढल चुका था। चतुर्थ पहर आरंभ हुआ। सांझका समय था। इस समय चाओबा नोंगथोनने घोषणा की।

"अब खेल समाप्त कर लो।"

चाओबकी आज्ञा पाते ही कांगजै बन्द हो गया। कांगजै खतम होनेके बाद दोनों दलोंमें फिर मुक्का (मणिपुरी कुस्ती) आरंभ हुआ।

× × × × × × × × ×

मुक्का

(मणिपुरी कुश्ती)

खम्ब और नोंगबानने मुक्कामें एक दूसरेको पछाड़नेका प्रयत्न किया। पर एक घंटे तक दोनोंमें हार-जीतका फैसला नहीं हो सका। नोंगबान मन ही मन आग बबुला हो गया। आखिर खम्बसे नोंगबान पराजित हो गया। इससे नोंगबानके हृदयमें खम्बके प्रति दुश्मनकी भावना पैदा हो गई।

फिर हठात उठकर नोंगबानने कहा 'एकबार'।

नोंगथोनने पूछा 'क्यों'?

तुम्हारो मुक्काका नियम ठीक नहीं है। तुम उससे नियम सीखना चाहो तो सीख सकते हो।

सबने खम्बको नाना प्रकारके कपड़े इनाममें दिये।

इसके पश्चात मोइरांग चाओबा नोंगथोनबने खम्बके पास आकर कहा 'कहो वत्स! तुम्हारे माता पिताके नाम क्या है?

खम्बने उत्तर दिया 'मैंने पहले ही आपसे कह दिया कि मुझे अपने माँ-बापके नाम मालूम नहीं है।' चाओबने फिर चलाकीसे कहा 'वत्सो! जब तक तुम्हारे माता पिताके नाम नहीं बताओगे तब तक तुमको तंग किया जाता रहेगा।

खम्ब क्षण भर मौन रहा। राजकर्मचारी दोलाइपाब (चप-रासी) खम्बको मारनेकी तैयारीमें था और उसने मारनेकी धमकी दी

इस घटनाको देखकर थोइबीने सेनुसे कहा 'तुम जाओ, जाकर दादा नोंगथोनसे पूछो कि इस बेगुनाह युवकको क्यों मारते हो? इस पुरुषकी वजहसे हमारे दलकी विजय हुई है।' थोइबीकी वाणी लेकर सेनुने नोंगथोनसे प्रार्थना की। सेनुकी प्रार्थना सुनकर नोंगथोनने कहा 'यह राजविधान है, स्त्रियोंका यहाँ कोई काम नहीं। तुम लोग यहाँसे चले जाओ।"

नोंगथोनका हुक्म सुनकर भी थोइबी और सेनु चुप चाप वहीं खड़ी रहीं।

खम्बको चारों ओरसे राजचर्मचारीयोंने घेर लिया। वे खम्बको मारनेके लिए अपने अपने हाथोंमें लाठी लिए खड़े थे।

इस वक्त खम्बके मनमें तरह तरहकी भावनाएँ उठीं। अंतमें नोंगथोनने खम्बको देखकर कहा पुत्र! तुमको अपने माता पिताके नाम बतानेमें क्या आपत्ति है?

'खम्बने कहा कोई आपत्ति नहीं फिर भी ········ ?'

नोंगथोनने सभी कर्मचारीयोंको रोक कर कहा 'बस्स! बताओ माता पिताके नाम बतानेमें कोई दोष नहीं। तुम्हारे माँ-बापके शुभ नाम क्या है? चिन्ता न करो।'

खम्बको आँखोंसे आँसू बह रहे थे और वह बोला "हे तात! मेरे पिताजीका नाम 'नोंगयाइ चाखाङम्ब-खुमन पुरेनहोंगबा है' और माताजीका नाम 'डांखालैमा युरेन तोनपोकपी फोइदिंग लम्मित चुम्बी है।'

यह नाम सुनते ही नोंगथोनके दिमागमें पुरानी सब स्मृतियाँ जाग उठीं और सहसा उसने खम्बको आलिंगण करके कहा "मेरे बच्चे! तुमने मुझे क्यों नहीं पहचाना ?' यह कहकर नोंगथोन विहोश हो गया।

'हाय हाय! कहकर सभीलोग नोंगथोनके सिरपर ठण्डा पानी डालने लगे। थोड़ी देरमें नोंगथोनको होश आया और खम्बको पुकारा 'हे वत्स! आज मैं बहुत खुश हूँ' यह कहकर खम्बको आलिंगण किया। फिर अपने बेटे फैरोइजाम्बसे कहा 'देखो यह बच्चा खमनुका भाई है। तुम्हारा साला है, तुम उसे भूल गए ?'

सबलोग जानते थे कि खम्ब पुरेनबका लड़का है और खमनुका भाई। फैरोइजाम्बने खम्बके निकट आकर कहा मुझे धीक्कार है। मैं अपने सालेको नहीं समझ सका।' यह कहकर फैरोइ-जाम्बने खम्बको आलिंगण किया। इसके बाद सबलोग अपने अपने घर चले गए। खुमन-खम्बके सब कपड़ोंको नोंगथोनने नौकरके द्वारा खमनुके पास पहुँचाया।

दिनका अन्तिम प्रहर था। लाल चुनरी पहनकर सूरज अस्ताचलकी ओर धीरे धीरे जा रहा है। इस वक्त नोंगथोन, फैरोइजाम्ब और खम्ब राज फाटकमें खड़े रहे। नोंगथोन चाओबने महाराजको दण्डवत प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहा 'हे राजन! आजके कांगजैका खेल बहुत सुन्दर रहा। दक्षिण दल पराजित हो गया। आजका खेल देखने लायक था। आज़के

खेलको जिसने नहीं देखा है, वह अभाग्य है। बहुत ऊँचे स्तरका खेल था। ऐसा खेल न तो हमने देखा, न भविष्यमें देखेंगे।

नोंगथोनके सामाचार सुनकर महाराजने मुस्कराते हुए व्यंग पूर्वक कहा 'जीत लिया होगा। जीत लिया होगा।'

'राजन मेरी बातों पर आपको विश्वास न हो तो आप नोंगबानसे पूछिए।'

यह बात सुनते ही राजाको विश्वास हो गया और बोला 'किसने नोंगबानको हरा दिया।'

नोंगथोनने फिर कहा 'एक वीर युवकने नोंगबानाको पराजित किया है। नोंगबानके बदनमें घावके कई चिह्न आप देख सकेंगे।'

'वह आदमी कहाँ है? कहाँसे आया है, जिसने नोंगबानको हराया है! मैं युवकको देखना चाहता हूँ।'

'वह चला गया। मुझे मालूम नहीं कि वह कौन है।' नोंगथोनने उत्तर दिया। यह कहकर नोंगथोनने फैरोइजाम्बको इशारा किया। इशारा पाते ही वह और खम्ब महाराजको दण्डवत प्रणाम किया।

फैरोइजाम्बको राजाने पुकारा 'फैरोइजामबा!'

'जी, महाराज!' फैरोइजाम्बने उत्तर दिया।

खम्बको राजा पहचान नहीं सका। राजाने फैरोइजाम्बसे पूछा "फैरोइजाम्ब, तुम्हारे साथका यह युवक कौन है?'

राजाके प्रश्नका जवाब नोंगथोनने ही दिया—राजन! आप इस युवकको नहीं पहचानते! याद कीजिए यह लड़का कौन है?'

राजाने युवकको जोरसे देखा। फिर भी उनके समझमें नहीं आया कि यह युवक कौन है अंतमें राजाने कहा 'नोंगथोन! यह लड़का कौन है। मेरी समझमें नहीं आया। बताओ, यह युवक किसका पुत्र है?'

यह युवक तोबुंगमें कई सालों पहले पाँच बाधको बिना हाथियार पकड़नेवाले पुरेनबका लड़का है। उसकी माताका नाम था 'झांखालैमा'। इस युवकका नाम खम्ब है। अभी तो आप समझ गए होंगे। इस युवकने आजके कांगजैमें भाग लिया। उसकी बहादुरीके ही कारण आजके कांगजैमें युवराजकी दलकी विजय हुई। वह राज्यकी उत्तर सीमाका निवासी है।

इस युवकका विवरण सुनकर राजाको पुरानी बातें याद आयीं और वे फूट फूटकर रोने लगे। खम्बके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। इतनेमें अङोम नोंगबान पहुंचा। नोंगबानके शरीरके कई स्थानोंमें चोट लगी है।

राजाने उसको सम्बोधन करके पूछा *'तयुम नोंगबान क्या बात है? आज तुम्हारी बदनमें इतनी चोट कैसी आयी?

'महाराज धाराज! विशेष कोई बात नहीं है। आजके कांगजेमें दुर्भाग्यसे मैं मैदानमें गिर पड़ा। अतः इस शरीरमें चोट आयी है।' नोंगबानने इसी तरह उत्तर दिया।

---

* तयुम प्यारा दास

"बापरे वाह कोंगयानब ! राजाके सामने झुठ क्यों बोलते हो ? एक मोइरांग बच्चेके मुकाबलेमें तुम्हारे बदनमें जखम कैसे हो सकता है ? मैंने स्वयं उस दृश्यको देखा है। ठीक ठीक बात क्यों नहीं सुनाते हो ? राजाके सामने मिथ्या बोलना बड़ा पाप है। इसमें लज्जाको क्या बात है ! खेलमें तो हार-जीत होती रहती हे ' नोंगथोनने व्यंग करके यह सब बात सभीको कह सुनाई।

नोंगबानने कोई उत्तर नहीं दिया वह मौन रहा। 'नोंगबान ! इस युवकको तुम पहचानते हो ?" राजाने खम्बको ओर इशारा करके पूछा।

'जी हाँ राजन ! मैं इस युवकको जानता हूँ। आजके खेलमें उसने मेरा मुकाबिला किया है।'

"शाबश बेटा ! तुमने ठीक ही कहा है। वत्स ! यही राज व्यवहार है।" नोंगथोनने नोंगबानको तारिफ की।

राजाने एक ज्योतिषीको पास बुलाकर हुक्म दिया 'देखो इस युवकको ! उसका बंशज युरेनजम है और नाम खम्ब है। उसका *सलाइ खुमन है। आज उसको उपनाम देनेके इरादेसे मैंने तुमको बुलाया है, इसलिए ज्योतिषी ! तुम उसका एक शुभ उपनाम बता दो। ज्योतिषकी रायसे 'खुमन कांला निंगथौबा' यह उपनाम रखा गया।

महाराजके आज्ञानुसार खम्ब और नोंगबान दोनोंको महाराजके सम्मुख खड़ा किया गया। वे दोनों देखनेमें एकसे लगते

* सलाइ—एक प्रकारका बंश-विभाग

हैं; सम वयस्क है। दोनोंकी लम्बाई सात हाथ हैं। चेहरे गोल और बदन खूब मोटे ताजे हैं, मानो दो सिंह जङ्गलसे आकर महाराजके सम्मुख खड़े हों। देखनेमें अति सुन्दर हैं। उनके रूपको देखकर राजाने नोंगथोनसे फिर कहा 'दादा नोंग-थोन! यह खुमन बच्चा मेरे पास रहने दो।'

'यह सेवक राजव्यवहार नहीं जानता। वह असभ्य लड़का है। महाराजकी सेवामें रखने लायक नहीं है। थोड़े दिन मेरे घरमें रखकर राजव्यवहार सिखाऊँगा। इसके बाद आपकी सेवामें उपस्थित करूँगा।' नोंगथोनने कहा।

'नोंगथोन! तुम्हारे साथ कुछ दिन रखकर मेरे पास जरूर लाना।' राजाने फिर कहा।

चाओबने सविनय कहा 'राजन कल परसों 'चिङु थांगजि हाराओब' आरंभ होगा! इसके बारेमें एक राजाज्ञा……… .' महाराजने बीचमें ही नोंगथोनकी बात काटकर कहा 'ठीक है, प्रजाको सुना दो *'लैरोइहन्जब नोंगबान और नामोइजाम्ब, उन्हें फूल तोड़नेके लिए पहाड़ों पर भेजा जाय।'

"एक बात है राजन!"

"क्या बात है नोंगथोन?"

"नामोइजाम्बने महाराजकी सेवामें आखिरी निवेदन किया है कि फूल तोड़ना अनिवार्य है, पर वह बूढ़ा हो गया है; इसलिए पहाड़ोंपर चढ़कर फूल तोड़ना उससे नहीं हो सकेगा।

---

* लैरोइनजब=फुल तोड़नेका सरदार।

यदि उसके बदलेमें एक जवानको उसे लैरोइ-हनजब' का पद सौंपा जाय।" नोंगथोनने कहा।

"अच्छा, तुम्हारा दोस्त पुरेनब भी इस पद पर था। आज वह हम और आपके बीचमें नहीं है। लेकिन खम्ब आज जवान हो गया। इसलिए नामोइजाम्बकी प्रार्थना स्वीकार करके खम्बको 'लैरोइ-हनजब' का पद आजसे दे रहा हूँ।" उसके उपरान्त नोंगबानसे कहा 'खम्ब आजसे तुम्हारे मित्र है। तुम दोनों परस्पर आलिंगन करो।"

महाराजकी आज्ञा पाते ही दोनोंने आलिंगन किया और तभीसे एक दूसरेको मित्र बन गए।

राजाने कहा 'कल तुम दोनों पहाड़ोंपर चढ़कर फूल तोड़ो। परसों 'लाइहराओब' प्रारंभ होगा।

सांझका समय था, युवराज भी कुछ मुखियोंके साथ चैराप दरबारमें विराजमान हो रहे थे। वे कांगजौके संबंधमें तरह तरहको कल्पना सोच रहे थे इस वक्त नोंगथोन के साथ खम्ब इस दरबारमें आ पहुँचा। खम्बको बाहर खड़ा किया। नोंगथोन चैरापमें घुस गया। युवराजको सम्बोधन करके कहा "युवराज नमस्कार।" युवराज— नोंगथोन आए हैं'। यह कहकर अपना मुख दूसरी ओर मुड़ गया।

चिखुबा युबराजके मनका भाव समझकर नोंगथोनने प्रसन्नता पूर्वक फिर कहा 'सुनिए युवराज! एक प्रशंसनोय बात

कहनी है। युवराज—'मुझे मालूम है। वह बात मैं सुनना नहीं चाहता।" अब भी युवराजने नोंगथोनकी ओर नहीं देखा।

'यह कैसे हो सकता है, बिना सुने आप कैसे जान सकते हैं।"
"फिर भी मैं सुनना नहीं चाहता।"

"मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आप कांगजैकी खबर मुझे सुनाने आए हैं ?" चिंखुबने कहा।

नोंगथोनने जवाब दिया 'हाँ युवराज, मैं कांगजैकी खुश खबरी लेकर आया हूँ।'
'इसलिए मैं सुनना नहीं चाहता।'
'सुनना आवश्यक है, आवांग लौकाईने विजय पायी।'

नोंगथोनकी बात सुनकर चिंखुबा ठिठक गए और पूछने लगे। 'नोंगथोन, क्यों व्यंग करते हो ?'

व्यंगकी बात नहीं युवराज! यह सच्ची बात है।'

आपको मेरी बातों पर विश्वास न हो तो महाराजसे पूछिए और आपकी सुपुत्री राजकुमारी उसकी साक्षी है। 'स्वयं थोइबीने उस तमाशाको देखा है। नोंगबान पराजित हो गया।' यह बात सुनते ही युवराजको विश्वास हो गया और नोंगथोनकी तरफ देखकर कहा, यह बात है ? यह सच्ची बात है। कौन देव आज मेरे दलमें आकर खेल रहा था।'

'देव नहीं; वह आदमी मेरे साथ आ रहा है, उसको विजय माला पहनायी गई। वह युवराजके दलका है।'

'वाह ! वाह !! वह युवक कौन है ?"

इस समय खम्बने युवराजके आगे बढ़कर प्रणाम किया।
खम्बको युवराजने चकित दृष्टिसे देखकर कहा।
"दादा नोंगथोन! वह कौन है?"
"आपकी समझमें नहीं आया।"
"मैं समझ नहीं सका दादा, बताओ, वह पहलवान कौन है?"
"विचित्र बात है, राजा भी बूढ़े हैं फिर भी वे उसको पहचाना सकते हैं। आप क्यों नहीं समझते?"
"भूल तो भूल ही है, बताओ वह जवान कौन है?"
नोंगथोनने युबराजसे सब बिवरण कह सुनाया।

नोंगथोनका वचन सुनकर चिंखुबने कहा 'अरे! याद आयी, हाँ पहचान गया हूँ।
"आपने कैसे पहचाना?"

"मुझे मालूम है, उसकी बहन और मेरी बेटी थोइबीमें घनिष्ट मित्रता है। वह लड़का मेरी बेटी थोइबीकी सहेलीका भाई है न?"
"जी हाँ, वह खमनुका भाई है।'

'राजा खम्बको अपने दलके सरदार और नोंगबानको आपके दलके सरदारके रूपमें रखना चाहते है। इसमें आपकी क्या राय है।"

"नहीं, नहीं, मैं नहीं चाहता, महाराजके लिए पुराना नोंगबाम और मेरे लिए नया खम्ब ही ठीक है!"

नोंगथोनने फिर कहा 'एक और गुप्त बात है - नोंगबान आवांग लैकाईका लैरोइहनजब और खम्ब मखा लैकाईका लैरोइहनजब चुने गए हैं।'

यह सुनकर चिंखुबने कहा कि मुझे कोई आपत्ति नहीं है पर राजाके सामने चलकर यह विचार पेश किया जायगा।' यह कहकर नोंगथोन, युवराज और खम्ब तीनों महाराजकी सेवामें उपस्थित हुए और सब हाल कह सुनाया।

राजाने युवराजसे पूछा 'भाई, इसमें तुम क्यों सन्देह करते हो? नोंगबान तुम्हें प्रिय है न?'

युवराजने विनय पूर्वक कहा 'राजन! प्रेमकी बात दूसरी है। यहाँ तो मुझे खम्ब चाहिये।'

राजाने फिर आज्ञा दी 'कोई बात नहीं, आजसे खम्ब तुम्हारा और नोंगबान मेरा है।'

इसके बाद युवराज अपने महलमें लौट आए।

चाओब खम्बको लेकर अपने घर वापस गया। घर पहुंचते ही उसने बाहरसे पुकारा 'नोंगथोनबी, बाहर आओ। तुम्हारा पुत्र आ रहा है।' नोंगथोनबी बाहर निकली। उसको पति नोंगथोनने सब हाल कह सुनाया।

नोंगथोनबीने खम्बको खानेकी चीजें और कुछ अच्छे अच्छे कपड़े दिये। खम्ब, नोंगथोन और नोंगथोनबी दोनोंको नमस्कार करके विदा लेकर अपने घर चला गया।

दूसरी ओर चिंखुब युवराजने महलमें प्रवेश करके चिखु-राकपो और थोइबीको खम्बका सब हाल कह सुनाया। इस समय राजकुमारी थोइबीने कहा 'यह ठीक है. एक जवान आज कांगजैके खेलमें शामिल हुआ। वह कौन है ? मैं नहीं जानती।' यह कहकर राजकुमारी थोइबी बाहर चली गई।

खम्ब और खमनु रातको सोते सोते आपसमें बातें कर रहे थे। इतनेमें थोइबी और सेनुने घरमें प्रवेश किया। थोइबीने खम्बको कल फूल तोड़ते समय खाने पीनेकी अच्छी अच्छी चीजें उपहार दी। इसके बाद थोइबी और सेनु लौट गयीं।

× × ×   × × ×   × × ×

लौ हेकपा

(फूल तोड़ना)

राजकुमारीके जानेके उपरांत खमनुने खम्बको उपदेश दिया। भाई, मेरी बात सुनो। क्या क्या फूल तोड़ने हैं। इसके बारेमें तुम कुछ जानते हो ?

"बहन ! चिंता न करो। चिंङ्बको इच्छा है।"

"मैंने सुना है कि तुम और नोंगबान दोनोंके बीचमें द्वेषकी भावना है। इसलिए मेरे दिलमें संकोच है। किन्तु तुम्हें यह न भूलना चाहिये कि नोंगबान तुम्हारा मित्र है। दोस्तके प्रति अच्छा व्यवहार करनेमें ही तुम्हारा कल्याण होगा। तुम्हारा मित्र नोंगबान प्रतिवर्ष फूल तोड़ना है। इसलिए वह फूलके बारेमें तुमसे ज्यादा जानकारी रखता होगा। उससे पूछकर फूल तोड़ना चाहिए।

'जो हाँ मैं आपको आज्ञाका पालन करूँगा।' इसके बाद भाई बहिन सो गए।

सबेरा हो गया। खम्ब फूल तोड़नेके लिए तैयार हुआ। नोंगबानके मनमें नाना प्रकारकी भावना जाग उठीं, उन भावनाओंके बीचमें वह डुबता फिरता था। उसके मनमें खम्बके प्रति शत्रुताकी इच्छा प्रबल हो उठो। इसके बाद याओसु लौकाईमें रहनेवाला नोंगबान सरोंबुंगमें खम्बकी राह देख रहा था।

खम्ब भी अपनी बहनको प्रणाम करके वायुकोणकी तरफ चल दिया। जल्द ही सरोंगबुंग आ पहुँचा। नोंगबानको देखते ही खम्बने पुकारा "दोस्त! इंतजार कर रहे हो?"

नोंगबानने उत्तर दिया "क्यों इतनी देर कर दी। मेरे दोस्त! मैं कई घटांसे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"
"बुरा न मानो भाई! कुछ देर हो गयी"

"तुम नये हो, इसलिए मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा था। नहीं तो, मैं कभीका चला जाता और सुनो, एक बात और है।"
"बताओ क्या बात है।"

"बहुत साल पहलेकी बात है कि मेरे पिताजी और तुम्हारे पिताजी आजकी तरह फूल तोड़ने गए थे। उस समय तुम्हारे पिताजी मेरे पिताजीकी गठरी ले जाया करते थे। तुमने इस बातको नहीं माना तो भी कोई बात नहीं, फिर भी मैं पुराणकी बात तुम्हें सुनाता हूँ कि खुमन अङोमकी गठरी ले जानेका पेशा करते थे। तुम तो मेरे दोस्त हो, इसलिए मैं तुमसे क्या कहूँ। इसलिए आज मैंने तुम्हारा इन्तजार किया है।' इस तरहकी झूठी बात नोंगबानने कही।

नोंगबानकी झूठी बातें सुनकर खम्ब क्षणभर चकित रहा और बोला 'यह पुरानी बात है, मेरे पिताजी तुम्हारे पिताजीके सामान ले गया होंगे। पर आधुनिक युगमें वह प्रथा अप्रचलित है। मुझे यह नियम भी मालूम नहीं है।'

नोंगबानने गरजकर कहा 'मैंने नियमके अनुसार कहा है। तुम गठरी उठाओगे या नहीं।'

'मित्रके प्रति मित्र जैसा व्यवहार, करो। यह असम्भव है। मित्रताकी बात नहीं है।'

"क्यों असम्भव है? यह राजाज्ञा है।"

यह राजाज्ञा क्यों हो सकता है, क्योंकि हम दोनों अपने अपने पाना (दल) के सरदार हैं। अवांग लैकाई दाहिना भाग है और मखा लैकाई बायें भाग है। बायें भागके सामानको दहिना भाग क्यों ले जायगा?' खम्बने कहा।

'एक गुप्त बात और है वह मैं सुनाता हूँ। युवराजका पाना महाराजके पानाके अधीन है। इसलिए महाराजके पानाको यह अधिकार है वह अपना सामान युवराजके पानाको ले जानेके लिए कहे क्योंकि महाराजका पाना पुरुष है और युवराजका पाना स्त्री। स्त्रीको पुरुषका सामान ले जाना चाहिए।' नोंगबानने कहा।

नोंगबानका कटुवचन खम्बके दिलके चुभ गया। खम्बने गरजकर कहा 'तर्क वितर्ककी बात छोड़ दो यह छल कपटकी बात है" यह कहते हुए खम्ब नोंगबानको छोड़कर आगे बढ़ गया। वह नोंगबानको मारना चाहता था, फिर भी मुँह मोड़े बिना सोचा चला गया।

सहसा नोंगबानने दौड़कर वह गठरी खम्बके दाहिने स्कन्धे पर डाल दी और वह बोला 'ले जाओ, ले जाओ।"

खम्बने क्रोधके मारे उस गठरीको बहुत दूर फेंक दिया। वह गठरी खुल गई। हठात् खम्बने झपटकर नोंगबानके बाहु मूलको पकड़कर खींचा और खींचते खींचते कहा महाराजसे यह पूछना पड़ेगा।' नोंगबानको खम्बने बीस-तीस हाथोंके प्राय: खींचा। उस वक्त नोंगबानने कहा 'रुक जाओ! रुक जाओ तुमसे एक बात पूछता हुँ।' खम्ब नोंगबानको खींचता ही रहा। नोंगबानने बार बार कहा 'सुनो हम दोनों महाराजके पास जाएँगे तो समय बीत जायगा। फूल तोड़नेका अवसर नहीं मिलेगा। इसलिए आज विचारकी बात छोड़ दो, कल फैसला हो जायगा।' यह बात सुनकर खम्बने नोंगबानको छोड़ दिया।

"मित्र, तुम ले जाना नहीं चाहते हो तो मुझे वापस कर दो सामान फेंकनेसे क्या लाभ और मुझे इस तरह क्यों खींच रहे हो?" नोंगबानने कहा। यह कहते हुए नोंगबानने उस गठरीको उठाया।

नोंगबानकी दशाको देखकर सहृदय खम्ब नम्र स्वरसे कहने लगा 'बुरा न मानो भाई!' यह कहकर खम्ब फूल तोड़नेके लिए शीघ्र थांगजिं गहाड़पर चढ़ गया। चढ़ते चढ़ते पहाड़के दक्षिण भाग तक पहुँच गया। वहाँ नाना प्रकारके फूल खिल रहे थे।

नोंगबान भी जल्दसे जल्द पहाड़ पर चढ़ आया। थोड़ी देरमें वह खम्बके आगे बढ़ गया, वहाँ बिबिध फूलोंको देखते ही खम्ब चिल्ला उठा "वाह वाह! अति सुन्दर है।"

"फूल खिलनेका मौसम होता है फिर सुन्दर क्यों नहीं होगा ?" नोंगबानने दूरसे जाबाब दिया।

'यहाँ तो बहुत फूल खिले हुए हैं। पाँच सौ आदमी मिलकर तोड़े तो भी सभी फूल तोड़ नहीं सकेंगे। इसीलिए यहाँसे ही फूल तोड़ना चाहिए।' ऐसा खम्बने कहा।

'यह फूलवारी मेरे पिताजीने बनवायी है। यह अङ्गोमका है। इस साल तो बहुत कम फूल खिले हैं। पिछले साल बहुत खिले थे।" नोंगबानने उत्तर दिया।

यह बात सुनते ही खम्ब ठीठक गया और उसने पूछा 'आज तो मैं भी तुम्हारे इस फूलवारीसे ही फूल तोड़ूँगा। इसलिए तुम पहले अच्छे अच्छे फूलोंको तोड़ लो। उसके बाद बचे हुए फूल मैं तोड़ूँगा।"

'मित्र! यह नहीं हो सकता क्योंकि यहाँके फूलोंको राजा अच्छी तरह जानते हैं। इन फूलोंके नाम भी मेरे ही नामके अनुसार मेरे पिताजीने जैसे 'नोंगबान कोंगयांगलै' रखा है। इसलिये तोड़नेसे कोई लाभ नहीं होगा।"

नोंगबानकी बात सुनकर खम्बके दुःखकी सीमा नहीं रही। खम्बको घोर जंगलमें भेजने और बाघके मुँहमें डालनेके लिए नोंगबानने फिर कहा 'मित्र! चिन्ता न करो एक उपाय है। तुम्हारे पिताजीने भी एक सुन्दर फूलवारी बनवायी थी। वहाँसे तुम खुशी से फूल तोड़ो।"

यह बात सुनते ही खम्ब आनन्दित हो गया और बोला 'कहाँ है, मित्र बताओ।'

वह फूलवारी ऊंचे शिखर पर है। एक पहाड़की चोटी पर संकेत करते हुए नोंगबानने कहा।

चारों ओर ऊँचे ऊँचे पहाड़ ऊबड़ खाबर धरती घने वृक्ष, काँटे की झाड़ियाँ और कंकड़ पत्थर बिखरे हुए थे। कहीं मनुष्य का नामो निशान नहीं था। बीहड़ जंगल, बीहड़ पहाड़। सूरज बादलोंसे ढक गया था। केवल उसका धुंधलासा प्रकाश पड़ रहा था। इस धुंधले प्रकाशमें बड़े बड़े पत्थर, बड़े बड़े पेड़ ऐसे मालूम होते हैं मानो राक्षस खड़े हों।

सत्यवादी खम्ब अपने दोस्तकी बातें मानकर निसंकोच थांगजिं पहाड़की चोटी पर चढ़ गया। वह एक छोटी-सी पग-दण्डीका चिह्न देखकर उसपर धीरे धीरे पाँव रखने लगा। थोड़ी दूर जानेके बाद पगदण्डीका निशान गायब हो गया। खम्ब निराश हो गया। अन्तमें अपने स्वर्गीय पिताको सम्बोधित करके विलाप करने लगा 'हे पिताजी कहाँ है तुम्हारी फूलवारी! तुम प्रबल हो मैं दुर्बल हूं।' यह कहकर खम्ब चारों ओर देखने लगा। अन्तमें उसने देखा कि एक बुढ़िया पहाड़ पर चढ़ती जा रही थी। उसके पाँव छिल गए थे। फिर भी उसके पाँव नहीं रुक रहे थे। वह बढ़ती ही जा रही थी। दूरके ऊंचे ऊँचे पहाड़की चोटी पर खम्ब पहुँचना चाहता था। बुढ़ियाको

देखते ही खम्ब हैरान हो गया कि वह नारी देवी है या मानव है। खम्बके मनमें सन्देह हुआ।

अपने सन्देहको दूर करनेके लिए खम्बने पुकारा "हे जाने वाली माँ! मैं रास्ता भूल गया। यह रास्ता ठीक है?"

बुढ़ियाने कहा "हाँ ठीक है बेटा!"

"माँ तुम्हारा निवास-स्थान कहाँ है और तुम कहाँ जा रही हो?"

'मैं मानतक पहाड़के गाँवकी निवासी हूँ। मैं अब मोइरांग जा रही हूँ। तुम कहाँसे आये हो? अब कहाँ जा रहे हो? मेरे बच्चे!"

"मैं भी मोइरांगका बच्चा हूँ।

"अच्छा, तुम मुझे मत छोड़ो, मेरे साथ तुम भी मोइरांग वापस चलो।"

"मेरी एक बात सुनो माँ! मैं फूल तोड़नेके लिए यहाँ आया हूँ। मैंने सुना हूँ कि प्राचीन कालमें मेरे पिताजी पुरेनबने यहाँ कहीं एक फूलवारी बनवा रखी है। वह फूलवारी कहाँ है? मुझे मालूम नहीं। वहाँ फूलवारी कहाँ है, तुम मेहरबानी करके बता दो। वह फूलवारी कहाँ है, तुम्हें जरूर मालूम हुई होगी।"

बुढ़ियाने कहा 'अरे! तुम पुरेनबके बच्चे हो! बहुत प्रिय लगते हैं। तुम्हारे पिताजीको मैं जानती हूँ और वह फूलवारी कहाँ है वह भी जानती हूँ।"

बुढ़ियाकी दया भरी वाणी सुनकर खम्ब बहुत खुश हो गया। उसके आश्चर्यकी सीमा न रही और कदम मिलाकर बुढ़ियाके

साथ चलने लगा। बुढ़िया खम्बके आगे चलते चलते एक घने जङ्गलमें पहुंच गई। खम्ब भी बुढ़ियाके पीछे पीछे जा रहा था। इस वक्त बुढ़ियाने संकेत करके कहा 'देख लो बेटा! इस घोर जङ्गलके अन्दर एक फूलवारी है। आ जाओ, यहाँ नाना प्रकारके फूल मिलेंगे।" यह कहकर बुढ़िया आँखोंसे ओझल हो गई।

खम्ब घोर जङ्गलमें प्रवेश कर फूल तोड़नेके लिए उद्यत हुआ, पर व्यर्थ हो गया। दुख सागरमें खम्ब पड़ गया। खम्ब चारों ओर घूमकर देखने लगा और बार बार पुकारा 'हे मानतककी माँ! तुम कहाँ हो? लेकिन कोई उत्तर न मिला। इतनेमें कहींसे एक भयंकर आवाज आई। खम्बने चारों ओर देखकर कहा कैसी आवाज है, यह तो तूफान आनेकी आवाज है।"

एक बड़े पेड़के नीचे खम्ब बैठ रहा। थोड़ी देरमें हवा थम गई। थोड़ी देरके बाद उसने उस पेड़के ऊपर देखा तो वह चकित हो गया। उस पेड़ पर किसम किसमके फूल दिखाई पड़े। हठात खिले हुए फूल फिर बिलीन हो गए। फूलोंका गन्धमात्र आया खुशबू पाते ही खम्ब खोजने लगा और संयोगसे उन फूलोंको पेड़पर खिलते देखा।

वह पेड़ बहुत बड़ा था। उसपर चढ़ना बहुत मुश्किल है। खम्बने सोचा कि पेड़ बहुत चौड़ा-लम्बा है तो भी मैं जरूर चढ़ूंगा। इस ख्यालसे खम्बने अपनी गठरीको पासके एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया। पेड़ पर चढ़नेको तैयार हो गया। एक थांगजौ (तलवार) बगलमें बाँध लिया। उस पेड़को तीनवा

नमस्कार करके वह बोला 'हे पेड़! कृपा करके मुझे अपने ऊपर चढ़ने दें।" यह कहकर खम्ब पेड़ पर चढ़ गया। इस पेड़के बीच तक चढ़कर उसने नीचेकी तरफ देखा तो वह ठिठक गया; क्योंकि वहाँ पेड़के तले वही बुढ़िया बैठी थी। उस समय खम्बने ऊपरसे कहा 'अरे माँ! तुम कहाँ गयी थी?' बुढ़ियाने नीचे जवाब दिया 'हे वत्स! मैं पानी पीनेके लिए पहाड़के नीचे गई थी। अभी मैं तुम्हारे लिए फल-मूल लाई हूँ। यह फल-मूल इस पेड़के पास रखा है। तुम पेड़से उतरनेके बाद खाओ।'

खम्ब पेड़की चरम चोटी तक पहुंच गया। नाना प्रकारके फूल खोंगुमेलै, एरुम लै, लैशंगखिकबाइब, क्वाकलै और मेलै लैरना नोंगजुमपान आदि तोड़ा। बुढ़ियाने नीचेसे कहा 'वत्स! ये फूल मेरे आंचलमें गिरा दो।'

खम्बने सब फूलोंको नीचे गिरा दिया। आखिर खम्ब ऊपरसे उतरा तो देखा कि बुढ़िया फिर वहाँ नहीं है। वह बुढ़िया वहाँसे बिलीन हो गई। इससे खम्बको आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि यह बुढ़िया पहाड़ी की नहीं वह सक्षात थांगजिगलैमा (थांगजिगकी पत्नी) है।

खम्बने एक बाँस काट दिया और उससे एक टोकरी बनाई। उस टोकरीमें बिविध प्रकारके फूलोंको यथास्थान अलग अलग रख दिया। उसके बाद खम्ब गठरी और टोकरी लेकर अपने घर लौट आया

यह देवी थांगजिं लैमा लाइरेम्बी है। खम्बको रक्षा करनेके लिए थांगजिं देवताने भेजा। उस देवीने खम्बकी हालत थांगजिंको कह सुनाई।

× × ×   × × ×   × × ×

पर्वत शिखरसे खम्बने नीचे तराईकी ओर देखा तो केगे मोइरांगमें छोटे छोटे ग्राम, छोटे छोटे कुटीर और सुन्दर सुन्दर मुहल्ले फैले हुए हैं।

सामने फैली हुई खेतीको खम्ब एकतक देखने लगा। कितना मनोरम दृश्य है। उस दृश्यको देखते देखते वह ऊपरसे नीचेकी तरफ उतरा। पथमें गठरी खोलकर नाश्ता किया। इसके बाद वह फिर चलने लगा।

दूसरी ओर नोंगबानने सोचा 'खम्बको कहाँसे फूल मिलेगा? फूल न मिले तो अभी जरूर लौट आएगा। इसलिए मैं यहाँ पर प्रतीक्षा करूँगा।' यह सोचकर नोंगबान रास्तेमें खम्बका इन्तजार करता रहा। रास्तेके ईर्द-गिर्दके फूलोंको नोंगबानने तोड़ा और मचल डाला।

इस समय खम्ब प्रेम गीत गाते हुए जा रहा था। उस गीतमें खम्बने बार बार थोइबीको सम्बोधन किया। वह लोग गीत सुनकर नोंगबानने सोचा कि युवराजके पास पहुँचकर थोइबीसे सम्बन्धित प्रेमगीत गानेके अपराधमें खम्बको सजा दिलायी जायगी।

संगत्रौ लोकसे खम्बने नोंगबानको देखा। वह अपने दिलमें सोचने लगा। यह मित्र नोंगबान है। कहीं मेरा गात उसने सुन लिया हो ता क्या होगा? खम्बने नोंगबानको देखते ही पुकारा 'अरे मित्र!' नोंगबानने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर खम्बने कहा 'भाई क्या कर रहे हो?' 'तुम्हारा बतायो हुई फूल वारो मुझे मिला। तुम नाराज क्यों होते हो? तुमको देरतक मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ी है. उसके लिए तुम मुझे माफ कर दो" "क्यों नाराज हूँगा। तुम्हारा गाना मुझे अच्छा नहीं लगता"

'तुम्हें क्यों अच्छा लगेगा भाई अपना अपना डफली अपना अपना राग। यह गीत मेरे उस्तादका सिखाया हुआ है। इस लिए क्यों नाराज होते हो?"

खम्बकी इस बातको सुनकर नोंगबानने कहा "यहाँ वैसा गीत गाना उचित नहीं। घोर जङ्गलमें क्यों राजाकुमारीका नाम बार बार लेकर गाते हो? भाई तुम पागल हो गए हो क्या?"

'राजकुमारीका नाम लेकर मैं कैसे गा सकता हूँ। मैंने कभी 'थोइबा' का नाम लेकर गाना नहीं गया। मैं तो गा रहा था, 'तोइबी' का नाम लेकर।'

खम्बकी बात सुनकर नोंगबान खिल खिलाकर हँसने लगा और कहा 'ठीक है, भाई, कितना सुन्दर है 'तोइबी' और 'थोइबी'। आज मेरे दिलका सब बातें तुम्हें बताऊंगा।"

"अच्छा, ठीकसे बताओ मेरे दोस्त। तुम नाराज मत होओ भाई! थोइबी मेरी प्रेमिका है और मैं उसको प्रेम करता

हूँ। इसलिए मैंने तुम्हारी तोइबीको थोइबी समझ और तुम्हें भला बुरा कहा।" इसमें नाराजकी बात क्या है? तुमने अपने दिलकी सच्ची बातें मुझे सुना दीं। मित्र! तुम सौभाग्यवान हो" खम्बने कहा।

"वाह वाह भाई जी, मेरे लिए थोइबी, तुम्हारे लिए तोइबी। एक दिन ये युवतियाँ सहेली बनेंगी।" नोंगबानने कहा।

'सुनो भाई नोंगबान, एक बात और कहूँगा। यह 'तोइबी' तुम्हारे पास कभी कभी जाती है, यह मैंने सुना! होशियार रहना, नहीं तो तुम्हारे प्राण पखेरू उड़ जायगा।"

"मित्र, तुम तोइबीके पति हो, मेरे लिए थोइबी है।" नोंगबानने फिर कहा।

खम्बने फिर उत्तर दिया 'दोस्त तुम थोइबीके पति हो।" खम्बकी बात सुनकर नोंगबानने उसकी तारिफ की। नोंगबानने मुस्कराकर कहा 'भाई, तुम क्या क्या फूल लाये हो? जरा देखूँ।'

"देखओ भाई, ये नाना प्रकारके पुष्प है।" नोंगबानने सब फूलोंको देखकर कहा तुम्हारे फूल तो सब जगह खिलते हैं।" बातचीत करते करते दोनों पर्वतके नीचे आ पहुँचे।

पहाड़ीके नीचे एक छोटी सी नदी है, इसका नाम 'लाइज तुरेल है।' लाइज नदीके एक सुन्दर घाटमें खम्ब और नोंगबान नाश्तेके लिए ठहरे। नोंगबानने सोचा कि 'खम्ब गरीब आदमी है। उसकी बहनने उसके लिए बासी खाना और मामूली वस्तुएँ

दी होंगी।' इस कारणसे उसने सोचा कि अलग अलग खानेसे ही ठीक रहेगा और बोला "अरे दोस्त! यह घाट मेरा है। तुम्हारे लिए दक्षिण भागमें है। तुम उधर जाओ।'

खम्बने उत्तर दिया "क्या बात है, इस घाटमें काफी जगह है। यहाँ पर हम दोनों बैठकर आसानीसे कर सकते हैं। तुम इसमें आपत्ति क्यों करते हो?"

यह बात सुनते ही नोंगबान घबरा गया और सोचा यह ठीक बात है पर उसका खाना मामूली है। मेरा खाना उत्तम है। यदि एक स्थानमें भोजन करें तो मेरा सब खाना हजम कर जाएगा। इस ख्यालसे नोंगबानने फिर कहा। 'सुनो भाई! मुझे तुम्हारे साथ भोजन करनेमें कोई आपत्ति नहीं, पर एक बात है, यही पुराणकी कथा है। देवी देवताके लिए फूल तोड़ते समय एक घाटमें साथ साथ भोजन करना बहुत पाप है। सब कार्य निष्फल हो जायगा। इस हेतु मैं कहता हूं, कि दक्षिणमें पुरेनबका एक सुन्दर घाट है। वहाँ भोजन करना तुम्हारे लिए कल्याण होगा। यह ठीक है या नहीं।"

नोंगबानकी बाणी पर खम्बको विश्वास हो गया। खम्ब दक्षिणकी ओर चला गया थोड़ी दूर चलनेके बाद एक सुन्दर घाट मिला। यह घाट कितना सुन्दर है, किसीने बनाया होगा? 'यह सोचकर खम्बने चारो ओरसे देखा, वहाँ एक गोलाकार चट्टान दिखाई पड़ी। इस बड़े पत्थरको देखते ही अपने पिताकी स्मृति जाग उठी। उसने पत्थरको तीन बार छूकर नमस्कार किया

और अपनी गठरी उसपर रख दी। हाथ पाँव धोकर खाना खानेके लिए उसने गठरीको गाँठको खोलना चाहा पर गाँठ खोल नहीं सका।

खम्बने नाराज होकर वह गठरी उठाकर पत्थर पर फेंक दिया, हठात वह गठरी खुल गई। उसमें नाना प्रकारकी तरकारियाँ थीं। कैसा सुगन्ध आ रहा है हवाने उन सुगन्धोंको ले जाकर नोंगबानकी नाक तक पहुँचाया। खुशबू पाते ही नोंगबानको सन्देह हुआ।

"कहाँसे आया यह सुगन्ध।" नोंगबानने सोचा।

"यह सुगन्ध तो कहींसे नहीं है, खम्बके पाससे ही आ रहा है।" नोंगबान इधर उधर सूंघते सूंघते कुत्तेको तरह खम्बको खोजने लगा। आखिर वह स्थान मिला और बोला 'दोस्त भोजन कर चुके हैं? समय तो काफी है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ; बहनने क्या क्या तरकारियाँ पकायीं, खाओ खाओ।"

"मुझ गरीबको क्या अच्छा खाना मिलेगा। जो कुछ रुखा सूखा बहनने बाँध दिया हूँ।"

खम्बके भोजनको देखकर नोंगबानको भूख लगी। वह खाना देख रहा था। खम्ब खा रहा था। वह आधा भोजन खा चुका है। इस समय नोंगबानने देखा कि खम्बका भोजन मामूली नहीं है, उत्तम है। इसलिए उसने बहुत जोरसे कहा 'क्या बात है दोस्त, मुझे साथ खाने तक नहीं बुलाया। तुम

मुझे क्यों नहीं खिलाते हो ? तुम्हारे पिताजीके साथ मेरे पिताजी भी साथ साथ खाया करते थे। उसी तरह तुम और हम भी साथ खाया करें ।'

खम्बने हँसकर कहा 'अरे मित्र! मुझे माफ करें। अब क्या होगा? यह खाना तो जूठा हो गया।'

'प्रेम पूर्वक खाना और खिलानेमें जूठनका प्रश्नही हो नहीं उठता।' नोंगबानने फिर कहा।

"ऐसी बात है तो आओ भाई, भोजन कर लो।" खम्बने उत्तर दिया।

उसके बाद नोंगबान खम्बके साथ भोजन करने लगा। खम्बका खाना समाप्त हो गया फिर नोंगबानने जूठनको खाना प्रारंभ किया। भोजन करते हुए नोंगबानने सोचा कि 'यह सामान्य नहीं यह तो राजा-रानिका भोजन है। स्वयं मैंने भी इस तरहका भोजन कभी नहीं खाया। खम्बके लिए इस तरहका भोजन प्राप्त करना असंभव है।" यह सोचकर नोंगबानने कहा "मित्र, तुमको यह खाना कहांसे मिला? ठीकसे बताओ।"

खम्बने उत्तर दिया 'कल केगे मुहल्लेको नारियोंका महा-भोजन था। मेरी बहनके लिए दिया गया अंश मैं साथ ले आया हूँ।

खम्बको बातोंपर नोंगबानको विश्वास हो गया। फिर बोला 'ठीक है, मैं निङ्‌थोऊकपसे जरूर पूछूंगा।"

"पूछो भाई।" खम्बने जवाब दिया।

इन बातोंको छोड़ दो, अब मैं तुम्हारा अतिथि हूँ। इस लिए अतिथिकी दक्षिणा दे दो।' नोंगबानने चलाकीसे कहा।

खम्ब हँस पड़ा और उसने कहा "मेरे पास पैसा नहीं, इसके बदलमें एक तांबूल ले लो।" यह कहकर खम्बने नोंगबानको एक तांबूल खिला दिया।

नोंगबानने तांबूल लेकर कहा 'यह तांबूल बहुत सुन्दर है।" "यह पान तो मिठा नहीं है।' खम्बने उत्तर दिया।

यह तांबूल राजकुमारी थोइबीने विशेषकर अपने हाथों से तैयार किया है। पर यह पान दुष्ट नोंगबानके लिए बिधिने लिखा है। नोंगबानने खम्बसे फिर पूछा बताओ भाई यह अमूल्य तांबूल गरीब घरका नहीं हो सकता। यह तांबूल राजा और महाराजके लिए है। तुम कहाँसे लाये हो?"

'ठीक बात है राजकुमारी मेरी बहनकी सहेली है। थोइबीने उसको दिया है। यह तांबूल बहनने फिर मुझे दिया है।"

"राजकुमारी थोइबी हो अङोम वंशकी उचित वधु है।" नोंगबानने मुस्कराकर कहा।

इसके बाद नोंगबानने खम्बको एक तांबूल दे दिया। दोनों अपने अपने घर जाने लगे।

खम्बने घर पहुँचते ही फूलकी टोकरी बहनके सामने रख दी और कहा 'देखो बहन! ये फूल ठीक हैं या नहीं।"

खम्नुने कहा 'राजकुमारी थोइबीने कहा कि जब तक मैं न आऊँ तब तक फूल कभी नहीं खोलना। यदि देखोगे तो पाप

होगा इसलिए ये फूल थोइबीके सामने ही खोलूँगी।" खमनुकी बात खम्बने मान ली। दिन भर सफर करनेके कारण खम्ब काफी थक गया था। अतः वह अपनी पलंगपर जाकर विश्राम करने लगा। ठीक समय पर थोइबी सेनुके साथ आ पहुंची।

"आइये राजकुमारी, आरामके लिए एक भी सुयोग्य आसन नहीं है।" यह कहकर खमनुने एक मामूली आसन बिछाया। राजकुमारी अपना घर समझकर उस आसन पर बैठ गयी और उसने कहा 'राज वैभव उपयुक्त सोफेपर बैठनेकी अपेक्षा इस चताईपर बैठना मुझे अधिक अच्छा लगता है। यहाँ मुझे अधिक अच्छा लगता है। यहाँ मुझे काफी आराम मिलता है, सखि।"

इस वक्त खम्ब चारपाईपर विश्राम करता था। उसको सेनु और थोइबीने देखा और कहा 'थक गए होंगे, आराम कीजिए।' सेनुने फिर कहा "फूल कहाँ है?"

खमनुने घरके कमरेमें प्रवेश किया और फूलकी टोकरी लाकर थोइबीके समीप रखी।

सेनुने क्वाक्ली फूल उठाकर थोइबीको दे दिया। थोइबीने कहा यह फूल मामूली है, नोंगबानके आगे कैसे दिखाऊँगी।'

यह कहकर थोइबी सेनुके साथ बाहर निकली। इस समय खमनु भी पानी भरनेके लिए गयी थी। खम्बने सब हाल सुन कर कहा 'जाइए राजकुमारी, नोंगबानके पास गुलदस्ता बनाइए। वहाँसे जाना अच्छा होगा।"

'यही बात सुनते ही थोइबीने कहा सेनु! क्या बात है, मैं खुद सब फूल देखूँगी।' थोइबी घरमें घुस गई और स्वयं उस फूलका टोकराको निकालकर देखा। उसने देखा कि किस्म किस्मके सुन्दर फूल रखे हुए हैं जैसे खोंगुनमेलै एरुमलै लैरांग आदि। सब फूलोंको देखते ही थोइबीने सेनुको गाली दी। "कुरूप दासी क्यों मुझे धोखा देते हो?"

इस दशाको देखकर खम्बने शय्या पर लेतते हुए कहा जाइए राजकुमारी, नोंगबान तुम्हारा राह देखते रहे होंगे। जाइए! जाइए!'

थोइबी आग बबूला हो गई और उसने नोंगबानको बदनाम दिया। थोड़ा देर तक मौन रही और शांत भावसे कहने लगी 'मेरा अपराध क्षमा कीजिए'

खम्बने थोइबीको फूल तोड़नेका विवरण सब कह सुनाया, फिर कहा 'होशियार हो जाओ, राजकुमारी, नोंगबान बहुत धूर्त है। खानेके बारेमें उसने पूछा। उस वक्त मैंने झूठ कहा कि कल कंग लैकाईका नारियोंने महा भोज किया। इसलिये तुम निङोल्लाकपको सब बात समझाओ, नहीं तो गोलमाल होगा। नोंगबान बड़ा धूर्त है। अभी क्या उपाय है?"
थोइबीने आदर पूर्वक उत्तर दिया "मैं जरूर कहूँगी, घबराओ मत।"

खम्बसे विदा लेकर थोइबी सेनुके साथ निङोल्लाकपके पास चली गई और उसे सब गुप्त बातें समझायीं। इसके बाद थोइबी और सेनु राजबाड़ामें लौट गयीं।

थोड़ी देरके बाद नोंगबान निङोल्लाकपके पास आया और पूछा - 'निङोल्लाकप, तुम ठीकसे बताओ, नहीं तो राजदण्ड मिलेगा।'
"क्या बात है? सेलुंगब!"

"क्या यह ठीक है कि कल तुम्हारे अवांग लैकाईको सभी नारियोंने महा भोज किया था या नहीं?"
"हाँ महा भोज था।"
"क्या क्या तरकारियाँ थीं?"
"मुझे मालूम नहीं"
"क्यों!"

"मैं तरकारीका मैनेजर नहीं हूँ, नारियोंका सरदार हूँ।" नोंगबानने कहा "ठीकसे बताओ, क्या क्या तरकारियाँ थीं?" "मैं युवराजके सामने बताऊँगा, तुम्हारे सामने नहीं।" नोंगबानको उपाय नहीं मिला, वह चला गया। सांझका समय था।

× × × × × × × × ×

फी वाइबा

(कपड़ा उधार लेना)

कल थांगजि हाराओब शुरू हो जायगा। सन्ध्याके समय नोंगबानने बेश-भूषा और अपनी आवाज बदलकर गाँवभरकी गली गलीमें इधर-उधर जाकर यह घोषित किया :—

"कल मोइरांग थांगजिं हाराओब शुरू हो जायगा। सब लोग अपने अपने बेश-भूषा और अन्यान्य आभूषण पहनेंगे। केगे मोइरांगको गलियोंसे थांगजिं मन्दिर तक जानेवालोंको अपने गहने और आभूषण सुन्दर ढंगसे पहने चाहिए। नहीं तो महाराजका कठोर दण्ड मिलेगा। जिसके पास आभूषण नहीं है, वह दूसरोंसे उधार नहीं ले सकता। जिसके पास ज्यादा आभूषण होंगे वह भी दूसरेको नहीं दे सकता। यही राजाकी आज्ञा है। सुनो सुनो नगरवासियो !"

जब लकड़ी काटनेके लिए खमनु घरसे निकली तब उसने यह घोषणा सुनी। दिलमें सोचा क्या समाचार है। वह घबराई सहसा खमनुने बहुत जोरसे कहा 'ठहरिये राजाके आदमी ! घोषणा फिरसे सुनाइये, मेरा कान ऊँचा सुनता है।"

नोंगबानने कहा 'क्यों नहीं सुना ? मैं बार बार कह नहीं सकता।' नोंगबान तुरन्त ओझल हो गया।

खम्बने भी यह आवाज़ घर पर सुनी थी और मन ही मन कहने लगा कि राजाकी आज्ञा! यह असम्भव है? यह सोचकर वह मन मसोस रहा था। खमनु भी घरमें शीघ्र लौट आई और चिन्तित स्वरसे उसने कहा "भाई! सुना है?"

"सुना है बहन!"

'यह निराला है, दीन दुखियोंको सहायताके लिए संसारमें कोई नहीं।" खमनुने कहा

नियतिका नियम है बहन! थांगजिकी लीला है।' कोई बात नहीं। खम्बने शान्तवना देते हुए कहा।

"क्या उपाय है भाई? कपड़ोंका उधार कहाँसे मिलेगा? हमारे पास अच्छे आभूषण नहीं।"

"विश्वास न करो बहन, यह राजाज्ञा नहीं, कोई खतरनाक आदमी झूठ मूठ घोषित करता है। यदि राजाज्ञा हो तो दादा नोंगथोन और फैरोइजाम्बने हमारे लिए बहस की होगी"

खमनुने कहा 'अभी सोचनेका समय नहीं भाई! समय बीतता आ रहा है। सब व्यर्थ है, थांगराकपा मेरे पिताजीके घनिष्ट मित्र है। उनके पास जाकर सुयोग्य गहने उधार देना अच्छा होगा।"

बहनकी वाणी सुनकर खम्बने कहा मैं जाना नहीं चाहता क्योंकि मैंने सुना है कि थांगराकपा बहुत कंजूस है।"

'मैं जानती हूँ, जाना ही पड़ेगा। थांगराकपा मेरे पिताजीके पुराने मित्र हैं। वे मुझे अच्छा पहचानते हैं।"

बहनकी बातें खम्बने मानीं और कहा 'बस! बहन अच्छा है, पर रातके अन्तिम प्रहरमें जाना अच्छा होगा। गाँव भरमें नोंगबानके अनेकानेक जासूस घूम रहे होंगे हमें देखे तो गोल-माल होगा।" इसके बाद थोड़ी देर तक दोनों एक एक पालंग पर सो गए। खमनुकी अचानक नींद टूटी। मध्य रात्रिका समय था। खमनु खम्बके साथ थांगराकपके घरमें आयी।

दोनोंने प्रांगणमें प्रवेश किया। इस बेलामें खमनुने कहा भाई अब मध्य रात्रि है। कहीं पुरुषकी आवाज सुनते तो मालिक घबरायेगा। इसलिए मैं आवाज देता हू।'

यह कहकर खमनुने क्षण स्वरसे पुकारा 'मेरे पिताजी! सुनिए जाग उठिए'

घरके अन्दर एक दीपक टिमटिमा हुआ प्रकाश देता रहा था। थांगराकपा और थांगराकपी दोनोंने वही आवाज सुनी। आवाज सुनते ही थांगराकपने अपनी पत्नीने कहा "कौन है, यही आवाज नारी-सी मालूम है।"

स्त्रीने उत्तर दिया 'जी हाँ, आवाज तो युवतिकी है।" भीतरसे थांगराकपने फिर पूछा तुम कौन हो?"

"मैं गरीब स्त्री हूं, दरवाज खोलिए पिताजी।" खमनुने परिचय दिया। खमनुको पहचाननेके बाद दरवाज खो दिया गया है। खमनु अन्दर घुस गई और प्रणाम किया। इस वक्त थांगराकपीने कहा 'खमनु! मैंने सुना है, तुम गाँवके द्वार द्वार पर जाकर अपने भाईके पालन-पोषणके लिए काम करती रहती

हो। एक दिन भी हमारे पास क्यों नहीं आई। बैठ जाओ मेरी पुत्री! किस कार्यके लिए आधी रातको आए हो?"

खम्ब बाहर खड़ा था, इस समय खमनुने पुकारा 'अन्दर आ जाओ भाई, यह घर अपना ही समझो।" खम्बने कहा—'बहन! अच्छा मैं आ रहा हूँ।'

खम्बकी बात सुनकर थांगराकपी बाहर निकली और खम्बका हाथ पकड़ कर उसे अन्दर लाई। 'आ आजो, मेरा बेटा क्यों संकोच करते हो।' थांगराकपा और थांगराकपीके दर्शन पाकर खम्बका मन आनन्दित हो उठा।

थांगराकपने कहा 'तुम कौन हो, वत्स! मैं भूल गया हूँ।' थांगराकपीने फौरन उत्तर दिया 'ये तुम्हारे दोस्त पुरेनबके बच्चे हैं—खमनु और खम्ब।'

"मेरे बच्चे खम्ब और खमनु! मैं चकित हो रहा हूँ। मैं आनन्दित हूँ। किसके लिए मेरे घरमें आए हो?" "क्या किसीने तुम्हारा अपमान किया है? बताओ, क्या चाहिये।" यह शान्तवना देते हुए थांगराकपा बिस्तरसे उतरकर चताई पर बैठ गए। वे हुका पी रहे थे। खमनु एक बात भी थांगराकपके प्रति बोल नहीं सकी। उसकी चिन्ता समझकर थांगराकपीने पूछा - कहो बेटो, संकोच न करो, अपने पिताजी ही समझ कर साफ साफ कह दो।"

खमनुने विनयके साथ कहा 'माता-पिताके प्रति मैं अन्तिम निवेदन करती हूं कि मेरा भाई खम्बको राजाने लैरोइ हन्जबका

पद सौंप दिया है। इसलिए आज दिन भर पहाड़ोंसे फूल तोड़कर आया है। कल थांगजि हराओब शुरू होगा। फिर आज सन्ध्या समय राजाज्ञा निकली कि कल लाइहराओबमें आनेवालोंको अच्छे अच्छे आभरण पहनें चाहिए नहीं तो राज दण्ड मिलेगा। किन्तु मेरे पास अच्छे कपड़े नहीं हैं। खम्बको लाइ हराओबमें शामिल होना पड़ता है, इसलिए पिताजीके चरणसे कपड़ा उधार लेनेकी आई हूं। कृपया मेरी बातों पर बिश्वास करके एक योग्य आभूषण दीजिए।"

खमनुकी बात सुनकर थांगराकपने हंस दिया और कहा 'मेरी बेटी यह बड़ी प्रसन्नताको बात है कि तुम कपड़े उधार लेने आई हो।"

"जी हाँ, पिताजी।"

थांगराकपने फिर भौंह सिकुड़कर कहा 'गरीब लड़की खमनु! तुम्हारे योग्य चादर मेरे पास नहीं। मेरे पास तो केवल बढ़िया और अमूल्य कपड़े हैं। क्या ये सब कपड़े फैलाकर तुम स्वयं देख लोगी?" उसके करुणामय स्वरको सुनकर खमनुको खुशी हुई। "पिताजी, आपकी मर्जी है।"

"बेटी! तुम्हारे माता-पिता तो इसी देशमें दैविक शक्ति वाले थे। मैं तो एक साधारण मामूली आदमी हूँ। यह पक्की बात है, मेरे पास बिबिध प्रकारके रंगविरंगीवाले कपड़े चादर, चुनरियाँ सब हैं; परन्तु क्या तुम्हारे पिताजीने तुम्हारे लिए कुछ नहीं रखा?"

"कुछ नहीं पिताजी" खमनुने जवाब दिया।

"सुनो बेटी, पुरानी बात है। पौषका दिन था। तुम्हारे पिताजीने मेरी खेतोंकी फसलको छीन लिया था। उस वक्त तुम्हारी माताजीने केवल एक वचन भी मेरे बारेमें नहीं कहा। इससे मेरे दिलमें वैरकी भावना ताजी रही है। फिर भी कपड़ा उधार देनेमें मुझे कोई हर्ज नहीं। किन्तु राजाज्ञाके अनुसार उधार देना और उधार लेना बन्द कर दिया गया। इसलिए कपड़े देनेमें मैं असमर्थ हूँ। अब कोई उपाय नहीं। कहीं दूसरा उपाय देखो।"

थांगराकपाका कटुवचन सुनते ही भाई और बहन आग बबूला हो गए। खमनु फूट-फूटकर रोने लगी। खम्ब भी दुःखी हुआ। खमनुने कहा 'मैं अब समझ गई हूं। जी, मानव-जीवन अमर नहीं।' यह वचन कहकर खमनु सहसा चौंक उठी। थांगराकपने फिर कहा 'समझो खमनु यह मनुष्यका जीवन है। चले जाओ यहांसे।"

खमनु तुरन्त बाहर निकली। खम्ब थोड़ा देरतक बैठा रहा। आचानक खम्ब भी कपड़ा थांगराकपके सामने फाड़कर निकल आया।

थांगराकपा खम्बके गर्वको देखकर क्रोधके मारे शीघ्र ही उठा इस अवसर थांगराकपीने अपने पतिकी कमर पकड़ते हुए रोका और कहा 'शान्त हो जाइए देव।"

बाहर खम्ब क्रोधके मारे थांगराकपके प्रांगणके एक खंभेको ओरसे हिलाया. इससे वह घर भूमि कम्पकी तरह हिलाने लगा। थांगराकपने कहा—'क्या भूमि कम्प हो रहा है?'

नौकर-चाकर सब भी थांगराकपके पास आ पहुंचे और बोले "क्या घटना है मालिक।"

इस समय थांगराकपोने कहा 'यह भूमि कम्प नहीं। इस युरेनजमका भूमि कम्प है।"

भाई और बहन दोनों अपने घरमें देरसे वापस आए। दुःखकी सीमा न रही। खमनु एक क्षणके लिए बेहोश होकर सोयी थी, इस वक्त उसके स्वप्नमें अपनी स्वर्गीया माताजीकी मूर्तिने आदेश दिया 'मेरी पुत्री चिन्ता न करो, थोंगलेनके पास तुम्हारे पिताजीने आभरण भरे दस सन्दूक रखे हैं। ये तुम्हारे लिए हैं।"

एक पलके बाद खमनुको चेतना आई और उठकर खम्बसे बोली 'अरे भाई, चिंता छोड़ दो। मेरे सपनेमें माताजीने कहा कि हमारे लिए पिताजाने थोंगलेनके पास आभरणके दस सन्दूक रखे हैं। इसलिए कल अन्धेरे मुंह पिताजी थोंगलेनके पास जाकर कपड़े और गहने लेना हमारा कर्त्तव्य है।" बहनकी बात पर खम्बको विश्वास हो गया और बोला यह चिङु थांगजिकी दया है बहन!"

पौ फटनेको ही था, दोनों थोंगलेनके पास जाए थे। थोंग-लेन अपने प्रांगणमें घूम रहे थे। थोंगलेनके चरणोंमें दोनोंने प्रणाम किया, इस वक्त थोंगलेनने कहा 'किसलिए तुम दोनों आए हो? बताओ, तुम्हारा परिचय।' बहनने उत्तर दिया— 'हमारे पिताजीका नाम पुरेनब और माताजीका नाम ङांखलैमा,

मेरा नाम खमनु है। यह लड़का मेरा छोटा भाई है, उसका नाम खम्ब है। सुना है आप मेरे पिताजीके मित्र हैं। इसलिए आपके पास लाइहराओबका आभरण उधार लेनेको आई हूँ।'

इसके उपरांत थांगलेनने कहा बेटा मैं भूल गया हूँ। आ जाओ बेटा।' थौंगलेन दोनोंको लेकर उनके दाहिने बायें बिठाया। खमनुको बायेंसे और खम्बका दाहिनेसे आलिंगन करते थे और कंपित स्वरमें कहा "मुझे अपने साथीके प्रति कृतज्ञता नहीं है। मैं पापी हूँ। चिंता न करो। तुम्हारे लिए मेरे पास पुरेनबने दस सन्दूक रखे हैं। बेटा! ये आभरण तुम्हारे हैं। कई वर्षों तक तुम कहाँ रह गई हो?"

खमनुने जवाब दिया 'अपने पिताजीके टूटे-फूटे घरमें रहती हूँ पिताजी।'

यही बात सुनते ही थौंगलेन पैंसठ गुलाम भेजकर खम्बके पुराने घरको मरम्मत करवाया। उसके बाद पुरेनबका रखा हुआ *'निंखम समजिल खम्बको पहनाया और खमनुकी माताजीकी रखी हुई *कुमिल फनेक दे दी सोनेकी जंजीर खमनुके गलेमें पहनाया। फिर थौंगलेनने खम्बको लाइहराओब-जगोइ (नृत्य) सिखाया। थौंगलेनबीने खमनुको भी नाच सिखाया। नृत्यके बाद

---

* कुमिल फनेक—काले रंगकी मेखला।

* निंखम - धोतीके ऊपर कमरेमें पहनेका तीन कोनेवाला एक प्रकारका वस्त्र। समाजिल—सिरके ऊपर लगानेके एक प्रकारका अलंकार।

खम्ब और खमनु अपने घरमें वापस आए। इस वक्त उनके घरके मरम्मत समाप्त हुई। वह देखकर उनके मनमें आनन्दकी भावना जाग उठी। थोड़ी देर बाद राजकुमारी थोइबी और सेनु दोनों खम्ब और अपनी बहनके लिए लाइहराओबके आभरण और गहने लिये खम्बके घरमें आ पहुँची। थोइबी और सेनुको खमनुने स्वागत किया। खमनुने आसन बिछाया और कहा राजकुमारी बैठिए।' वे बैठ गई। थोइबी मन ही मन सोचती रही—इतनी जल्दी इस घर की मरम्मत हो गई, अब तो घर भी सुन्दर है, घरका रहनेवाला भी सुन्दर है।

थोड़ी देर तक वहाँ चुप चाप था। इसके बाद थोइबीने कहा कि मैं फूल देखनेको आई हूँ, इसलिए वे फूल मुझे दिखाइए। थोइबीकी मधुर वाणी सुनकर खम्बकी छाती फूल उठी। वह जल्दी बाहर जाकर फूलोंकी टोकरी ले आया और उसे थोइबीके समीप रख दी। थोइबीने उन फूलोंसे अच्छे फूलोंको चुनकर एक सुन्दर गुलदस्ता बनाया। यह गुलदस्ता खम्बके लिए एक पात्रमें रख दिया और उसने खम्बके हाथों पर सुन्दर आभरणकी भेंट की। इसके बाद थोइबी सेनुके साथ लौट गई। खम्ब और खमनु लाइहराओबमें जानेकी तैयारी करते थे।

× × ×   × × ×   × × ×

चौथा परिच्छेद

लाइ-हराओब

मोइरांग कंगला पुंगजाओ (नगाड़ा) बज गया। पुंगजाओ की ध्वनि सुनते ही मोइरांग महाराज, मुखिया, सारी प्रजा सबके सब मोइरांग थांगजिंके हराओपुंगमें (मैदान) सब जमा हो गए। उधर राजकुमारी थोइबीने सोचा कि यदि राज पथमें खम्बसे मेरी मुलाकात हुई तो मेरा जीवन सफल हो जाएगा।

खम्ब भी थोंगलेनके दो अनुचारोंके साथ चेंगैपातकी तरफसे 'लाइहराओपुंग' की ओर जा रहा था। खम्बका स्वरूप अति सुन्दर था। हाथीकी गतिके समान वह धीरे धीरे राज पथपर आ रहा था। उसका आभरण बहुत सुन्दर था। थोइबी खम्बकी प्रतीक्षा करते हुए राज पथपर सहचरी सेनुके साथ इधर-उधर जा रही थी।

इस वक्त उसने सोचा कि यदि खम्बसे मिले तो वह उसको तांबूल देगी। थोड़ी देरके बाद खम्ब भी वहीं पहुँचा, दोनोंकी आँखें चार हो गयीं। नायक नायिका पल भर वार्तालाप कर रहे थे। फिर दोनों लाइहराओपुंगकी ओर रवाना हो गए।

खम्ब मुखियोंके बीच आ बैठा। राजकुमारी थोइबी भी नारियोंके वर्गमें जा बैठी। थोइबीके पड़ोसमें खमनु बैठी।

नोंगबान महाराजके पक्षमें लैरोइह्नजब था। खम्ब भी * मनाओ इबुंङो युवराजके (पाना) पक्षमें लैरोइह्नजब था। इसलिए पहले नोंगबानने 'चिङु-थांगजि' और नोंगसाबा लाइनिंगथौ' के चरणोंमें पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद महाराज युवराज और रानीके सामने फूल रखकर नमस्कार किया। फिर महाराजके एक सौ उनसत्तर मुखियोंको फूल बाँट दिया। इस समय नोंगबानने सोचा कि यदि सभी लड़कियाँ फूल लेंगी तो राज कुमारी क्यों नहीं लेगी, अगर ऐसा हो जाय तो मेरा जीवन सफल हो जायगा।

इस दृश्यको देखकर थोइबीने सोचा "अप्रिय नोंगबान फूल बाँटनेके लिए आया है, अतः किसी तरह सभाके सामने नकली प्रेमकी भावना दिखाकर फूल लेना ठीक होगा।"

नोंगबान थोइबीके निकट आया और विनयके साथ वह फूल दे गया। थोइबी नकली खुशीसे फूल लेती थी। प्रेममयी थोइबीकी दया दृष्टिसे देखकर नोंगबान परमानन्दके सागरमें डूबता था। चाल-चलनसे नोंगबान पागल मालूम होता था। उसका फूल बाँटना समाप्त हो गया।

खम्ब भी फूल चढ़ानेके लिए तैयार था। खम्बके दाहिने हाथको थोंगलेनने और बायें हाथको नोंगथोनने पकड़ा और तीनों मोइरांग थांगजिके मन्दिरकी तरफ आए। फैरोइजाम्ब भी उनके पीछे आया। खम्बने थांगजि मन्दिरको छूकर प्रणाम किया

* मनाओ इबुंङो—महाराजका छोटे भाई।

और मन्दिरके भीतर घुस गए। चिङुबा थांगजिंके चरणोंमें फूल चढ़ाता था। इसके बाद महाराजके चरणों पर फूल चढ़ाया गया इसको देखकर महाराज चकित रह गए। मनमें आनन्द आया।

प्रजागण इस परिस्थितिको देखकर बहुत प्रसन्न हुए। खम्बने महाराजको चार प्रकारके फूलोंको चढ़ाया जैसे सब्रै, लांगथ्रै, लैशंग-खेकवाइबा और मेलै-लैरेना नोंगजुमपान।

महाराज अत्यधिक प्रसन्न थे। उन्होंने खम्बको इनाम देनेका निश्चय किया। फिर उससे बोला "हे वत्स खम्ब! तुम्हारे फूलकी टोकरी मेरे पास रख दो। उसके बदले मेरी इस चौड़ी थालीपरसे फूल सबको बाँट लो।" यह कहकर महराजने खम्बको सुवर्ण थाली दी

खम्बके फूलोंके मूल्य स्वरूप स्वर्ण मुद्राएँ और एक कुरता भी दिया गया। इसके ऊपर चार तांबूल भी खम्बको मिले।

इसके उपरांत महारानी थोयाके स्थानमें खम्ब आ पहुँचा। रानीने उसे सत्कार किया खम्बने पहलेकी तरह चार प्रकारके फूलोंको रानीके चरणोंमें चढ़ाया। रानीने भी खम्बको इनाम देनेका निश्चर किया और लमथांग खुलक नामक एक सुन्दर चादर दे दी। क्या कहें, थालीपर रखा हुआ मेलैके उज्वल रंग बेलबूटेदार कुरतेकी चमक और लमथांग खुलककी सुन्दरता आदि ने खम्बको अधिक सुन्दर बनाया। उसको देखकर सब आगन्तुक मंत्र मुग्ध हो गए।

आखिर युवराजके पास फूल चढ़ानेके लिए आया और फूल चढ़ाया। युवराज अपने कंधेपर ओढ़ा एक चादर उतारकर खम्बको इनाम स्वरूप दी। थोइबीकी माता चिखुराकपोके निकट आकर उसको भी फूल चढ़ाया। थोंगलेन और नोंगथोन अपने अपने आसन पर लौटकर बैठ गए।

खम्ब फेरोइजाम्बके साथ मोइरांग लैमारोइकी ओर फूल चढ़ानेके लिए आया और अलग अलग बाँट दिया। सब लैमारोइ खम्बके फूलोंसे इतने प्रसन्न हो गई और इनामके तौर पर उसको चादर दी गई। महाराजके सेवक, मुखिये आदि सबको फूल मिल चुके थे। फिर खम्ब लड़कियोंके पास फूल बाँटनेके लिए राजकुमारी थोइबीकी ओर धीरे धीरे आ रहा था। राजकुमारी थोइबी सोचने लगी— मेरे प्राणनाथ अभी फूल बाँटनेके लिए मंद मंद आए हैं। सभाके मध्य थोइबीने बनवाटी रूप धारण किया। जिससे प्रतीत होता था कि वह खम्बको बिलकुल नहीं चाहती। अतः उसने खम्बको अपने पास न आनेका इशारा किया।

थोड़ी देर तक निस्तब्धता छा गई खम्बने थोइबीको फूल नहीं दिया। थोइबीके इच्छानुसार सहचरी मेनुने "लैमाथोकपी" चादर खम्बको भेंट की।

आखिर राजाज्ञाके अनुसार मोइरांगकी दो सौ कुमारियाँ और दो सौ विधवा नारियोंकी विभिन्न पंक्तियाँ नाचनेके लिए लाइहराओपुंगमें निकलीं।

थांगजिंके समीप सब वाद्य यन्त्र पुंगजाओ, शेल, झझारी मझरी, बाँशो आदि बज रहे थे। *पेना बजानेवाले अपने अपने पेना बजाने लगे। बाँसुरो भो मधुर धुनके साथ बजाया गया। नाचनेवाले जोड़ा जोड़ा बनकर नाच रहे थे। दर्शक नृत्य देख कर मंत्र-मुग्ध जैसे हो गए।

साधारणका नृत्य समाप्त हो गया। इस समय नोंगथोनने चिङुब थांगजिंके हराओपुंगमें खम्ब और थोइबीके तृत्यका प्रबन्ध किया। उन्होंने महाराज और युवराजसे हाथ जोड़कर मधुर बाणीमें प्रार्थना की हे राजन! अब आपके दास खम्ब और थोइबाके चिङुब-लाइमांगमें नाचका प्रबंध करना चाहता हूँ। अतः मैं राजाज्ञाका इच्छुक हूँ।"

महाराजने नोंगथोनकी बात मान ली। राजाज्ञा पाकर राजकुमारीको लाइहराओबके सुन्दर अभरण पहनाए गए। दो स्वर्ण कंकन थोइबीके नाजुक हाथोंमें थे। सुबर्ण मणिहार, मोतिहार, बलयः अति मनोरम थे। सुन्दर लौर्त सिरपर था जिससे सूर्यदेवके प्रकाशको भी क्षीन कर दिया। सिरपर साथ शिखि पंखे अलंकृत थे। कानमें मणिमय कुण्डल चमक रहा था। अंगुलियोंकी सुन्दरता स्वर्ण चमपाके समान है। फिर दस स्वर्ण अंगूठियाँ पहनकर चलनेके लिए तैयार हो गई। देवीकी भाँति साज बाजकर राजकुमारी थोइबी नवीन भावसे लाइहराओपुंगमें हँसके कदमपर मन्द मन्द निकल रही थी। दासी सेनु आगे

* पेना—एक प्रकारका वाद्य यन्त्र।

बीचमें राजकुमारी थाइबी और पीछे दस माताएँ घेरकर थांगजिं मन्दिरकी ओर नाचनेके लिए जा रही थी।

दूसरी ओर क्या दृश्य है? थोंगलेन और फैरोइजाम्ब दोनोंने खम्बको राजसी जैसे आभूषित किया। चिङु-थांगजिंके लाइमांगमें (समीप) थोइबीके साथ नृत्य करनेके लिए निकला। खम्बके बायें सर्वाङ्ग सुन्दरी राजकुमारी थोइबी "पानथोइबी" देवीके स्वरूपमें खड़ी रही थी।

लोग कहते है कि नायक नायिका थांगजिंके सामने ऐसे विराजमान हो रहे हैं जैसे आकाशमें दो पुनमके चंद्र या दो सूर्य प्रकाशमान हो गए हों।

× × ×   × × ×   × × ×

खम्ब-थोइबीका नृत्य

नाच शुरू होनेके पहले राजाने आज्ञा दी कि इस नाचके लिये सात वादक, चार सेत्र वादक चार सेलबुंग वादक ग्यारह पेना बजानेवाले और ग्यारह बाँसी आलाप करनेवाले सब तैयार हो जायें।

यही राजाज्ञा सुनते ही सभी तैयारीमें थे। नाच शुरू हो गया। सब यन्त्र बजाने लगे। खम्ब और थोइबी दोनों भी साथ ही साथ नाच कर रहे थे। प्रेमी प्रेमीकाओंके अति मनोहर नृत्यको देखकर नोंगबान अपने आसनपर ठीक ही बैठ नहीं सका। वह आसनपरसे चौंक उठा फिर आसनपर बैठ गया और उसका मन अस्थिर था।

सब दर्शक खम्ब और थोइबीके नाचको देखकर आश्चर्यान्वित हो गए। सब निर्जीवकी भाँति हिल-डूले नहीं।

संयोगसे चतुर्थ प्रहरकी मन्द मन्द वायुसे खम्बकी चादरका किनारा थोइबीके गलेमें लिपटकर नागिनकी तरह आलिंगन करते दिखाई पड़ी। इस अद्भुत घटनाको देखकर सब भावुक चकित हो गए। आखिर "लाइबौ" नाच भी समाप्त हो गया। सभा विसर्जित हो गई। महाराज और युवराज आदि सबलोग अपने अपने घर लौट गए।

× × × × × × × × ×

प्रभात हो गया। चिंखुब आदि मुखिया कंगलामें उपस्थित हो गए। खुनथक (उतरी तरफ) और खुनखा (दक्षिण तरफ) दोनों तरफके लोग खम्ब और नोंगबानके साथ ही साथ दरबारमें उपस्थित हुए।

नोंगबानको खुनखाका धावक और मुक्काका सरदार नियुक्त किया गया है। उसके पक्षमें पन्द्रह सहायक चुने गए। उसी प्रकार दूसरी ओर खम्ब भी आवांग लैकाईका सरदार बनाया गया उसकी तरफ़ भी पन्द्रह आदमी थे। थांगराकपके पास पाँच आदमी लमथाबा (प्रस्थान सिगनल देनेवाला) नियुक्त किए गए। दौड़ 'क्वाक्ता लम हौबु ग' नामका रास्तेपर दौड़ती थी।

चिंखुब कुछ सेवकके साथ महाराजके पास आए और बोले "हे राजन कल दौड़ शुरू किये जानेकी आज्ञा दीजिए।" महाराज राजी हुए सबलोग राजाकी अनुमति पाकर अपने अपने स्थानमें लौट गए।

दुष्ट नोंगबानने मनमें सोचा कि कल खम्बकी दौड़में रुकावट डाल दे। इसी भावसे नाना प्रकारके उपाय खोजने लगा। यह सोचकर नोंगबानने अपने सहायक और खम्बके अनुदाससे गुप्त बात कही और उन्हें अनेकानेक स्वर्ण मुद्राएँ दीं। इसके उपरांत पन्द्रह संचारियोंके पास आकर खम्बको रोकनेके लिए इन्तजाम किया गया। फिर मिथ्या प्रचार किया कि खम्बको कल दौड़नेका अधिकार नहीं। यही राजाज्ञा है।

× × × × × × × × ×

पाँचवाँ परिच्छेद

लमजेन-चेनबा

"दौड़-दौड़ना"

प्रातःकालका समय था। तीस दौड़नेवाले अपना अपना भोजन कर नोंगबानके साथ आ पहुँचे। पाँच लमथाबा भी आए। वे खम्बके बारेमें गपशप करते थे। समय होनेपर भी खम्ब नहीं आया। खम्ब दौड़में भाग लेगा या नहीं ऐसा समाचार थोइबीके पास पहुँच गया। इस कारणसे थोइबी खम्बके लिए गहनें, धोती, मुखवासके लिए पान और गन्नेके टुकड़े टुकड़े आदि लाकर दासी सेनुके साथ खम्बके घरमें आ पहुँची। उस समय खम्बका खाना खतम हो गया। राजकुमारीको दी हुई धोतीको खम्बने पहन लिया और तांबूल खा लिया। निखम समजिन आदि सुन्दर आभरण पहननेके बाद उसको बहन खमनुको नमस्कार करके दोड़नेके लिए यात्रा करने लगा। थोइबी खम्बसे बिदा लेकर लौट गई।

कोंगयाम्ब और उसके दास-अनुदास निश्चित स्थानपर खम्ब आ पहुँचे। खम्बके पहुँचते ही नोंगबानने उससे छलकपट करके कहा—'हे दोस्त, तुम्हें आजकी दौड़से अलग किया गया, तुम क्यों यहाँ पर आए हो? यह राजाज्ञा है, क्या तुमने नहीं सुना?'

उसकी बात सुनकर खम्बने उत्तर दिया "मैंने कुछ नहीं सुना।" फिर नोंगबानने कहा यदि तुम विश्वास न करो तो औरोंसे पूछो। खम्ब थोड़ी देर तक मौन रहा। मौन भंगकर नोंगबान फिर गर्वसे कहने लगा यह राजाज्ञा है, तुम्हें दौड़से निकाल दिया जाय! कहाँ तुम्हारा रास्ता?

खम्बने शान्त भावसे उत्तर दिया। मेरा रास्ता "डांखा लमजाओ" है।

नोंगबानने फिर कहा 'क्या यह तुम्हारा बाब-दादोंका रास्ता है?' नोंगबानकी असभ्य और चुभती बात सुनते ही खम्ब क्रोधके मारे एकाएक उछल पड़ा और नोंगबानको पकड़कर ऊपर घुमाया। भूमिपर फटक दिया।

दोनोंमें कुछ समय तक मल्ल-युद्ध हुआ। कुछ आदमी दोनोंको समझा रहे थे। खम्ब लज्जित होकर रुक गया और सोचने लगा 'धोकार है।' खम्बके अलावा नोंगबान और खम्बके पन्द्रह सहायककोंके साथ सवार होकर क्वाक्ताकी ओर चल पड़े

राज पथमें नोंगथोन—चाओबको खम्बसे मुलाकात हुई। नोंगथोनसे खम्बने सब बातें सुनायीं। सब बातें समझकर नोंग-थोन खम्बके साथ महाराजके पास फिर वापस आए और नोंगबानकी कुनीति सुनायी।

महाराजने कहा 'ऐसी आज्ञा मुझसे कभी नहीं निकली।' अभी खम्बको क्वाक्तासे दौड़ना पड़ा। राजाज्ञा पाते ही नोंगथोन और खम्ब तुरंत क्वाक्ताके लिये निकले।

संयोगसे राज-द्वारमें फैरोइजाम्ब जा रहा था। नोंगथोनने उसे पुकारा 'फैरोइजाम्ब! अब खम्ब क्वाक्तासे दौड़नेका अधिकार है। इसलिए तुम्हें उसको मदद् करनी होगी, होशियार हो जाओ नोंगबानके पक्षमें नाना प्रकारके बदमाश आदमी है।' पिताजीकी अनुमति लेकर फैरोइजाम्ब एक घोड़ेपर सवार होकर खम्बके साथ क्वाक्ताकी ओर चलने लगा। वहाँ दूसरी ओरसे थोंगलेन भी आए।

नोंगथोन और थोंगलेन दोनों राज फाटकमें खड़े होकर यह दृश्य देख रहे थे। फैरोइजाम्ब और खम्ब उनकी आँखोंसे ओझल हो गए। इसके बाद दोनों मंत्री और सेनापति राज दरबारमें प्रवेश करने लगे।

फैरोइजाम्ब और खम्ब दोनों ताओथोंगके नजदीक जन-साधारणके पथपर दक्षिणकी तरफ आए। दूसरी ओर क्या हो रहा था। नोंगबान और उसके गुप्तचर सभी क्वाक्ताकी दौड़के स्थानमें आ पहुंचे। सब अपना अपना खाना पीना खतम कर गए थे। थोड़ा देरतक आराम किया इसके बाद सब दौड़ने वाले तैयारीमें थे। थांगराकपा आदि चार प्रस्थान सिगनल देने-वालोंने राज पथपर एक लकीर खींचा, चिह्नके किनारे दस धावक घूटने टेककर बैठे। कोंगयानब—नोंगबान सबसे प्रायः सात हाथोंके पीछे घूटने बैठा सब दौड़नेकी प्रतीक्षामें थे। खम्ब और फैरोइजाम्ब दोनोंने दूरसे देखा कि सब तैयार हो रहे हैं। दूरसे फैरोइजाम्बने बुलन्द आवाजसे पुकारा कि दौड़ रोक बन्द करो,

यही राजाज्ञा है। नोंगबान उल्टी बात कहकर बोला - यही राजाज्ञा है, दौड़ना शुरू करो। यही बात सुनते ही थांगराकपाने एकाएक दौड़नेका हुक्म दिया। सभी धावक नोंगबानके साथ दौड़ना आरम हो गए।

थोड़ा देर दौड़नेके बाद खम्ब और फेरोइजाम्बसे मिले। कोंगयानब सबके आगे बढ़ा। खम्बको देखते ही नोंगबानने कहा 'दोस्त! तुम आए हो?' खम्बने उत्तर दिया "राजाज्ञाके अनुसार मैं भी आया हूँ। यह कहकर खम्ब निशानीकी जगहमें आ पहुँचा। संकेत करनेके लिए पाँच सदस्य भी मिल गए और मौका पाकर खम्बने कहा "मैं भी दौड़नेके लिए आया हूँ।"

खम्ब नोंगबानके स्थानसे तीस गज और साधारण खिलाड़ियोंसे सत्तर गज पीछे हटकर खड़ा रहा। इस वक्त फेरोइजाम्ब एक घोड़ेपर सवार होकर दौड़नेके स्थानमें खड़ा रहा। नोंगबानके यात्राके प्रायः आधे घंटेके बाद खम्ब भी दौड़नेकी तैयारी करने लगा।

चिङुबा आदि देवताओंसे प्रार्थना करनेके बाद खम्बको थांगराकपसे संकेत मिला। खम्ब और फेरोइजाम्ब दोनों दौड़ने लगे। कुछ दौड़कर खम्ब फेरोइजाम्बसे आगे बढ़ा फेरोइजाम्ब तुरन्त घोड़ेको चाबुक मारा और घोड़ा दौड़ने लगा। इस समय दोनों नोंगबानके क्रूर दलसे मिले। खम्ब सबके बीच घुस गया, दुर्भाग्यसे फेरोइजाम्ब हाथसे लगाम छूटकर भूमिपर गिर पड़ा और घोड़ा क्वाक्ताकी ओर फिर दौड़ गया। इस वक्त कतिपय आबु-

मियोंने खम्बको घेर लिया। सबको मार पीटकर खम्ब फिर दौड़ने लगा।

दस पन्द्रह कदम जानेके बाद रास्तेमें दस आदमियोंने खम्बको फिर रोका। वे बोले 'खम्ब! तुम्हारे प्राण पखेरु उड़ जायेंगे?' वे खम्बको एक क्षणतक रोक नहीं सके। एका एक वह लांफकर दस आदमियोंके मध्य आ खड़ा। दस आद-मियोंने खम्बको घेर लिया। खम्बने एक एक करके जोरसे ऊबड़ खाबड़ जमीनपर सबको गिरा दिया आखिर खम्ब सबको पराजित कर, आगे दौड़ा।

नोंगबानके आगे दौड़नेका मौका पाकर खम्ब बहुत तेजसे दौड़ा। नोंगबान ताउथों गाँवकी सीमापर आ पहुँचा। इस समय तक नोंगबानके दस जासूसी खम्बको रोकनेके लिए प्रतीक्षा करते रहे उनको देखते ही नोंगबानने कहा। होशियार! खम्ब पहुँच रहा है, उसको रोक सको तो तुम्हें अधिक इनाम दूँगा।" यह कहकर वह प्राणपणसे आगे बढ़ा। दस आदमियोंने खम्बको चारों ओरसे घेर लिया और कहा 'अरे खम्ब! तुम कहाँ जाओगे? ठहरो ठहरो तुम कैसे बचके जाओगे?"

सबकी आवाज सुनकर खम्बने कहा 'भाइयो, क्षमा कीजिए।" यह कहकर वह आगे बढ़ा, उसका एक कदम भी पीछे नहीं हटा। सब सवारियोंने खम्बको रोक दिया।

दूसरी और क्या हुआ, महाराज आदि मुखिया भी दौर देखनेके लिये कंगलामें जमा हो गए। थोइबी, सेनु और खमनु तीनों

खम्बकी दौड़ देखनेके लिए अउन-बाजारमें इन्तजार कर रही थीं। अब मुरारी नोंगथोनके पास हांफते हुए दौड़ आया और कहा दस सवारियोंने खम्बको ताउथोंग थोया गाँवकी सीमापर रोक रखा है। इस बातको सुनते ही नोंगथोनने महाराजसे सविनय कहा "हे राजन! आपके दास-अनुदास सब दौड़नेका काम नहीं करते बल्कि वे आपसमें गोलमाल करते रहे हैं।

महाराजने नोंगथोनको सबकी शान्तबना देनेके लिए भेजा। नोंगथोन राजाज्ञा पाकर घटना स्थलमें निरीक्षणके लिए आए। उनको अउन बाजारमें थोइबीसे मुलाकात हुई। इस थोइबीने कहा कि दादा मंत्रा आप कहाँ पधारेंगे? राजकुमारीकी मधुर बाणी सुनकर नोंगथोनने संक्षपमें ही उत्तर दिया "राज कुमारी, मैं दौड़ देखनेके लिए आया हूँ। राजकुमारी थोइबीने सेनुको हुक्म दिया 'थोड़ा पान और थोड़ासा गन्ना दादा नोंग-थानको दे दो, खम्बके लिए।"

थोइबीके आदेशानुसार सेनुने खाने-पीनेकी सामग्रियाँ नाम्रतासे नोंगथोनको सौंप दीं और यह भी उसने कहा 'दादा नोंगथोन यह बहन खमनुने अपने भाई खम्बके लिए दिया है।" नोंग-थोन सब बातें समझ गए। नोंगथोन शीघ्र ही एक छोटी सी पगदण्डीसे होकर खम्बके पास आए और दूरसे पुकारते थे। 'ठहरो ठहरो सवारियो! किसलिए खम्बको रोक रखते हो?' नोंगथोनकी आवाज सुनकर सब सवारियाँ भागने लगे।

खम्ब और नोंगथोन मिल गए। नोंगथोनने पूछा—
'तुम जानते हो, वे कौन है?"
"पहचाना नहीं।"

इसके पश्चात् नोंगथोनने खाने-पीनेकी वे चीजें दीं। फिर उसने कहा—तुम्हारे दोस्त नोंगबानसे आगे दौड़ो। मैं भी आऊंगा यह कहकर नोंगथोन सीधे रास्तेपर लौट आए। अउन कैथेनमें (बाजार) थोइबीने देखा कि नोंगथोन आ रहे हैं। वास्तवमें वह अपने प्रेमीके बारेमें पूछना चाहती थी, फिर भी शरमके मारे दूसरे पर उद्देश्य करके पूछा। इपु (दादा) दौड़का नतीजा क्या हुआ?

नोंगथोन हथेली उलटकर एक अंगुली दिखाते हुए दौड़े। नोंगथोनका भाव समझकर राजकुमारी थोइबीने सोचा कि आगे दौड़नेवाले नोंगबानकी कभी विजय नहीं होगी। पीछे आनेवाला खम्ब जरूर जीतेगा। थोइबीने सेनुसे कहा "सेनु इस संकेतका नतीजा ऐसा होगा तो भी चिङुबको लाइफा (देवाभरण) चढ़ाता होगा। दोनों हंस पड़ी। नोंगथोन राजदरबारमें आ पहुँचे और उन्होंने सब हाल सुनाया।

दूसरी ओर क्या हुआ? थोड़ी देर दौड़कर खम्ब नोंगबानसे मिला और कहा "दोस्त! मैं अभी आ गया हूँ, तेजसे दौड़ना"
नोंगबानने मन ही मन कहा 'रोकनेसे क्या फायदा?"

इसके पश्चात् वे खेतमें धान बोनेवाली स्त्रियोंके पास दौड़े। इस समय फेरोइजाम्ब दोनोंकी नजरमें आया। खम्ब और नोंगबान

झाखा रास्तेपर सीधे दौड़े। वे अपने अपने पक्ष-विपक्ष बनाकर सड़कके आस-पास खड़े रहे थे। सबने आवाज दी "तोम्पोक, दौड़ो दौड़ो! कोंगयानब दौड़ो! दौड़ो!!"
इसी तरह सबकी आवाज आकाशमें गूँज उठी।

अउन कैथेनमें तमाशा देखनेवाली राजकुमारीने सुमधुर वाणीसे कहा 'मेरे पिताजीके आदमी दौड़ो! चिङुब कृपा करें।" सती थोइबीका मधुर बचन सुनते ही खम्बके मनमें एक भारी उत्साह पैदा हो गया। उसकी छाती फूल उठी। प्रोत्साहित होकर खम्बने कोंगयानबको (नोंगबान) गरदनसे मारकर आगे बढ़ाया। राजा, युवराज और सब इस प्रशंसनीय दृश्यको देख रहे थे।

कोंगयानबके पिताजी खद्राकपा आदि अङोमके आदमियोंने बहुत जोरसे आवाज दी 'कोंगयानब तेजसे दौड़ो! खूब दौड़ो!!' परिवारकी उत्साहित वाणी सुनते ही नोंगबान-अथा-कोंगयानबा दौड़ा और आखिर खम्बके नजदीक आ गया। इस कालमें चिंखुब युवराज, थांगलेन, चाओब आदि सब सज्जनोंने बुलन्द आवाजसे कहा 'अरे नोंगयाई खम्ब! विजय बाना जल्दीसे पकड़ो!"

यह उत्साह भरी वाणी सुनकर खम्बने कहा—

"मोइरांग महाराजका सेवक मैं हूँ;
माता कांखरैमाका बच्चा मैं हूँ;
पिता सेनापति, पुरेनबका बेट मैं हूँ;

एक दिनमें मैं पैदा हुआ हूँ;
दो दिनमें कभी नहीं मरूँगा।"

यह बचन कहकर खम्ब बहुत तेजसे दौड़ रहा था। क्या कहा जाय नोंगबानसे २० हाथ आगे बढ़कर विजय बाना छूनेके लिए प्रायः सात हाथोंकी दूरी परसे कूदा, विजय बाना पकड़ा। इस दृश्यको देखकर सब लोग चैनके बाँसी बजाने लगे और खूब ताली बजा रहे थे। दौड़का पारितोषिक खम्बको दिया गया है!

इसके उपरान्त खम्ब और नोंगबान मुक्का खेलनेके लिए तैयार हुए। नोंगबानकी पराजय केवल मुक्कामें ही नहीं हुई बल्कि मांजों, शुक, नु आदि प्रतियोगिताओंमें भी खम्बने नोंगबानको हरा दिया।

महाराज अत्यंत हर्षित हुए। उसने * पोन्देल, नमककी एक टोकरी, पन्द्रह लौ परि और महाराजका सुवर्ण चादर ये सब खम्बको इनामके तौरपर दिये गए। युवराजने भी खम्बको पारितोषिक दिया। इसके ऊपर दो नौकरोंके मूल्य भी दिये गये हैं। खम्ब आनन्दित थो। कार्यक्रम समाप्त होनेके बाद दर्शकगण अपने अपने गृहमें लौट गए इतनेमें कोंगयानब लज्जित होकर खड़ा था। उसके दुखकी सीमा न रही। उपाय हीन था। अब नोंगबान खम्बको अपना एक मात्र शत्रु समझने लगा। खम्बको अंत करनेके लिए नाना प्रकारके उपाय सोचकर वह चला गया। घरमें पहुँचकर नोंगबानने प्रार्थना की 'हे थांगजि देवता! तुम

* पोन्देल—मोटा-सा कपड़ा। लौ परि—क्षेत्र

असलमें सर्व शक्तिमान हो तो मेरे शत्रु खम्बको तुरंत मौतकी सजा दे दो। इस ख्यालसे नोंगबान अपने घरमें एक अलग कोठरी बनाकर उसमें तप करनेको बैठा रहा।

नोंगबानको आदतमें परिवर्तन देखकर उसकी पहली पत्नीने पूछा "मेरे प्राणनाथ, इतना कड़ा तप करनेका प्रयोजन क्या है? मुझे बताइए।" नोंगबानने कहा 'थांगजि देवताके दर्शन करना ठीक होगा।"

"क्या बात है, मेरे स्वामी. यह असम्भव है। साक्षात ईश्वरके दर्शन करना बहुत कठिन है। नोंगबानने फिर गरजकर कहा "तुम्हें क्या अधिकार है? चले जाओ यहाँसे।" नोंगबानका कटु वचन सुनकर उसकी सब औरतें चुप-चाप रहीं।

थोड़े दिनोंतक नोंगबान भविष्यको बातें बतानेवाली औरतका रूप धारण करके लोगोंको पूर्णविश्वास दिलाया।

सफेद रंगका पहनावा पहनता था। थोड़े दिनों तक आम जनताके आगे ज्योतिषीके रूपमें इधर-उधरकी कुछ बातें कहता रहा। उसने घोषित किया कि मैंने खुद चिङ्ब थांगजिके दर्शन पाये हैं। हमेशा वह खम्बको हत्याके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता रहा।

खम्ब सरल और सत्यवादो था, वह किसीको हानि नहीं पहुंचाना चाहता था, इस कारणसे थांगजि देवता हरदम उसकी रक्षा करते रहे। कोंगयानबके स्वप्नतकमें तरह तरहकी बुरी भावनाएँ उठती थीं। खम्बको प्राणदण्ड दिलानेका उपाय उसकी

समझमें नहीं आया। रात बीत गई। सबेरा हो गया। खुमन प्रान्तमें रहनेवाली उसकी बहन मोइरांगमें आयी। उसने नोंगबानके घरमें प्रवेश किया, उसको बहनको आते हो नोंगबानने पूछा "किस लिए मेरे यहाँ आयी हो बहन ?"

बहनने उत्तर दिया "भाई, मेरे गाँवमें एक भयंकर उत्मत्त बैल है। इससे खेतमें कोई भी तरकारीके लिए साक सबजी तोड़ना नहीं जा सकता। मेरा शरीर क्षीण हो गया, आज मोइरांग बाजारमें एक मछली खरीदनेके लिए आयी हूं, भाई।"

'बहन! किसका बैल है ?" नोंगबानने पूछा।

उत्तर मिला 'बैलका मालिक तो मैं नहीं जानती, इकोप झीलमें एक पागल बैल है, उसकी शक्ति अद्वितीय है। संसारमें इस बैलकी शक्तिके सामने कोई नहीं टिक सकता। बहिनकी बात सुनते ही नोंगबानने सोचा—यह बैल खम्बकी काल-मृत्यु है, इस विचारसे वह दूसरे दिन औरतका रूप धारण करके महाराजके पास आया। इस वक्त महाराज बैठकखानेमें आराम कर रहे थे। नोंगबानने सिर झुकाकर महाराजको प्रणाम किया और सविनय कहा "हे राजन! इस चिङ्खा थांगजिकी वाणी है कि इकोपमें एक भयंकर खुँखार बैल है। उसको पकड़कर थांगजिके श्रीचरणपर चढ़ायें तो प्रजा और महाराजका शुभ कल्याण होगा। नहीं तो मोइरांग प्रान्तमें विप्लव होगा, इतना ही नहीं, अकाल और अराजकता फैल जायगी।

इस हेतु मुझे श्रीमानकी सिवामें चिङ्‌-थांगजिकी अमुक वाणी लेकर उपस्थित होना पड़ा।

नोंगबानकी बात सुनकर राजाने फिर पूछा "बताओ, इस बैलको कौन पकड़ सकता है।" नोंगबानने उत्तर दिया 'चिङ्‌बने आदेश दिया कि यह बैल सामान्य नहीं, मोइरांगमें केवल एक ही व्यक्ति इस बैलको पकड़ सकता है।
"कहो वह कौन है?"

नोंगबानने फिर कहा "खम्ब है राजन! सुनिए एक गुप्त बात है कि अगले दिन मेरे साथी खम्बने मुझसे कहा था वह बहुत गरीब है, धन; सम्पत्ति भी उसके पास कुछ नहीं; तो भी पाँच थालियाँ लेकर मेरे पास आया और कहने लगा—मेरे दोस्त! अगर मौका मिले और श्रीयुत महाराजकी आज्ञा हो तो इकोपके बैल या तोबुङ्गके बाघको पकड़ना चाहता हूँ। यदि तुम कहीं महाराजके प्रति कहो तो मेरा भाग्य उदय होगा, इस कारणसे आज मैं श्रीमानके चरणोंमें यही बात बतानेके लिए आया हूँ।"

"अच्छा, नोंगबान, सुनो! खम्ब बैल पकड़ना चाहता है और चिङ्‌ थांगजिकी भी इच्छा है कि बैलको पकड़ लिया जाय। सब ठीक है, तुम सब कुछ जानते हो। जब वहाँका कंगला पुंगजाओ (नगाड़ा) खुद बजाओ।"

"राजन कंगला पुंगजाओ बजानेके पहले खम्बको बुलानेका हुक्म दिजीए।"

महाराजने उसकी बात मान ली। फ़ौरन खम्बको आनेका सन्देश भेजा। खम्ब तुरन्त राज महलमें आया, इस समय नोंग-बानको देखकर खम्बने मनमें सोचा कि पापी नोंगबान यहाँपर है। उसने कोई अनर्थ बात कही होगी। यह सोचकर खम्बने महाराजके पास प्रवेश किया और पंचांग दण्डवत प्रणाम किया। खम्बको स्वागत करते हुए कहा "अरे तोम्पोक ! मैंने तुझको बुला लिया है—क्योंकि तुमने नोंगबानसे एक गुप्त बात कही थी कि तुम इकोपमें पागल बैल या तोबुङ्गका बाघ पकड़ना चाहते हो। इस हेतुसे तुम्हें बुलाया। क्या तुम राजी हो नहीं गये हो ?

"मैंने कभी ऐसा नहीं कहा" खम्बने हाथ जोड़कर उत्तर दिया।

खम्बकी जबान सुनकर फिर नोंगबानकी ओर देखकर महा-राज बोले "तुम्हारी क्या राय है ? साक्षी है या नहीं।"

"नहीं राजन।"

"तुम्हारी जबान ठीक नहीं। दुश्मनीसे यह बात तुमने कही। सुनो खम्ब ! दूसरी बात है कि थांगजि इस बैलको चाहता है : किन्तु दान देना मेरा कर्त्तव्य है। तुम्हें इस बैलको पकड़नेकी शक्ति है या नहीं।"

महाराजके हुक्म बतानेसे खम्बने दो बार इनकार किया। तीन बार राजाने कहा। आखिर खम्ब अपने स्वर्गीय पिताजी पुरेनबकी सम्मान रक्षाके लिए राजी हुआ और कहा "हे राजन, इस बैलको चिङ्ब थांगजि चाहे तो मैं अवश्य पकड़ूँगा।"

खम्बका सत्य बचन सुनते ही महाराज प्रसन्न हो गए। महाराजने घोषणा की कि मेरे भाईकी पुत्री भी मेरी पुत्री ही है। अतः आजसे मेरी प्रिय दर्शिनी राजकुमारी थोइबी तुम्हारी होगी।

महाराजकी बात सुनकर नोंगबानने सोचा कि खम्ब जरूर मर जायगा। इस भावनासे नोंगबान आनन्दित हो गया है। इसके बाद राजाज्ञा पाकर विचार-विमर्शके लिए कंगला पुंगजाओ बजाया गया था।

पुंगजाओकी आवाज़ सुनते ही प्रजागण और मुखिया राज दरबारमें जमा हो गए। चिंखुबा युवराज खुद राज दरबारमें उपस्थित हुए। सेनापति थोंगलेनके अलावा सब मुखिया हाजिर हो गए। महाराज कंगलामें आ बिराजे। थोड़ी देरके बाद मंत्री नोंगथोन-चाओबने पुंगजाओ बजानेका कारण पूछा। महाराजने कहा "सुनो, दादा नोंगथोन! पुंगजाओ बजानेका कारण यह है कि नोंगबानके सपनेमें चिङु थांगजिने कहा था कि इकोप झोलमें एक खुँखार बैल हैं उसको चढ़ाना हमारा कर्तव्य है। इस कारणसे सभा बुलानेके लिए नगाड़ा बजाया गया।

नोंगथोनने फिर कहा "बैल कौन पकड़ेगा? राजन्"

"खम्ब"

"क्यों, खम्ब पकड़ेगा?"

"खम्ब राजी हुआ।"

"इस बैलको खम्ब ही क्यों पकड़ ले? यह बात प्रजाकी भलाईसे संबंधित है। इसलिए सब लोगोंको पकड़नेका हुक्म दिजीए राजन!" नोंगथोनने गर्वसे कहा।

नोंगथोनकी बात समझकर राजाने कहा "आपकी क्या राय है? खम्बने स्वयं बैल पकड़नेका वचन दिया है।"

महाराजके वचन सुनते ही खम्बने खड़े होकर सबिनय कहा "हे राजन, मेरे माता पिताजीकी अभिमान रक्षाके लिए मैं इस पागल बैलको पकड़कर चढ़ाऊँगा। खम्ब की निर्भीकता सुनते ही महाराजको संतोष हुआ और उन्होंने घोषणा की—"सुनो प्रजागण मेरी सुपुत्री राजकुमारी थोइबी आजसे खम्बकी हो जायगी।" महाराजका उत्साहित बचन सुनकर सबलोग हर्षित हो गए।

आखिर महाराजने आज्ञा दी "मेरे दोस्त खुमन राजाको यही समाचार सुनाओ।" यहां राजाज्ञा लेकर थांगराकपको खुमन राज्यमें भेजा।

बैल पकड़नेकी बात सबको सुनायी। ऐसो खबर पाकर राजाने सब मुखियोंको समझाया और नाना प्रकारकी यथोचित सम्मतियाँ प्रकट करनेको चाहा। एक ही मुखियाने कहा "हे खुमन महाराज! मोइरांग राजा बैलको लेना चाहें तो उसकी क्या किमत ली जायगी?

राजाने उत्तर दिया "मुल्यका क्या मतलब है? बिना मोलसे यह बैल चिङ्ब-थांगजिको चढ़ाना चाहता हूँ।"

महाराजकी अनुमति पर सबलोग राजी हुए। थांगराकपने कहा "मोइरांग राजाकी चाह है यह बैल पकड़नेके प्रबन्धकी जिम्मेदारी आप करें।" थांगराकपकी सब बातें खुमन राजाने मान लीं।

आखिर थांगराकपा मोइरांगमें लौट आया। उसने सब बातें सुनायीं।

खुमन प्रान्तमें क्या हो रहा था? खुमन महाराजके आज्ञानुसार सब प्रजा इकोप मैदानके चारों ओर चार सौ पचास मचानें बनायी गयीं हैं।

"कल इकोप झीलमें मोइरांगका खम्ब खूँखार बैलको पकड़ लेगा" यह विज्ञापन निकला। इसके बाद काम छोड़कर सब लोग अपने अपने घरमें लौट आए।

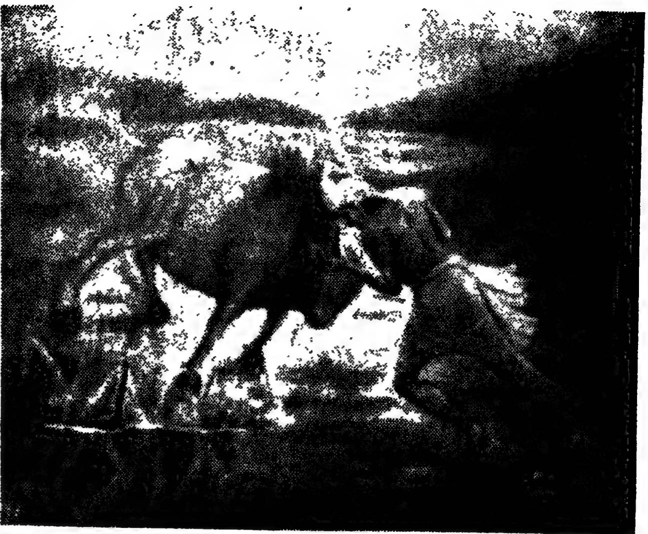
चिंखुबा युवराजका मन इस विचारसे अधिक दुखित हुआ कि कल खम्ब अवश्य मर जायगा। खम्बके पक्षमें रहनेवाले सब लोगोंने अपनी अपनी औरतोंको सब हाल सुनाया। यही समाचार सुनते ही राजकुमारी थोइबी चौंक उठी और उस भी दुःखकी सीमा न रही। सेनुके साथ खम्बके घरमें आई। वह खम्बसे कहती "प्राणनाथ, कल बैल पकड़ना मुझे भी देखने दो।" बड़ी व्याकुलताके साथ वह राजमहलमें लौट गई।

सुबह हो गई। कंगला पुंगजाओ बजाया गया "दोंग! दोंग!! दोंग!!!" ऐसी आवाज आकाशमें गूँज उठी। सब लोग सुन सके। सब मुखिया और सहायक राजदरबारमें इकट्ठे हुए।

महाराज भी बैल पकड़नेका खेल देखनेके लिए नावपर चढ़ गए। युवराज भी दास दासियोंके साथ नावपर चढ़े। सब लोग लोकाक झीलको पार कर गये। थांग और कारांग पहाड़ीके बीचमें आ पहुँचे और खुमनके नावघाटमें उतारे। मैदानकी ओर सब लोग महाराजके साथ धूमधामसे आ रहे थे।

इस शुभ घड़ीमें खुमन राजा, मोइरांग महाराजका स्वागत करनेके लिए राज सी ढंगसे प्रतीक्षा करते रहे। खुमनके प्रजागण मोइरांग राजाके अभिवादनके लिए प्रतीक्षा थे। मोइरांगके मुखिया एक सौ सड़सठ, खुमनके सदस्य दो सौ पचास और दो महाराजके साथ मचानपर चढ़कर आ बिराजे। सबके मन आगामी घटनाके बारेमें व्याकुल और अस्थिर हो रहे थे।

× × × × × × × × ×



३। के० तोम्बा सिंह, इम्फाल आर्ट कालेज।



४। तिएच, तोम्बी सिंह. इम्फाल, आर्ट कालेज देखिए पृष्ट १४१

छठा परिच्छेद

काओ-फाबा

(बैल पकड़ना)

खम्ब बैल पकड़नेके लिए प्रस्तुत हुआ। खम्बने * निंखम समजिन पहना, रेसमकी रस्सो कमरेमें बाँध ली। इस समय राजकुमारी थोइबी सेनुके साथ विविध प्रकारके मिठाइयाँ, फल मुल लाकर खम्बके घरमें आ पहुँची। थोइबीने सविनय कहा "मुझे आपके साथ चलना चाहिए। कृपा करके मुझे साथ चलनेकी आज्ञा दीजिये।"

खम्बने मन ही मन सोचा "असलमें उसको वहाँ जानेका हक नहीं। राज परिवारके नियमके बिरूद्ध मैं कैसे ले जाऊ। फिर भी मैं उसकी इच्छा पूरी करूँगा। थांगजिं ही सबके मालिक हैं।"

खम्बने मान लिया। राजकुमारी थोइबी सेनुको खम्बके घरकी रखवाली बनाकर खमनु और खम्बके साथ यात्रा करने लगी। लोक्ताकके किनारेपर आ पहुँचे। खमनु और थोइबी एक नावमें चढ़ीं। खम्ब नाव खेने लगा। खुलाक झीलके तट

---

* निंखम—धोतीके ऊपर कमरेमें पहनेका तीन कोनेवाला एक प्रकारका वस्त्र।

* समजिन सिरके ऊपर लगानेके एक प्रकारका अलंकार।

पर नाव बाँध लिया। खम्ब उचिवाके कोनेमें बहन और थोइबी दोनोंके लिए एक पर्ण कुटिर बनाया वहाँ सबको छोड़कर वह आगे बढ़ा।

दूसरी ओर क्या है, बैल पकड़नेवाला खम्ब अब तक नहीं आया इस समाचारसे हलचल मच लगी। खम्बको देखते ही कोंगयानब और सभी प्रजा "वह आ गया है, वह आ गया है!" यह कहकर बहुत शोर मचाने लगे। खम्ब खुमन महाराजकी मचानके पास आया। इस बेलामें खुमन महाराजने सम्बोधन करके कहा "मेरे प्यारे भाई, तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं एक बात कहूँगा, सुनो भाई! खुमनमें प्राचीन कालमें तीन भाई थे। बड़ेका नाम था हाउरम अहन, मध्यमका नाम था हाउरम नोंगोइ याइमबा और छोटेका नाम हाउरमतोन था।

मेरी दादी थोंगडाइनुकी नोंगथै माला (मोतीकी तरह एक प्रकारकी माला) थी। इस मालाके कारण छोटे दादोंने बड़े दादोंको मार डाला। इस भयके मारे मध्यम दादा यानी तुम्हारे दादा हाउरम निगोइ याइमा मोइरांगमें आश्रित था। तुम भी इस दादेकी सन्तान हो। मैं भी छोटे दादा हाउरमतोनकी संतान हूँ। मैं और तुम दोनोंके बीचमें घनिष्ट संबंध है! आज संयोगसे तुम बैल पकड़नेके लिए आए हो। यह क्या मोइरांग महाराजकी शक्तिके भयसे तुम यहाँ पर आये हो? बताओ, मुझसे संकोच करनेकी कोई बात नहीं।"

खम्बने नम्रतासे कहा "आपकी दया है राजन्! मैं माता पिताके अभिमान और प्रजाकी भलाईको ध्यानमें रखकर आया हूँ। कोई जबरदस्तीकी बात नहीं, खुशी मैं यहाँपर आया हूँ। सन्देह न कीजिए राजन्!"

उसकी उदारताकी बात सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए। खम्बको पाँच तांबूल दिये। इतना ही नहीं राजाके वस्त्र अलङ्कार खम्बको भेंट दिया और वर भी दिया 'मैं खुमन राज्यका सही राजा हूँ तो तुमको कार्य सिद्धि मिलेगी।"

इसके बाद मोइरांग महाराजको भी नमस्कार किया। खुमन मोइरांग दोनों राज्यका प्रजाको प्रणाम किया। प्रजाने खम्बको आशीर्वाद दिया। चिंखुबा युवराज आदि मुखियोंके प्रति भक्ति दिखाई।

आखिर खम्ब यह बैल पकड़नेके लिये * लूवांग तौ झाड़ीमें घुस गया। लाइबुंग नामक एक चबूतरेके ऊपर चढ़कर बैलको झांकने लगा। पहले खम्ब बैलको खोजमें पूर्व दिशामें देखने लगा, परन्तु बैल देख नहीं पाया। फिर उत्तर दिशाकी ओर मुंह मोड़ा और दक्षिणमें इस समय महाबली बैल एक कूपमें पानी पी रहा था। इस बैलको देखते ही खम्बने जोरसे आवाज दी यही आवाज सुनते ही फौरन बैल खम्बकी तरफ लौंफ गया।

इस समय इकोप झीलसे निकली हुई एक छोटी सी नदीके किनारे पर एक गूलरका पेड़ था, उसपर चढ़कर राजकुमारी

---

* लुवांग तौ—एक प्रकारका पौधा ((घास)।

थोइबी, खम्ब और बैल दोनोंका भयकर मुकाबला देखने लगी।

एक क्षण खम्बने सोचा कि ऐसी जगह पर बैलसे मैं सामना करूँ तो सभी दर्शक तमाशा देख नहीं पायेंगे। इस ख्यालसे खम्ब इस बैलकी हँसी करते करते सभाके मध्य लाया। यह खूँखार बैल और महाशक्तिशाली खम्ब दोनोंके स्वरूपको देखकर सभा मुग्ध रही। खुमन और मोइरांग दोनों कहने लगे 'खम्बकी हार हो गयी।"

यह बात एक कोनेसे एक कोने तक गूँज उठी। ये निरुत्साहित बातें सुनकर खम्बने पुकारा "मैंने कभी नहीं मुँह मोड़ा, सुविधाके लिए अच्छी जगह पर निकला रहा हूँ। सुनिए प्रजागण! मैं ड्रांखरेमा माता और पुरेनबका बच्चा हूँ और चिङ्खू थांगजिंका अनुदास हूँ। क्यों मुह मोड़ूं।' यह वचन कहकर खम्ब जांघ पर हाथोंसे मारकर बैलको ओर एक बार उछल पड़ा। बैल भी शृङ्ग दिखाकर खम्बकी छाती छेदनेके लिए तुरन्त उछल पड़ा।

इस समय खम्बने बैलकी दो सींगोंको बहुत जोरसे पकड़ लिया ऐसा भयकर युद्ध हुआ मानो दो हाथी बड़े मैदानमें तुमुल लड़ाई कर रहे हों दो सिंह गरज गरजकर एक दूसरेका सामना कर रहे हों।

थोड़ी देरके बाद खम्ब इस बैलको पीछे धक्का देता फिर बैल भी खम्बको पीछे धक्का देता। कुछ समय तक दोनोंमें घोर युद्ध हुआ। लड़ाईकी धूलने आसमानमें उड़कर सूरजको छिपा रखा। सभी दर्शक इस तमाशाको जी लगाकर देखते थे।

दर्शकोंके मनमें सन्देह था। या तो धूलके कारण युद्धस्थलका दृश्य साफ न हुआ था कहीं खम्बको मारा गया है। दैवगतिसे हठात खम्बने कूदकर इस बैलकी गर्दनको पकड़ लिया। इस वक्त बैलने सोचा कि यह आदमी काबूमें कभी नहीं आयेगा। इस ख्यालसे यह बैल पहलेको स्थानमें दौड़ गया। कहा जाने लगा है बैल खम्बको छेदकर दौड़ गया है। इसी तरह दोनों प्रजाएँ घबराए हुए हैं।

घना घासके मध्यमें खम्ब सोचने लगा कि शायद मुझपर लोगोंको सन्देह हो गया है, वह बैलके ऊपरसे उतर गया। दोनोंकी आँखें चार हो गयीं। बैलको खम्बसे भय था। इतनेमें खम्बके मनमें बहनकी बात स्मरण आया और बोला—"ङांबा निगथिबा पामहैबा" तुम लाल रंगके हो इस हेतु तुम्हारा नाम "ङांबा" पड़ गया। मेरे पिताजी तुम्हें बहुत प्यार करते थे, इस-लिए तुम्हें "पामहैबा" कहते हैं। मैं उनका बच्चा खम्ब हूँ। मेरी बहनका नाम खमनु है। तुम्हें मेरे माता-पिताने पाल-पोषकर बड़ा किया। फिर आज तुम्हारी सेवा करना मेरा कर्तव्य है। तुमको मेरी प्रार्थना स्वीकार करनी चाहिए।"

यह बैल दैविक था, उसको मनुष्योंकी भाषा मालूम थी। खम्बकी बात उसकी समझमें आयी। अकस्मात शान्त हो गया। इसके बाद खम्ब अपनी मातासे बनायी हुई रेशमकी रस्सी दिखा-कर बैलके सामने खड़ा हुआ।

इस रस्सी देखकर खूँखार बैल मेषकी तरह शांत हो गया। खम्बके आगे बढ़कर अपनी सींगपर रस्सी डलवायी गयी। पहले उसको बहन खमनु और थोइबीके सामने इस बैलको दिखानेके लिए ले आया। इस असभव दृश्यको देखते ही खमनु और थोइबी चकित हो गई; साथ ही उनके मनमें आनन्दकी लहरें उठीं। खाने पीनेकी सब चीजें निकालकर खम्बको खिलायीं। खाने पीनेके बाद खम्बने कहा "बहन! राजकुमारीके साथ घरमें जाइए। मैं इस बैलको पकड़नेका समाचार खुमन और मोइरांग दोनों प्रजाओंको बताऊंगा तब आऊँगा।" यही बात सुनकर बहन और राजकुमारी नौकामें चढ़कर चली गयीं।

जब खम्ब मोइरांग महाराजके स्थानपर इस बैलको खींचकर घोर जङ्गलमें आया तब दुष्ट नोंगबान इसी जङ्गलमें बाघका रूप धारण कर गरजता रहा। ऐसा आवाजके होते हुए भी खम्बके मनमें भय न था। फिर खम्बने मेघनादकी तरह गरजकर कहा "ठहरो ठहरो बाघ! मैं अभी आया हूँ। खम्बकी निर्भयता देखकर नोंगबान चला गया।

खम्ब इस बैलको खींचकर सभाके मध्य स्थलमें आ पहुँचा। लोगोंने समझा कि खम्ब मरा नहीं पर बैल पकड़ लाया बैलके पकड़नेपर सबके दिलकी कलियाँ खिल उठीं। सुखकी सीमा न रही। मोइरांग महाराजने खम्बका स्वागत किया।

एक खुंटो पर इस बैलको बाँध रखा इसके बाद वह अपनी मचानपर चढ़ गया। नाना प्रकारके खाने पिनेकी चीजें खिलायीं। दोनों महाराज प्रसन्न हो गए।

थोड़ी समयके बाद नोंगबानने पुकारा—"मैंने बैल पकड़ा है।" इस झुठो बातको सुनकर खुमन और मोइरांग चकित हो गए। मोइरांग महाराजने पूछा—"नोंगबान तुमने कैसे यह बैल पकड़ा है? बताओ किस तरह तुमने यह बैल पकड़ा है?"

नोंगबान सिर झुकाकर नम्रतासे जबाब दिया—'हे राजन् सुनिए, सारी बातें आपका दास सुनाता हूं। मैं अपने मित्र खम्बकी सहायताके लिए उसका पीछा करने जा रहा था। झाड़ीमें इस बैलने उसको दबाकर रखा तब अपने साथीके प्राण बचानेके लिए मैंने इस बैलकी पूँछ पकड़कर खींच ली और इस तरह बैल पकड़ लिया है। तत्काल खम्बने इस बैलके शृङ्गमें रस्सो डाल दी। आखिर उसने इस बैलको छीन लिया और वह महाराजके चरणमें उपस्थित करता है!"

दोनों महाराज आश्चर्यके साथ खम्बसे पूछने लगे—'क्या तुम्हारे मित्र नोंगबानका कहना सत्य है या नहीं?"

खम्बने जबाब दिया "नोंगबान एक पगदण्डीमें मेरी प्रतीक्षा कर रहा था, उसने कहा - मेरे दोस्त! तुम शिथिल पड़ गये होंगे मैं इस बैलको खींच ले आता हूं। पहले मैं राजी न हुआ, आखिर वह इस बैलको रस्सी पकड़कर चला गया।

ज्यों ही नोंगबानने बैलको रस्सी पकड़ी त्यों ही इस बैलने नोंगबानको दबा रखा वह डरके मारे रस्सी छोड़कर चला गया। इसके बाद फौरन मैं इस बैलको फिर पकड़कर ले आया हूँ।

मोइरांग महाराजने नोंगबानसे फिर पूछा—"कोंगयानब! तुम्हारे दोस्तकी जबान ठीक है या नहीं।"

"नहीं राजन्।"

दोनों महाराज, सेनापति-थोंगलेन मन्त्री-चाओबा आदि मुखियोंने सोच विचारकर कहा "अच्छा नोंगबान, हमारे सामने इस बैलको फिर पकड़ो। नहीं तो तुम्हारी नालिश नहीं सुनी जायगी। यही इन्साफ है।

राजाके हुक्म पाते ही नोंगबान उत्साहित होकर इस बैलको खींचनेके लिए शीघ्र ही घुस गया पर व्यर्थ हो गया। झूठी जबान बोलनेके लिए नोंगबानको राज दण्ड मिला इसके बाद खम्बने फिर इस बैलको पकड़ लिया। इस दृश्यको देखते ही खुमन महाराजने बुलाकर कहा 'भाई खम्ब, बैल पकड़नेकी तुम्हारी हिम्मत देखकर मेरे दिलमें आनन्दकी लहरें उछल पड़ीं। इस कारणसे मैं तुझे सुबर्ण धोती एक जोड़ा स्वर्ण कंकन, एक मणि-हार, * लमथांग खलक, एक कुरता, सोनेका कुण्डल, एक अस्त्र कवच, चाँदीका कामदानी हुक्का और पाँच तांबूल पारितोषिक दूँगा" यह कहकर यथोचित इनाम खम्बको दिया गया है।

* लमथांग खलक—एक प्रकारकी पतली और महीन चादर।

"तुम मोइरांग महाराज और तुम्हारा बड़ा बहनकी सेवा करके इस संसारमें प्रसिद्ध होकर जाते रहो" ऐसा वर खम्बको दिया गया है।

आखिर खम्बको मोइरांग महाराजने बुलाया और कहा "तुम्हारा काम सिद्ध हो गया, बहुत प्रशंसनीय है। मेरे भाईकी सुपुत्री राजकुमारी थोइबी आजसे तुम्हारी हो जायगी। इसके अतिरिक्त उन्होंने खम्बको बहुत इनाम दिया। खुमन और मोइरांग दोनों प्रान्तोंके प्रजागण बाग बाग हो गए। थोड़ी देर बाद खुमन राजाने मोइरांग राजासे कहा—"मेरे मित्र राजन्! मेरी राय यह है कि नोंगबानको राज दण्डसे मुक्त किया जाय। आपकी क्या सम्मत है"

खुमन राजाकी इज्जत बचानेके लिये नोंगबानको छोड़ दिया गया। ीड़ विसर्जित हो गई। खुमन और मोइरांगके दोनों राजा अ . अपने प्रसादमें पधार गए। खम्ब भी पन्द्रह सहायकोंके साथ इस बैलको खींचकर जा रहा था।

हैयेज. हंगुल, फौगाकचाओ, लफुपात, कैबुलयांगबी, खोंगजाई कम्बचिंग और सेन्द्रापात आदि स्थान पारकर खम्ब और पन्द्रह आदमी मोइरांगमें आ पहुँचे।

इस समय महाराज लाइचिंखु तेलहैबा लोक्ताक पारकर मोइरांग घाटमें उतरे। सभी प्रजा कंगजामें आ पहुँची। खम्ब भी बैलके

साथ आया ! महाराजको रानियों उनको सहचरियोंने महलका * याइबुङ्ग बजाया।

सब लोगोंको फल मूल और मिठाइयाँ खिलायीं। खाने पीनेके बाद महाराज भी राज भवनमें पधार गए। प्रजागण अपने अपने घरोंमें लौट गए।

खम्ब भी अपने घरमें आ पहुँचा।

सबेरा हो गया, इस बैलको चिङुथा थांगजिंके चरणमें चढ़ाया गया।

× × ×   × × ×   × × ×

* याइबुङ्ग—आनन्द प्रकट करनेवाला वाद्य यन्त्र ढोलकी तरह।

सातवाँ परिच्छेद

उकाइ काप्पा

(निशाना बाजी)

कुछ दिनोंके उपरांत मोइरांगके सब मुखिया कंगलामें सम्मेलित हुए। उकाइ काप्पके बारेमें सभा हुई। सबकी सम्मतियाँ प्रकट हो गयीं। युवराज भी उपस्थित हुए

"कल उकाइ काप्पा खुजुम तेली थोकपा, कंगा-जागा पुनबा" ये प्रसिद्ध खेल खेलेंगे, यह समाचार महाराजको सुनाया गया। महाराजको पसन्द हो आयी। इसके बाद राजाने घोषित किया कि सब प्रजाओंको कल अपने अपने वस्त्र अलङ्कार ठीक पहन कर उकाइ काप्पमें आना पड़ेगा, नहीं तो राज दण्ड मिलेगा।" यही खबर सुनकर सबलोग वापस चले गए!

युवराजके पास नाना प्रकारके सुन्दर कुरते थे, तो भी एक भी कुरता उसकी पसन्दमें नहीं आया। उनके मनमें यह याद आयी कि अगले महीनेमें उसकी पुत्री थोइबीने एक अति मनोहर चादर बुनी थी। उसी दिन युवराजने थोइबीसे कहा 'इस चादरके बननेके बाद मुझे दे दो. मैं कुरता बनवाऊंगा।'

पुत्रीने जबाब दिया "अच्छा पिताजी, समय आनेपर मैं आपको याद दिलाऊँगी।" इस ख्यालसे अपनी सुपुत्री थोइबीको

बुलवाकर कहा "पुत्री ! क्या तुमसे बनायी कम्रङ्की वही चादर मैं कल उकाइ काप्पमें पहन लूँगा। कहाँ है वह ?"

पिताजीकी इच्छा जानकर थोइबीने सोचा "मैंने तो यह सुन्दर चादर खम्बके लिए ही बुनी है। कैसे यह चादर पिताजीको दे दूँ ?" अन्तमें थोइबी विनोद स्वरमें कहने लगी "पिताजी, दया है। कपड़ेके बारेमें मैं आपसे क्या कहूँ। अब तक पूरी नहीं हो सकी। अपराध माफ कीजिए।" चिखुबा युवराज लज्जित होकर अन्दर गए।

इसके उपरान्त थोइबी सेनुके साथ खम्बके पास गयी। "यह कुरता कल उकाइ काप्पमें पहन लीजिए।" यह कहकर थोइबीने खम्बको दे दिया।

सुबह हो गयी, सूर्यदेव उदयगिरिसे झाँकने लगा मोइरांगके सभी मुखिया देवताओंकी प्रार्थना करने लगे। थांगलेन भी एक ज्योतिषीके साथ कारांगके हैथिङकी पुजा करता था। महाराज और प्रजा खोरि बाजारमें 'उकाइ' छोड़नेके लिए इकट्ठे हुए। उकाइका अर्थ है—एक खड़े श्यामपटपर चौरानवे राजाओंके सिर चिह्न अंकित हैं। इस काले तख्तेको एक आदमी पकड़कर खड़ा रहता है। फिर महाराज और युवराज एक एक करके निशाना तीर लगाकर क्रमसे सिरके चिह्नपर चलाते हैं। इस खेलका नाम "उकाइ काप्पा" या "खुजुम तेलो थोकपा" कहलाता है। परम्पराके अनुसार निशानी तख्ता पकड़नेवाला नामोइजम वंशका व्यक्ति होगा।

यदि किसी खिलाड़ीका तीर ठीक अपने निशानके सिर चिह्नपर लग सकता है तो उसका नाम अच्छा रहता और तीर तख्ता पकड़ने वालोंके शरीरपर लगा तो इसका फल अच्छा नहीं होता। यही मोइरांगकी संस्कृति था।

खेल शुरू होने जा रहा था, महाराज तीर धनुष लिए चलाया गया, इसी तरह पाँच तीर चलाये गए, पर सब व्यर्थ हो गये। महाराजके तीर उठानेके लिए नोंगबानको नियुक्त किया गया है, युवराजके लिए खम्बको। महाराजके चलानेके बाद युवराजने धनुष उठाकर बाण चलाया, इस समय खम्ब तीर उठा लाया था। अब थोइबीकी बनाई हुई चादर खम्बकी ओढ़ते देखकर युवराजके मनमें अधिक अप्रसन्नता थी। इससे खम्बको तीर उठानेके कामसे निकाल दिया गया। खम्बके बदले नोंगबानको रखा गया।

युवराजने चित्रपत्रपर तीर चलाया। इसके पश्चात महाराजके समक्ष नोंगबानसे उसकी पुत्री थोइबीका विवाह करनेके लिए निश्चय किया। महाराज लज्जावस्थामें मौन रहे सब लोग चुप-चाप रह गए।

फिर युवराजने कहा आजसे पाँचवें दिनमें थोइबीका शगुन होगा, नोंगबानको वचन दिया गया। इसके बाद सब लोग, महाराज सहित राज दरबारमें वापस आए। अपने अपने आसन पर बैठ गए।

राज दरबारमें मंत्री चाओबा नोंगथोन खड़े होकर सविनय महाराजसे कहने लगा। "सुनिए राजन! आपके पहले वचनके

विपरीत आपके भाई युवराजने किस इच्छासे राजकुमारी थोइबीका कन्य-दान नांगबानको क्यों दिया है?"

युवराजने उत्तर दिया "नोंगबान मेरे पक्षक है। इस कारणसे मैंने उसको कन्या दान दिया है. यही मेरा अधिकार है दादा नोंगथोन।"

युवराजकी बात सुनकर कोंगयानबको आनन्द हुआ। महाराज क्षण भर भी राजसिंहासन पर बैठ न सके। एकाएक राज महलमें घुस गये। सभा समाप्त हो गई। प्रजागण चुपचाप अपने अपने घरमें चले गए।

शाम हुई। थोइबी तो नोंगबानमें प्रेम नहीं करती थी। इस हेतु वह सेनुके साथ खम्बके निकट आकर बोली "कल परसों मेरी शादीके लिए नोंगबान शगुन ले आएगा। इस वक्त आपको भी मेरे लिए यत्न करना चाहिए। यह भुलियेगा मत।" यह कहकर राजकुमारी थोइबी लौट आयी।

प्रभात हो गया, सूर्यदेव उदयगिरिसे प्रकाशित हो रहा है। खम्ब प्रातःक्रिया खतम होनेके बाद फल मूल तोड़नेके लिए उसके पिताजीके पुराने मित्र कबुई मलांगके ऊंचस्थान पर आ पहुंचा। खम्बको देखते ही कबुई मलांगने बड़े आनन्दसे उसको स्वागत किया। उनके लिए विभिन्न प्रकारके फल मूल सब तैयारीमें थे। दो पहर तक खम्ब फल-मूलसे भरा एक टोकरा लाकर समतलपर आ पहुंचा। राजकुमारी थोइबी, सेनु और खमनु

तीनों बीच रास्तेमें खम्बकी मदद् देनेका इन्तजार कर रही थीं, तब खम्ब भी वहाँ आ पहुँचा।

थोइबो शीघ्रसे शीघ्र राज भवनमें वापस आयी। उसकी चाची महारानीसे सब हाल कह सुनायी। रानी भी मंजुर हुई। राजभवनसे फिर लौटकर अपने घरमें घुस गई। रातोंरात वह दुखके सागरमें डूबती रहती थी। वह बीमार होनेके बहाना बनाकर शय्यापर सो रही थी।

सबेराका समय था। कोंगयानबके एक सौ अनुदास आदि नगरवासी फल-मूलके हजारों टोकरे लिये राजमहलमें * "हैजिंग पुबा" के लिए आए। इस वक्त चिंखुबा युवराजने कहा "मेरी बेटी थोइबी बीमार हो गई है, इसलिए अपना शगुन वापस ले जाओ।" राजाज्ञा पाकर नोंगबान निराश होकर अपना-सा मुंह लिये अपने घरमें लौट गया।

थोड़ी देरके बाद खम्बका शगुन कुछ नगरवासियोंके साथ फल-मूल लाकर युवराजके भवनमें आ पहुँचा। अब थोइबोकी बीमारी छूट गयी। उसकी तबियत बहलने लगी। ये फल-मूल थोइबीने अपने हाथोंसे लेकर खाये।

पाँच दिनोंके पश्चात् मोइरांग महाराज संतान प्राप्त करनेके लिए थांगजि देवताके चरणोंमें, मछली और हिरन चढ़ानेको शिकार गए। चिंखुब भी महाराजकी सेवामें गए थे। इसके उपरान्त युवराज अपने महलमें लौट आये। इस समय उन्होंने फल

* हैजिंग पुबा—शगुनके समय कन्याके घरमें फल-मूल पहुँचाना।

मंगाये थे। उनकी ग्यारह स्त्रियाँ थीं, उनके पास वह दिन एक फल भी न था। अपना पुत्रीके पास आकर पूछा –"मेरी बेटी, तुम्हारे पास कहीं फल तो नहीं है? पिताजीकी सुमधुर वाणी पाकर राजकुमारी थोइबी एक पक्का फल लाकर आई और उसने, उसके पिताजीके हाथमें दे दिया। युवराजने यह फल खाया और फिर बड़ी प्रसन्नताके साथ थोइबीसे कहा "तुझे यह फल कहाँसे मिला? इसका नाम क्या है बेटी? ठीकसे बताओ।"

थोइबीने मुस्कराकर कहा "यह पक्का फल खम्बके शगुनके लिए है, इसका नाम * "चाक़ाओ-माक़ाओ है" कहते है। बेटीको बात सुनकर युवराजने क्रोधित होकर कहा—"किसलिए मुझे यह पापका फल खिलाया?"

थोइबी चली गई। इसीसे चिंगुबा खम्बकी मृत्युकी राह देखने लगा।

× × × × × × × × ×

* "चकाओ मकाओ है" — ऐसा फल है खानेसे वैरकी भावना भूल जाती है।

आठवाँ परिच्छेद

शामु खोंग येतपा

(हाथीके टाँगपर बाँधना)

दूसरे दिन चिंखुबने कांगबानको (नोंगबान) बुलाया। युवराज और नोंगबान दोनोंने एक गुप्त कमरेमें खम्बको मारनेकी कुमंत्रणा की। नोंगबानको यह बात बहुत पसन्द हो आयी। तीन आदमी नोंगबानकी सहायताके लिये नियुक्त किये गए।

मध्य रात्रीमें युवराजने महावतको बुलाकर हुक्म दिया— महाराजका हाथी अभी बाजारमें ले पहुँचाओ। युवराजकी आज्ञा पाकर शामुहनजब (महावतका सरदार) महाराजके याइशाको (राज हाथी) मोइगांग खोरि बाजारमें ले आया. फिर भी वह उस कुमंत्रणासे परिचित नहीं था।

दूसरी ओर राजाके झूठे परवानेसे खम्बको बुलानेके लिए अग्रदुत भेजा गया। अंधेरी रातमें यह दोलाइ पाबा (अग्रदुत) खम्बके घरमें जल्दी आ पहुँचा और, बाहरसे पुकारा :—

"खम्ब ! खम्ब ! तोम्पोक !"

"कौन है ?"

"मैं हूँ।"

"आपका परिचय।"

"मैं महाराजका कर्मचारी एक अग्रदुत हू। दरवाजा खोलिए।"

"किस कामके लिए इस समय यहाँतक आनेका कष्ट क्यों किया है ?"

"दरवाजा खोलिए, मैं सब कुछ कहूँगा।"

खम्बने दरवाजा खोला, दोलाइपाबने घरमें प्रवेश किया और कहा यह राज-आज्ञा है तोम्पोक! आपको राज महलमें अब एक जरूरी कामके लिये बुला रहे हैं इसीलिए मैं परवाना देने आया हूँ।"

खम्बने फिर पूछा "किस कामके लिए है, आप कुछ जानते हैं ? बताओ भाइया "

मुझे इसके बारेमें कुछ भी मालूम नहीं तोमपोक! जानेकी तैयारी करनी चाहिए।

इतनेमें बड़ी बहन खमनुने अग्रदुतसे बार बार प्रार्थना की कि मुंह अंधेरे ही उसके भाई खम्बको भेजा दिया जाय, पर अग्रदूत राजाज्ञाको टाल न सका। आखिर बहनका आदेश लेकर खम्ब जानेको तैयार था।

खम्ब राज महलकी तरफ सीधा गया। अग्रदूत आगे बढ़ गया। मध्य रात्रीका समय था। वह अकेला सुनसान राज पथपर जा रहा था। अमावश्याकी रात थी, बहुत घोर अंधकार था। आकाशके तारे खम्बको देखते ही टिम-टिमा रहे थे। सड़कके इर्द गिर्दमें नोंगबानके साथ उसके तीस अनुचर खम्बको मारनेके लिए अपने अपने हाथोंमें यथोचित हाथियारके साथ झाड़ीमें छिप रहे थे।

चलते चलते खम्बने सोचा कि किस कारणसे महाराज असमय मुझे बुला रहे हैं? यह सोचते सोचते खम्ब छिपे हुए नोंगबानके पास आ पहुँचा।

सहसा खम्बको देखते ही नोंगबान और उसके आदमियोंने खम्बको मारा। आहा! खम्ब बेहोश होकर भूमिपर गिर पड़ा। इस वक्त युवराजके हुकमसे बड़े हाथीको बढ़ाकर खम्बको हाथीके पैरमें बाँध लिया गया और बजारके कंकड़पर इधर-उधर खींचने लगा। पर पहले हाथीने नहीं माना। अतः महावतने गजकुम्भको शूलसे मारा।

आखिर हाथी भयके मारे धीरे धीरे चल रहा था खम्बको घाव करने लगा घायल होकर खम्ब बेहोश हो गया। इस समय शामुहंजबने युवराजसे कहा "युवराज, नोंगबान तो रस्सी बाँधनेका कायदा नहीं जानता, इसीलिए खम्ब कभी नहीं मरेगा। क्या मैं बाँध लूँ?"

युवराजने आज्ञा दी। शामुहजबा ऊपरसे उतरा और खम्बके पास आकर क्षीण स्वरमें कहने लगा "हे तोम्पोक खम्ब, मैं तुम्हारी सहायताके लिए आया हूँ। चिन्ता न करो, तुम्हारे प्राण बचानेके लिए एक नये कायदेसे रस्सी बाँध देता हूँ। यह कहते हुए शामुहजबने खम्बको रस्सीसे फिर बाँध दिया। आखिर हाथीके ऊपर चढ़ा और उसने हाथी चलाया। खम्बके शरीरमें घाव कम था पर क्या कहा जाय उसके शरीरसे पीचकारीकी तरह खुनकी धारा बहने लगा। बाजार खुनसे लाल हो गया।

दूसरी ओर क्या हुआ ? राजकुमारी थोइबीके स्वप्नमें नियति "अयांग लैमने" कहा हे मूर्ख राजकुमारी ! तुम्हारी प्राणनाथ खम्बको अभी खोरि बाजारमें तुम्हारे पिता और निर्दयी पापिष्ट नोंगबान मिलकर महाशक्तिशाली हाथीको निकालकर यमके घाटमें उतारका उद्यत हो रहे हैं। क्यों निश्चिन्त होकर सो रही हो ? जाग ! जाग ! आधे घंटेके अन्दर तुम्हारे पतिके प्राण बचाओ नहीं तो वह मर जायगा।"

सहसा राजकुमारी चेतन पाकर जाग उठी। तुरत उठकर अपने पिताजीके कमरेमें घुस गयी उसके पिता नहीं थे। सेनुको फौरन जगाया. हाथमें एक तेज छुड़ी पकड़कर बाजारकी ओर अकेली दौड़ गई। दूरसे बुलन्द आवाजसे पुकारती थी—'रहो रहो दुष्ट जनो ! किस कारणसे खम्बको मार रहे हो ?"

थोइबीको आकाशवाणीसी आवाज सुनते ही सब भागने लगे। युवराजतक वहाँ अपने बेटीके सामने ठहर नहीं सके।

शामुहंजबा बड़े हाथीपर चढ़कर चला गया तीस आदमी अपने अपने प्राण बचानेके लिए छिप गए। दूसरी ओर नोंगबान धीरे धीरे दौड़ रहा था। थोइबीने नोंगबानकी ओर छुड़ी फेंक दी। असलमें वह छुड़ी सतीकी शक्तिशाली हथियार है। ऐसा लगता है कि भगवान नोंगबानको बचानेके लिए सिरके बदले कुण्डलको कटवाया गया।

नोंगबान घबराकर अपने प्राण बचानेके लिए अधिक तेज दौड़ने लगा। एक पलभर भी रुके बिना तुरंत थोइबी बाजारके नजदीक आ पहुंची।

खम्ब बेहोश होकर भूमिपर गिर पड़ा। देखनेमें अति भयकर खुनकी धारा बह रही थी। सारा वतावरण दुःखमय था, खम्बको घायल देखकर राजकुमारी थोइबी घबरायी और क्षीण स्वरमे कहने लगी "मेरे प्राणनाथ! तुम्हे क्या हो गया है? सुनिए मेरे नाथ, मैं आ गई हूँ। चिन्ता न करो।"

खम्ब सुन नहीं सका। राजकुमारी थोइबाने अपने प्रिय खम्बका सिर उसका गोदमें उठाकर रात भर वहीं उनकी सेवा करती थी। क्या कहे, थोइबी * पानथोइबी देवीका अवतार थी, इस कारणसे खम्बके घावकी जलन शान्त हो गयी।

उषाकालमें फीरोइजाम्ब एक घोड़ेपर सवार होकर राजपथमें टहलता हुआ आ निकला। इस घटनाको देखा तो तुरन्त वह घर वापस आकर अपने पिता चाओबा नोंगथोनको खबर दी। थोंगलेनको भी खबर सुनायी। खमनु भी सुनकर घबरा गई। खमनु रो रोकर बाजारमें आई। उसके भाइ खम्बकी सेवामें लग गई। फीरोइजाम्ब भी मौजूद था। मन्त्री नोंगथोन भी आ गए थे। इस घटनाको देखकर बोला 'फीरोइजाम्ब क्या मामला है?" नोंगथोनको सब हाल सुना दी।

* पानथोइबी पार्वतीकी तरह एक प्रकारकी शक्तिशाली देवी।

नोंगथोनने फैरोइजाम्बसे कहा—"फैरोइजाम्ब, यह जखमी आदमी विचारके लिए राज दरबारमें ले जाओ।" मैं भी जल्द आऊँगा। यह कहते हुए नोंगथोन राज दरबारमें सीधे चल दिये।

× × × × × × × × ×

कंगला विचार

मनमें सन्देह होते हुए भी युवराज अकेले राज महलमें आ विराजे। सहसा नोंगथोन [illegible] राज दरबारमें शीघ्र ही घुस आया। दोनों आगबबूला हो गए।

युवराजको देखते ही नोंगथोनने प्रणाम किया, पर युवराजने आदर नहीं दिखाया चुप-चाप बैठे रहे थे। नोंगथोनने कहा

'छोटे भाई युवराज" ज्योंके त्यों शान्त थे

'छोटे भाई युवराज—"वागान नियो"

'...... ...'' फिर भी मौन।

'सुनिए मनाओ इबुङो! मैं भी मोइराङ राज्यका मन्त्री हूँ, युवराज'

क्या है नोंगथोन? यहाँ राज दरबार है। क्यों यहाँ पर बकवास करते हो? बैठ जाओ अपने आसनपर।"

"आसन पर बैठना मेरा अधिकार है, किस कारणसे युवराज कंगलामें सबसे पहले उपस्थित हैं? नोंगथोनने कहा।

ऐसा पूछनेका तुम्हें कोई हक नहीं। मेरी खुशी है नोंगथोन! तुम मंत्री हो, मैं युवराज हूं। तुम्हारा अधिपति मैं हूं! समझे।" युवराजने उत्तर दिया।

थोड़ी देर तक दोनों राज सभामें तर्क-वितर्क करने लगा! समय आनेपर महाराजके कर्मचारी आ गए। सब अपने अपने आसनपर बैठे हुए हैं। महाराज भी इस वक्त राज भवनमें विराजमान हो गये। उनके आस-पास दरबारके सब सदस्य उपस्थित थे।

इतनेमें फैरोइजाम्बने खम्बको पीठपर चढ़ाकर राज दरबारमें प्रवेश किया और सविनय कहा "सुनिए राजन्! एक अनाथ बालकको पिछली रातके समय यमके घाटमें उतारनेके लिए साजिश की गई! उसके प्राण पखेरु उड़ जानेवाले ही थे, पर दैवयोगसे बच गया। इसके संबंधमें हम न्यायके दरवाजेपर आए हैं।

थोड़ी देर तक "सबलोग स्तब्ध रह गए। फिर फैरोइजाम्बने कहा सुनिए राजन्! मैं आदर निवेदन कर रहा हूँ दया कीजिए इस अनाथपर!" इस क्षण सब मुखिया मौन रहे केवल उसके पिताजी नोंगथोनने फिर कहा "अरे! मोइरांग बेटा! तुम कौन हो? यहाँ राज सभा है। तुम्हारा व्यावहार कहाँ?

'मैं हूँ पिताजी, राजदरबार न्यायका भण्डार है। इसलिए घातकका पता लगानेको आया हूं।"

'क्या घटना है वत्स ! महाराजके सामने सब हाल सुना दो" नोंगथोनने कहा ।

नोंगथोन अपने आसनपर बैठ रहे थे। निवेदन करके फैरोइजाम्बने महाराजके चरणोंमे सब कैफियत बता दी यह समाचार सुनकर महाराजने नोगथोनको विचार करनेकी क्षमता सौंप दी, इस कारणसे नोगथोनने विचार शुरू किया और कहा "बताओ फैरोइजाम्ब उस घटनाका विवरण।"

फैरोइजाम्ब बोला 'सुनिए मन्त्री पिछली रात मेरे साले खम्बको महाराजके हुक्मके बिना बुलाया गया. युवराज और नोग बान दोनोंकी कुमन्त्रणासे उसको बड़े हाथीके पैरोंसे बाँधकर खूब मारा गया। सयोगसे उसके प्राण बच सके मन्त्री जी।"

फैरोइजाम्बका जबान सुनकर नोंगथोनने हुक्म दिया— 'नोगबानको अभी गिरफ्तार करो।" नोगथोनके पन्द्रह अनुचर भेजे गए ! नोगबानको झाड़ीमेंसे पन्द्रह अनुचरोंने राजदरबारमे उपस्थित किया। सब बात नोगबानसे सुनी। नोगथोनने इन्साफ खोजते हुए नोगबानके ऊपर लगाया हुआ राजदण्ड सबके सामने सुनाया। वह यह है 'जब तक खम्ब चंगा न होता तब तक नोंगबान और उसके अनुयायी करागारमे रहे।"

फिर महाराजने युवराजको ओर मुड़कर कहा—"भाई तुम युवराजका अधिकार कुछ नहीं जानते इसलिए अभी यहाँसे निकल जाओ।"

महाराजके आज्ञानुसार युवराज अपना सा मुँह लेकर इस दरबारसे बाहर हो गए।

इसके उपरान्त राज सभा विसर्जित हुई। सब अपने अपने घरमें लौट आए। खम्बका इलाज करनेके लिए राज वैद्यके साथ घरमें पहुँचाया। पाँच दिनोंके बाद खम्ब घावसे अच्छा हो गया।

नोंगबान और उसके अनुदास सब राजदण्डसे मुक्त हो गए। युवराज भी अपने महलमें आए। युवराजका मन स्थिर नहीं हो सका। एक दिन युवराजने उसकी पत्नी चिखुराकपीसे कहा—'तुम मेरी बेटी थोइबीसे समझा बुझाकर कह दो कि मैं उसका विवाह नोंगबानसे करना चाहता हूँ। इसलिए थोइबीको सुना दो।"

युवराजकी इच्छानुसार माताने उससे सब हाल सुना दिया, पर थोइबी राजी न हुई। आखिर स्वयं युवराजने थोइबीसे कहा "मेरी बेटी! आज मेरा वचन अविचलित है, नोंगबानके साथ तेरा ब्याह करनेके लिए मैंने अपनी अनुमति दी। अब तुम्हारी राय क्या है? राजी या नहीं। थोइबीने उत्तर दिया "पिताजीकी आज्ञाको पालन करना मेरा अनिवार्य कर्तव्य है, किन्तु पहले सालमें याना बैल पकड़ते समय पिताजी और चाचा महाराज दोनोंने मुझे खम्बके हाथों पर कन्या दान दिया था। अब तो मेरे प्राण खम्बको समर्पित किए गए; इतना ही नहीं

नारीके लिए एक ही पतिकी सेवा करना आवश्यक है. यह विधाताका नियम है, शास्त्रकी रूढ़ि है, पिताजी ! सोच लीजिए।

थोइबीकी तर्कसे युक्त बातें सुनते ही युवराजने गरजकर कहा "बेटी मेरे वचनके उल्लंघन करने पर तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। तुम्हें जरूर * तुमुराकपाके यहाँ बिक्रि करूँगा और जिस मूल्यसे फल मूल खरीदकर खाऊँगा और खिलाऊँगा। विदेशमें तेरा जीवन बीतेगा सोच लो।"

थोइबीने फिर कहा "आपकी मर्जी है, पिताजीकी आज्ञा पालन करूँगी विदेशमें रहना अधिक अच्छा होगा यह कहकर राजकुमारी थोइबी अपने कमरेमें घुस गई।

× × × × × × × × ×

* तुमुराकपा—तुमु प्रान्तका राजा।

नौवाँ परिच्छेद

लोइ थाबा
देशनिकाला

इसके पश्चात् चिंखुब युवराजने * तम्पाकयुम हजबको बुलाया। तम्पाकयुम हजब युवराजके समीप आ पहुँचा और सविनय प्रणाम किया और बोला "किस कार्यके लिए श्रीमान मुझको बुला रहे हो?

युवराजने कहा—'तुम पाँच आदमियोंके साथ मेरी पुत्री थोइबीको तुमुराकपके पास पहुँचाओ' यह कहकर युवराज और तम्पाकयुमहचबा दोनों किसी कामके लिए बातचीत कर रहे थे।

निशान्त हो गया, सबेरा होने लगा, राजकुमारी थोइबीने सहेली सेनुके साथ खम्बके पास जाकर सब समाचार सुनाया और वह जल्दीसे लौट आई।

खाने पानेका प्रबन्ध सब हो चुका। भोजन समाप्त होनेके उपरान्त थोइबी तम्पाकयुम हजबके साथ तुमुकी ओर प्रस्थान हो गई। थोइबी और सेनु दोनों प्रेमालाप करती रहीं। सेनुसे बिदा लेकर राजकुमारी थोइबी चलने लगी।

राजकुमारी थोइबीके तुमुमें देशनिकालेकी बात सुनते ही खम्बको बड़ा दुःख हुआ। वह बाँसकी एक छड़ी लेकर 'कुम्बी लैखोक

---

* तम्पाकयुम हजबा—एक प्रकारका मुखिया।

पुंगमें" जो मोइरांगसे तुमु जानेके रास्तेपर राजमहलसे करीब चार मीलकी दूरीपर है, थोइबीको राह देख रहा था।

थोइबी तम्पाकयुमहज़बके साथ जा रही थी। वहाँ खम्बसे मुलाकात हुआ। खम्बने उससे पूछने लगा "प्रिये, तुम्हारा तुमु जाना मैं बन्द करना चाहता हूँ। तुम्हारे लिए मैं हूँ, मेरे लिए तुम हो, चिन्ता न करो राजकुमारी।"

अपने प्रियतम खम्बकी बातें सुनकर थोइबीने करूण स्वरमें कहा "मैं तो पिताजीके सामने वहाँ जानेको राजी हो गई। इस लिए मेरा अपराध क्षमा कीजिए, नाथ।"

'अच्छा तो तुम्हारी आशा पूरी हो जाय। लो इस सात गाँठवाले बाँसको समझो यह छड़ी मैं ही हूँ।" खम्बने कहा।

थोड़ी देरतक दोनों प्रेमी प्रेमिका प्रेमालाप करनेके पश्चात थोइबी अपने प्रियतमसे चिराविदा लेकर आगे बढ़ी खम्ब मोइरांगमें फिर लौट गया।

चलते चलते थोइबी इथाई पहाड़ीके पास आ पहुँची। अब वे काफी थक गए, वहीपर विश्राम करने बैठ गए। इस समय थोइबीने अपना भोजन बाँधनेवाले केलेके पत्तेको डण्ठलको निम्न लिखित वचन कहकर जमीनमें लगाया।

'इस डण्ठलसे जीवित पौधोंकी तरह जल्दी ही एक कदलीबन बन जाओ, यह बात मेरी सतीत्वको प्रतीक है। फिर खम्बकी दी हुई छड़ीके दो गाँठें काटकर यदि मुझे अपने प्रियतमकी सेवा फिर पानेकी सम्भावना है तो इससे बाँसका जीता-जागता एक



५ । आइ, उपेन्द्र सिंह, इम्फाल, आर्ट कालेज।



६ । आर, के, नोरेन सिंह, इम्फाल, आर्ट कालेज देखिए पृष्ठ १५७

समुह बन जाओ।" यह कहते हुए छड़ीके एक टुकड़ेको जमीनमें उल्टा लगाया गया। उल्टे लगानेका कारण तो केवल यह है कि वास्तवमें वह राजकुमारी होनेके कारण पेड़-पौधों लगानेके ठीक तरीके नहीं जानती थी।

सतीका वचन व्यर्थ नहीं हो सका। पृथ्वी माताकी कृपासे यह बाँस और पत्रकी डण्ठल दिनोंदिन बढ़ने लगा। इसके बाद वह इथाई नदीको पार कर गई। पुनम पहाड़के नीचे आ पहुँची।

थोड़ी देरमें तोकपा-पहाड़के नजदीक आ गई। वाईखोंगके मध्यमें प्रवेश हुई और उचानपाकथा नुङ्गाइथाबी पहुँची। इसके उपरान्त थोइबीने कहा "मैं सत हूँ तो वहाँका पत्थर नरम हो जाओ।" यह कहकर दोनों पाद पत्थरके ऊपर रखे, संयोगसे पाद-चिह्न पड़ गए। ये पाद चिह्न अभीतक मौजूद हैं। इस पाद चिह्नको देखकर तम्पाकयुम हजब आदि चकित रह गए और कहते थे 'थोइबी सक्षात् पानथोइबी देवीका अवतार है।'

इसके पश्चात् वे धीरे धीरे चले गए। थोड़ी बहुत चलकर तुमुकी सीमापर आ पहुँचे। सामने तुमुराकपका राज महल देखा तुरन्त राजकुमारी थोइबी अनुदासोंके साथ राज फाटकमें खड़ी रही। इस वक्त तम्पाकयुम हन्जबने पहरेदारसे कहा "तुमुराकपको अनुमति लेकर हमें राज भवनमें प्रवेश करने दो।

प्रहरी उन्हें तुमुराकपके निकट आ पहुँचाया। थोइबीको देखते ही तुमुराकपा और तुमुराकपी दोनोंने उसका स्वागत किया। सब दासोंका याथोचित सत्कार किया गया। रातको तुमुराकपके महलमें सब ठहरे।

अगले दिन मोइरांग महाराजके अनुदास तम्पाकयुम हंजब और आदि कुछ सदस्योंकी एक गुप्त बैठक हुई। इसी सभामें तम्पाकयुम हंजबने राजकुमारीका सारा विवरण सुनाया। इसके पश्चात् नाइज हन्जब थोइबीसे बिदा लेकर अपने साथियोंके साथ मोइरांग लौट आया। फिर युवराजके चरणोंमें सब हाल सुनाया।

तुमुराकपने अपनी बेटी सनरिक चनिंखोम्बीको बुलाकर कहा 'मेरी बेटी! यह युवती राजकुमारी थोइबी है, इसे तुम अपनी सहेली समझो। सनरिक चनिखाम्बीके यहाँ अपना समय काटने लगी। पिताके आदेशनुसार दोनों प्रेमसे रहने लगीं। सनरिक चनिंखोम्बी थोइबीको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुई।

कुछ दिनोंके बाद चनिखोम्बी और थोइबीने "मैतै कांग" नामक एक विशेष खेल खेला। इस खेलमें थोइबने सनरिकको पराजित कर दिया। इसके बाद तुमुराकपने दोनोंको बुलाकर कहा—तुम दोनोंकी कपड़ बुननेकी कलामें परीक्षा जायेगी।

* तुमुराकपी—तुमुराकपकी पत्नी

सनरिकके बनाए कपड़ों से, राजकुमारी थोइबीके कपड़े अधिक सुन्दर थे। प्रत्येक काममें थोइबीने सनरिकको पराजित किया। इस हेतु थोइबीके प्रति सनरिकके मनमें ईर्ष्या पैदा हो गई।

कुछ दिनोंके बाद सनरिकने राजकुमारी थोइबीको सोरा नामक एक पहाड़ीके ऊपर लकड़ी काटनेके लिए भेजा। राजकुमारी भी पहाड़ पर चढ़कर कुछ लकड़ी काटने लायी। कहीं कहीं लौसी झीलमें * लोंगसे मछली पकड़ी थी।

दूसरे दिन थोइबी बीमार पड़ी, पर सनरिकने उसे काम करनेकी आज्ञा दी। उस समय थोइबीने उत्तर दिया— मेरी तबीयत ठीक नहीं। अभी काम करनेकी शक्ति मुझमें नहीं।" इस हेतु थोइबी और सनरिक दोनोंमें गोलमाल हो गया। तुमुराकपके पास मामला पेश किया गया।

तुमुराकपने उसकी बेटीको सजा दी और उपदेश देकर कहा "मेरे मित्रकी पुत्री थोइबी पानथोइबी देवीका अवतार है, क्यों तुम्हें लकड़ी काटने मजबूर किया गया। भविष्यमें ऐसा कहना उचित नहीं"

अगले दिन तुमुराकपने थोइबीको राजमहलमें ठहरानेका प्रबंध किया।

---

* लोंग—मछली पकड़नेकी जालीदार टोकरी

दो महिने बीत चुके। एक दिन चिखुब युवराजके सपनेमें थांगजिं ईश्वरने कहा "युवराज तुम्हारी बेटी थोइबीका कोई कसूर नहीं इसमें तुम्हारा ही दोष है। इसलिए तुम अपनी बच्चीको तुमुसे जल्दी बुला लाओ, नहीं तो तुम्हारे राज्यका सर्वनाश हो जायगा।"

× × × × × × × × ×

दसवाँ परिच्छेद

लोइकाबा

देश निकालेसे लौट आना

जागनेपर युवराजको अत्यधिक दुःख हुआ। मुँह अन्धेरे ही वे नाइज हन्जबको बुलाकर कहा—"तम्पाकयुम हन्जब! तुम तुमुराकपसे मेरी बेटी थोइबीको बुला लाओ। युवराजके आज्ञानुसार तम्पाकयुम हन्जब चार अनुदासोंके साथ शीघ्र तुमु प्रान्तमें जा पहुंचे। सब समाचार सुनाए गए। तुमुराकपने प्रशंसा की "कल्याणकी बात है हन्जब! मेरा दोस्त युवराज दयालु है, वह अपनी बेटी थोइबीको बुलाना चाहता है।"

यह शुभ समाचार सुनते ही बहुत प्रसन्न हुई एक रात तम्पाकयुम हन्जबा और उसके अनुचर तुमुराकपके महलमें ठहरे।

प्रभात हो गई, प्रथम पहरका समय था। तुमुराकपने थोइबीको नाना प्रकारके गहने दिये। इतना ही नहीं दस-अनुदास, रेशमके दस सन्दूक, रंग-बिरंग आभरण दिये गये हैं। *

राज-कुमारी थोइबो अपने देशमें लौट जानेके लिए खा-पी गई। यात्रा करनेके लिए सब सजधजमें लगे हुए थे

दूसरी ओर क्या हुआ—युवराजने नोंगबानको बुलाकर हुक्म दिया 'नोंगबान, आज ही मेरी पुत्री थोइबो तुमुसे वापस आयेगी अतः तुम्हें कुम्बी तेरा खामें प्रतीक्षा करो" यही आज्ञा नोंगबानको दी गई। युवराजकी कृपा वाणी सुनकर नोंगबान फूला नहीं समाया। नोंगबान आनन्दके सागरमें उमड़ता हुआ अपने गृहमें लौट आया।

थोइबोकी प्रतीक्षाके लिए नोंगबान बड़ी धुम-धामसे साज-बाज करने लगा। उसके दास अनुदास सब तैयार हुए। इतनेमें सौरा जो नोंगबानके अनुदासोंमेंसे सर्वप्रिय है और जो परिहास और व्यंग भी खूब जानता है, परन्तु जो सीधा-सादा आचरण वाला था, वह आ पहुँचा। वह भी जाकर थोइबोको ले आनेके लिए जल्दी तैयार हुआ।

* नोट—इस दसवीं अध्यायमें कहा जाता है कि थोइबो विदा होनेके एक दिन पहले तुमुक देवता। सर्वांगके समीप नाच करती थी। पर प्राचीन ग्रन्थोंमें इसके सम्बन्धमें कुछ नहीं मिला, इसलिए नाचके बारेमें कुछ विवरण नहीं दिया जाता।

नोंगबान दासोंके साथ घोड़ेपर सवार हो कुम्बी तेरा खाकी ओर जा रहा था। कुम्बी तेरा खामें एक पेड़के नीचे राज कुमारी थोइबीका स्वागत करनेके लिये वे सब इन्तजार कर रहे थे।

राज महलका दृश्य भी अनोखा है। असलमें थोइबीकी माता नोंगबानको प्रेम नहीं करती थी, इसलिए वह सेनुको बुलाकर बोली - "तुम खम्बके पास अभी जाओ और उससे यह कहना कि आज थोइबी तुमुसे लौट आनेवाली है! उसकी प्रतीक्षा करनेका अधिकारी नोंगबानको बनाया गया है। अतः वह भी वहाँ जाकर नोंगबानसे थोइबीको छीनकर अपने पास रखे। फिर यह भी समझाना कि मुकद्दमेका समयमें भी मैं उसके पक्षमें रहूँगी। दूसरी बात यह है कि यदि वह मेरी बेटी थोइबीको उसके पास रख सके तो बहुँत अच्छा होगा "

माताजीकी आज्ञा पाकर सेनु फौरन खम्बके पास आई और सब समाचार कह गई! सेनुकी बातें सुनकर खम्ब बहुत आनन्द हुआ। नोंगबानको मारनेके लिए वह वस्त्र अलंकार पहनता था, इसे देखकर बड़ी बहनने खम्बसे कहा—"खम्ब तुम कहाँ जाओगे।" खम्बने फिर उत्तर दिया—"बड़ी बहन, आज ही राजकुमारी थोइबी तुमुसे लौट आनेवाली है। उसका स्वागत करनेका भार युवराजने नोंगबानपर सौंप दिया। दूसरा तरफ माताजीकी आज्ञा है कि राजकुमारीका स्वागत करना मेरा कर्तव्य है और यह भी कहती है कि नोंगबानको कुम्बी तेरा खकी जगह पर मारकर उससे थोइबी

छीनकर लाओ। अतः मैं कुम्बी चलनेको तैयारी हूँ। बहन! आपकी राय क्या है?"

खमनुने कहा—"अब ऐसा करनेका समय नहीं है! यदि थोइबी सच्चा सती है तो ईश्वर हमारे लिए सब कुछ करेंगे। तुम धीरज रखो। यही शान्तवना देते हुए खम्बको रोक दिया। खम्बको जानेकी शक्ति नहीं, घरमें तैयार होकर ही रहा। सेनु भी माताजीके पास लौट गई।

राजकुमारी थोइबी पुनः यात्राके लिए साजबाज कर रही थी। सुयोग्य गहने पहनती थी। इसके बाद तुमुराकपके चरणोंमें प्रणाम किया। माता तुमुराकपीसे आशीर्वाद मांगा। अपनी प्रियसी सहेली चनिखोम्बीसे विदा ली विदा लेनेके बाद कूच करने लगी। थोइबी पालकीके ऊपर चढ़ी, पन्द्रह आदमियोंके साथ धीरे धीरे चलने लगी। तुमुराकपाको आम जानताने थोइबीको धन्यवाद दिया। थोड़ी देरके बाद उचानपोकपी, नुङ्गपाकथाबीके निवासियोंको स्वर्ण मुद्राएँ और कुछ रुपये दिये थे। थोड़ी देर चलकर इथाई पहाड़के नजदीक आ पहुँची। पिछले साल लगाए कदली और बाँस दोनों क्रमशः छोटे मोटे बन बन गए। वहीं थोइबी पालकीसे उतरकर थोड़ी देर विश्राम कर लेती थी।

अङोम सेलुंगबा नोंगबान भी कुम्बी तेरा खामें थोइबीकी प्रतीक्षा कर रहा था। थोइबी अराम करनेके पश्चात् फिर जाने लगी। कुछ समय चलकर दोनोंकी मुलाकात हुई। इस समय

समझदार थोइबीने सोचा कि किसी उपायसे नोंगबानसे छूटना है। इस ख्यालसे थोइबीने छल करके नोंगबानका यथोचित आदर दिखाया।

नोंगबानने भी राजकुमारीका खुशी खुशीसे स्वागत किया। थोइबी फिर अभिनय करके यह वचन कहती थी। * इतौ नोंग-बान! इतौ नोंगबान।" थोइबीकी मधुर बाणी सुनते ही नोंगबान का वक्षस्थल फूल उठा। उसके मनमें हवाई किले बन रहे थे।

† थोइबीने फिर अभिनय करके कहा मैं पालकीपर चढ़ना नहीं चाहती हूँ। आप मुझे प्यार करें तो मेरी पालकीपर चढ़िए, बदलेमें आपके घोड़ेको मेरे लिए ...... ।

प्रियसी थोइबीकी बातें नोंगबानके कानोंमें हरदम गूँजती रहीं। उसकी बात मान ली नोंगबानने। राजकुमारीके हाथोंमें वह घोड़ा सौंप दिया थोइबी घोड़पर चढ़ी और नोंगबान पालकीपर।

---

† नोट – इस अध्यायमें कहा जाता है कि राजकुमारी थोइबीने कुम्बी तेरा खा एक सा वृक्षके नीचे पहुँचकर बीमार होनेका बहाना किया। इस समय नोंगबान फल मूल लाकर थोइबीको खिलाया। थोइबीने फल चखकर फेंक दिया और कहा "यह फल खाते ही मुझे कबोराई (तुमुके एक प्रकारका रोग) आ गई। तत्काल दासोंने दूर फेंक दिया। इसका बिवरण पुरानमें नहीं मिला. इसलिए इसके बारेमें चर्चा नहीं की गई है।

---

* इतौका अर्थ है—पति।

दोनों दास-दासियोंके साथ मोइरांगकी ओर धीरे धीरे चलने लगे। मानो इन्द्र और इन्द्रानी नन्दन काननकी ओर दास दासियोंके साथ जा रहे हों।

थोड़ी देर चलनेके उपरान्त थोइबीने कहा "इतै नोंगबान! आपके घोड़ेकी चाल मैं नहीं जानती इसलिए मुझे परखने दीजिए।"

नोंगबानने उत्तर दिया "आपकी जैसी मर्जी राजकुमारी।" थोइबी तम्पाकयुमहन्जबको इङ्गित करते हुए घोड़ेकी पीठपर चढ़ी और तुरन्त इधर उधर नोंगबानके सामने दौड़कर फिर नोंगबानके समीप लौट आई। यों ही दो तीनबार घूमाफिराकर दौड़ती थी, आखिर अवसर पाकर मोइरांगकी ओर तेजसे दौड़ने लगी।

नोंगबानको आश्चर्य हो गया। वह चकित होकर देखता रहा। अर्द्ध पथमें सेनुने थोइबीका इन्तजार कर रही थी। उसको देखते ही थोइबीने दूरसे पुकारा "सेनु! सेनु!! मेरे पिताजी बहुत निर्दयी है। इसलिए मैं उनके पास नहीं जाऊँगी। आज तो मेरे प्रियतमके पास ठहरूँगी।"

एक क्षणतक रुक न सकी। थोइबी शीघ्र ही खम्बके घरमें दौड़ आई। थोईबीको देखते ही खम्बने सहसा दौड़कर घोड़ेकी लगाम पकड़ ली और थोइबीको उतारा। थोइबीको सहसा देखनेसे खमनु और खम्ब आश्चर्यान्वित हो गए। उसने (खम्बने) बड़ी खुशीसे उसका स्वागत किया।

दूसरी ओर क्या हुआ? नोंगबानने सोचा कि उसके आगे रूपवती राजकुमारी थोइबी घोड़ेपर सवार होनेकी इच्छा प्रकट

करतो थी, लौटनेके ख्यालसे नोंगबान भो कुछ समय देख रहा था। परन्तु उसके आगे थोइबी बहुत तेजसे दौड़ गई।

इस दृश्यको देखकर वह संदेहके साथ उसको पकड़नेके लिये पालकीसे उतरकर थोइबीके पीछे दौड़ा, तो भी व्यर्थ हुआ। उसकी आँखोंसे राजकुमारी ओझल हो गयी। आखिर कोई उपाय न रहा। जब नोंगबान चिंखुबके समीप आ पहुँचा और उसने थोइबीका विवरण सुना दिया तब युवराजने बहुत नाराज होकर उसको निकाल दिया।

कोंगयानबके (नोंगबान) सिरपर पहाड़ टूट पड़ा और उसका सिर चकरा गया। आखिर वह राजमहलसे बाहर निकला और घूमाफिराकर थोइबीको खोज करता था। नोंगबानका घोड़ा खम्बके घरके नजदीक चंगै झीलमें चर रहा था। संयोगसे नोंगबान अपने घोड़ेको देखते ही चकित हुआ। उसने अनुमान किया कि थोइबी खम्बके घरमें प्रवेश कर गई होगी, इसी विचारसे वह एक कदम भी पीछे न हट कर शीघ्र खम्बके गृहमें आया और पूछने लगा 'थोइबी है ?"

खम्बने उत्तर दिया "हाँ यहाँपर राजकुमारी है तुम क्या चाहते हो ? रहो रहो भाइया !" यह कहकर खम्ब नोंगबानको मारनेके लिए एकाएक पास समीप आया, मानो सिंह बकरीको ग्रास करनेकी इच्छासे कूद पड़ा हो।

इस समय नोंगबान भयके मारे फौरन दौड़ गया उसे दूसरा उपाय नहीं सूझा। वह अपने घरमें लौट आया। धीरे धीरे

थोइबीके पन्द्रह आदमी और नोंगबानकी पालकी युवराजके पास पहुँची। सेनु भी युवराजके चरणोंमें आकर नम्रतासे बोली "आपकी कुमारी थोइबी अभी खम्बके घरमें ठहरी हुई है।

युवराजने कहा "क्या किया जाय, मेरी पुत्रीकी इच्छा पूरी हो जाय।" सेनु सब अनुदासियोंके साथ थोइबीके पास आ पहुँची। राजकुमारीने सबका आदर सम्मान किया। इसके बाद खमनु द्वारा सब समाचार नोंगथोन और थोंगलेनको सुनाये गये!

नोंगबान को बहुत अफ़सोस हुआ। उसके मनमें तरह तरहके विचारको आने लगे कि कल चैराप दरबारमें (न्यायालय) खम्बके विरोधमें एक नालिश पेश करूँगा।" वह सोचते सोचते निद्रा देवीकी गोदमें सो गया।

समय आनेपर कंगला विचार देखनेकेलिए सूर्यदेव उदय-गिरिसे झाँकने लगा नोंगबान जलपान करनेके पश्चात् अपने आभूषण पहनता था। हाथमें तलवार, ढाल और शूल पकड़कर राजदरबारमें जा रहा था। इस वक्त महाराज दरबारमें विराजमान हो रहे थे। नोंगबानने महाराजके समीप आकर प्रणाम किया और थोइबीके बारेमें कहने लगा—सुनिए * पुरिकलाई! कुम्बी तेराखाके घोर जंगलमें मेरा दोस्त खम्ब अपने दलके सहारे जबर-दस्तीसे राजकुमारी थोइबी मेरे हाथोंसे छीन ले गया। उस समय मेरी शक्ति नहीं रही, क्योंकि खम्बके साथ तीस अनुचर थे। इस अन्याय आप विचार कीजिए।

---

* पुरिकलाई—मोइरांग महाराजको सम्बोधन सूचक उपाधि।

नोंगबानकी बात सुनकर महाराजने आज्ञा दी—"नोंगबान ! अभी विचारके लिए कंगला याइबुंग बजाओ।" महाराजका हुक्म पाकर स्वयं नोंगबानने फौरन्त ढोल बजाया। ढोलकी गम्भीर ध्वनि सुन कर सब प्रजा घबराई। मोइरांगके सभी सदस्य यकायक राजदरबारमें इकट्ठे हुए।

नोंगथोन चाओबने ढोलकी ध्वनि सुनते ही दस दासोंको खम्बके पास भेजा और कहनेको कहा—थोड़ी देर बाद खम्बके सहित राज दरबारमें अवश्य ही आयें। सभी अनुदास खम्बके पास चले गए।

महाराज भी कंगलामें आ विराजे और युवराज अपने आसन पर बैठ रहे थे। इतनेमें नोंगथोन और थोगलेन दोनों राज दरबारमें आये और सभासदोंको प्रणाम करके अपने अपने आसन पर बैठ गए। एक क्षणके बाद नोंगथोन अपने आसनसे उठा और महाराजके सामने हाथ जोड़कर बोला "राजन्! किस कारण आज कंगला याइबुंग बजाया गया ?"

महाराजने जबाब दिया "सुनो दादा नोंगथोन ! नोंगबानकी एक नालिश पेश आई है कि—कल मेरे भाई चिंखुबने नोंगबानको कुम्बी तेराखसे थोइबीको लानेका अधिकार दिया था। इसके अनुसार वह वहाँसे थोइबीके साथ आया, किन्तु अद्ध पथमें खम्ब और उसके तीस अनुचारोंने नोंगबानके हाथोंसे बलपूर्वक राजकुमारीको छीन लिया। इसके बारेमें विचार करनेके लिए नालिश उपस्थित हुई है। इस हेतु कंगला-याइबुंग बजाया गया है।

महाराजका बचन सुनकर दादा नोंगथोन धीरजसे बैठ गया। महाराज नोंगथोनको विचार करनेकी क्षमता प्रदान की गई। इसके अनुसार नोंगथोन सभाके मध्यमें नोंगबानको बुलाकर जबान लेने लगा। नोंगबानने सब बातें बता दीं। महाराजका परवाना लेकर खम्बको राज दरबारमें हाजिर करनेके लिये दो दोलाईपाबा (चपरासी) भेजे गए।

जब खम्बके घरमें नोंगथोनके दास-अनुदास, थोंगलेनके दस अनुचर और तुमुराकपके दस आदमी सभी अपने अपने बेश-भूषा पहन रहे थे, तब महाराजके कर्मचारी भी आ पहुंचे परवाना दिखाकर सब हाल सुनाया गया। अवसर पाकर थोइबीने कहा— "सुनिए नाथ, मेरी राजदरबारमें कोई बात उठी तो कोई संकोच कीजिए। आप भी समझ गये होंगे! नोंगबानके हवाले मुझे कभी न करना। मेरी इच्छा पूरी कीजिए। याद रखिए मनुष्यो के संकल्पकी कितनी महत्ता है?

खम्बने फिर उत्तर दिया 'चिंता न करो राजकुमारी, तुम्हारे लिए मैं हूँ; मेरे लिए तुम हो। आखिर खम्बने बहनके चरणोंमें प्रणाम किया और राजदरबार जानेको बिदा ली। बड़ी बहनने आशीर्बाद दिया। खम्ब अपने * हाकथंगता दाहिने हाथमें और एक मजबूत † तारोनता बायें हाथमें पकड़कर यात्रा करने लगा।

* हाकथंगता—पहला शूल।

† तारोन-ता—दूसरा शूल।

मुबा नामक एक अनुदास उसके आगे रेशमका आसन लेकर जा रहा था। खम्बका तीस आदमी अर्द्ध-चन्द्रके समान घेरेकर कंगलाकी ओर जा रहे थे।

राज पथमें सब राहगीर खम्बको देख रहे थे ! बीच रास्तेमें थोइबीकी माता उसकी प्रतीक्षा करती रही और मंगलके लिए आशीर्वाद देती रही। इसके उपरान्त खम्ब सीधे राजदरबारमें आ पहुँचा। कंगलामें राजादि सदस्यगण अपने अपने आसन पर बिराजमान हो रहे। खम्बने सबको प्रणाम किया।

महाराजने खम्बको पुकाराकर कहा 'खम्ब ! बात सुनो, कल नोंगबानको थोइबीके साथ आनेका युवराजने हुक्म दिया था। इसके अनुसार थोइबीको लेनेका अधिकार नोंगबानको था दोनों मोइरांगकी ओर आ रहे थे उस समय क्या तुमने अर्द्ध पथमें नोंगबानके हाथोंसे थोइबीको जबरदस्तीसे छीन लिया था या नहीं ? तुम्हारे स्वर्गीय पिताजी पुरेंबकी साक्षी रखकर मेरे सामने सच्ची बात बताओ, नहीं तो तुम्हें राजदण्ड मिलेगा।"

खम्बने निर्भय होकर उत्तर दिया "राजन् ! बेइज्जतीका काम मुझसे कभी नहीं हो सकता आपकी पुत्रीका कन्यदान बैल पकड़ते समय मोइरांग और खुमनकी सभामें तानवार हो गया था। वह भी मेरे साथ इस कारणसे स्वयं राजकुमारी नोंगबानके घोड़े सवार होकर मेरे घरमें आयी थी। यह मेरा दोष नहीं। इतना ही नहीं, उसने यह भी कहा 'स्त्रीकी रक्षा करना पतिका कर्त्तव्य

है, इसलिए मैं आपकी कन्याके सती धर्मकी रक्षा करनेके लिए आया हूँ। राजन्! मेरा अपराध क्षमा कीजिए।"

राजाने नोंगबानसे फिर पूछा "अरे नोंगबान, तुम्हारी क्या राय है? तुम युक्ति दोगे या नहीं?"

नोंगबानने जबाब दिया "युक्ति देनेका क्या मतलब? कल स्वयं खम्बने राजकुमारीको जबरदस्तीसे छीन लिया।"

"अच्छा तुम्हारा कोई साक्षी है?"

"नहीं राजन।"

महाराजने अपने राज कर्मचारियोंको बिचार करनेकी क्षमता सौंप दी। इस समय नोंगथोन मन्त्री एकबार मोइरांगके * उर कपा और † लाइजिंगहनबसे पूछने लगा "आप लोगोंकी क्या सम्मति है?"

दोनोंने फिर उत्तर दिया "यदि राजकुमारी नोंगबानको प्रेम नहीं करती तो, उसे स्त्रीका मूल्य वापस करना अच्छा होगा, यही हमारी राय है।"

राज सभामें श्रीमान नोंगथोन मंत्रीने घोषित किया "सुनिए सदस्यगण पहले स्वर्गीय श्रीयुत महाराजके राज कर्मचारी उराकपा और लाईजिंगहनब दोनोंको राय स्वीकार या नहीं?"

पदच्युत लाईजिंगहनब फिर कहने लगा "मेरा अपराध क्षमा कीजिए, भूल हो गई, दूसरी राय है कि राजकुमारी जैसी

* उराकपा—बनाधिकारी (Forester)।

† लाइजिंगहनब शिकारीका सरदार।

* लैमसिजके दहेजको वापस करना नियमके विरुद्ध है। साधारण नारियों का दहेज वापस किया जाता है। यही परम्परासे चली आ रही है।

इतनेमें थोगलेन फिर कहने लगे - "युवराजने कोगयानबको अपनी कन्याके विवाहका वाग्दान दिया था। यह विचार सामान्य नहीं, इसीलिए मेरा विचार है कि देव-साक्षी देखना उचित होगा "

सेनापति थोंगलेनका विचार सुनकर महाराज खम्ब और नोंगबान दोनोसे पूछने लगे। खम्बने उत्तर दिया "क्या साक्षी है? राजन्।" यह वचन सुनते ही थोंगलेनने फ़ौरन् कहा "साक्षी तो यह है - 'चाइना पुंग थोनबा" इसका मतलब है कि राज फाटकके समीप प्रायः दस हाथोंके फसलेपर एक एक गढ़हा खोदकर दोनोंको अपने नसीबका खेल देखनेकेलिए इस गढ़में कमरतक दफनाना होता है। इसके बाद दोनों हाथोंसे अपने अपने सुयोग्य भाला पकड़कर फेंकेंगे। इस प्रतियोगितामें जिसकी जीत होगी उसको थोइबी मिलेगी।

यही विचार सभाने समर्थन किया। इस कानूनके मुताबिक खम्ब और नोंगबान दोनों भी राजी हो गई। सब लोग राज द्वारके समक्ष इकट्ठे हुए। यह तमाशा अद्भुत था। लोगोंका हृदय हिल उठा।

खम्ब और नोंगबान शूल मुकाबिलेके लिये अपने अपने वीर वेष धारण कर रहे थे। विधाताकी लीला देखनेके लिए दोनों

---

* लैमसिजन—राज-वंशकी नारी।



९। जि. ब्रजमणि शर्मा इम्फाल, आर्ट कालेज



८। दामोदर सिंह, (त्रिपुरा) इम्फाल आर्ट कालेज, देखिये पृष्ठ १७२

गढ़में कूद पड़े, सब तैयारियोंके पश्चात् यकायक फुबाला बस्तीके * लौमालाकपा नामक एक बुजुर्गने यह समाचार सुनाया कि एक † बालिकाको खोइरेनताकके घोर जङ्गलमें बाघने दबोचा। इसके बारेमें वह राज दरबारमें खबर सुनाने आया था और महाराजसे उस बाघको पकड़नेकी प्रार्थना की।

यह खबर सुनते ही थोंगलेनने दोनोंके शूल-युद्धको रद्द कर दिया और कहा "खम्ब और नोंगबानको चाइनापुंगके बदले बाघ पकड़नेका काम सौंप देना अच्छा होगा। यह भी भाग्यका दूसरा खेल होगा।

यह विचार गाँववालोंके लिए अच्छा होगा। "थोंगलेन सेनापतिका निर्णयसे राजा और सब मुखिया सहमत हो हुए। थोंगलेनने घोषणा की।" सुनिए प्रजागण! जो आदमी खोइरेन ताकका बाघ पकड़ सकता है, उसके साथ राजकुमारीकी शादी होगी। इस न्यायपर सबलोग सन्तुष्ट हुए। खम्ब और नोंगबान भी इस पर राजी हुए।

महाराज नोंगथोनको हुक्म दिया—दादा चाओबा! तुम मोइरांग और फुबालाके सभी प्रजागणके प्रति एक विज्ञापन निकालो

---

* लौमी लाकपा—खेती रखनेका सरदार।

† बालिका—कहा जाता है, यह बालिका का नाम कुञ्जमाला कहते है, पर इसका विवरण पुरान-ग्रंथोंमें नहीं मिला, इसलिए उसके बारेमें मैंने कुछ नहीं लिखा।

और खोइरेनताकके घने जङ्गलमें बाघ पकड़नेका * केबल और मचान बनवा दो।

इसके उपरान्त सभा विसर्जित हो गयी। खम्बने भी अपनी प्रियसी राजकुमारीको सब समाचार सुनाया। राजकुमारी भी यह खबर सुनते ही अपने पिताजीके निकट आकर चरण छूकर प्रणाम करने लगी। अकस्मात् युवराजके हृदयमें वत्साल्य प्रेमका नव अंकुर जाग उठा। यह नियतिकी लीला है। पुत्रीको आलिंगन कर ऐसा वर दिया "मेरी बेटी, तुम जीती रहो, तुम्हारे प्रति अन्याय हो गया है, पर अब चिङ्गु थांगाजीकी कृपासे तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।

प्रेमालिंगन करनेके पश्चात् युवराजने अपनी स्नेहमयी बेटीको एक ताकतवर घोड़ा, एक मजबूत शूल और दस अनुदास दहेजके रूपमें दिये।

सब माताओंके हर्षकी सीमा न रही। स्वयं थोइबीकी माता चिखुराकपी अपनी बेटीको वर देने लगी। थोइबी माता-पितासे विदा लेकर खम्बके पास लौट आयी। सब हाल खम्बको भी सुनाया गया।

सबेरा हो गया. थोंगलेनने खम्बको बुलाकर खूब खिलाया था। भोजनके बाद थोंगलेनने अपने पुत्रको बाघ पकड़नेकी विधियाँ होशियारीसे समझायीं। उसके स्वर्गीय पिताजी पुरेनबके सब गहनोंसे खम्बको विभूषित किया गया। थोंगलेनने खम्बको

* केबल—बाघ पकड़नेका किला

दो शक्तिशाली भाल दिये, साथ ही तीन इमानदारी अनुगामी भी उसकी सहायताके रूपमें भेज दिये गए।

बाघ पकड़नेकी शिक्षा देनेके उपरांत खम्ब अपने पिताजी थोंगलेनसे विदा लेकर चला गया यह समाचार सुनते ही थोइबी चैनकी बंशी बजाने लगी और बोली "मेरे प्राणनाथ, यदि मैं सती साध्वी पतिव्रता हूं तो ईश्वर आपकी रक्षा करें।" उसने यह वर देते हुए पतिके चरणोंमें प्रणाम किया।

नोंगथोन चाओबने खम्बकी मददके लिए तीस पैदल सैनिक भेजे थे। खम्ब बाघ पकड़नेका पोशाक पहनता था और अपनी बहनसे विदा लिया उसकी बड़ी बहनने आर्शीवाद दिया था।

दूसरी ओर क्या हो रहा था, नोंगबान भी बाघ पकड़नेकेलिए बीर वेष पहना हुआ था उसको नौ माताएँ आर्शीबाद मिला था उसके एक सौ अनुदास सब सजधज दिखाने लगे।

राजमहलमें महाराजके शुभ मंगलका गीत सुनाया जा रहा था। विधिपूर्वक पूजा आरम्भ हो गई। चिंखुबा युवराज थांगजिं ईश्वरसे प्रार्थना करने लगे। बड़ी धुमधामसे तैयारी हो रही था। सब कूच कर गये। सब मुखिया, प्रजा और अन्यलोग महाराजके साथ साथ राजसी ढगसे राज पथमें जा रहे थे। एकाएक खोइरेनताकके घोर जंगलमें सब एकत्रित हो गये।

बहुत भयंकर स्थान था। यह विस्तृत इलाका है पश्चिमकी ओर पहाड़ियोंकी पंक्तियाँ हैं। बीच बीचमें पेड़ पौधे उग रहे हैं।

कहीं कहीं झाड़ियाँ हैं, झाड़ झंखाड़ हैं। इस स्थानमें सहसा सब लोग इकट्ठे हुए।

कोंगयानब भी अपने एक सौ अनुचारोंके साथ आ पहुंचा। खम्ब भी अपने एक सौ अनुदासोंके साथ घोड़े पर सवार होकर इस प्रान्तरके बीच पहुंचा। खम्ब और नोंगबान खोइरेन्ताकमें एक समय एक दूसरेसे मिले।

सारी प्रजाएं बाघ पकड़नेका तमाशा देखनेकी इच्छासे आ बैठीं। महाराज और युवराज मचानपर आ विराजे, इर्द गिर्द नोंगथोन और थोंगलेन दोनों रक्षकके तौरपर बैठे हुए थे।

खम्ब और नोंगबान दोनोंने महाराज और युवराजके चरणोंमें दण्डवत प्रणाम किया राजा और युवराज दोनों उन्हें आशीर्वाद देते हुए पांच-पांच पान खिलाने लगे। इसके बाद सदस्यों और सब मुखियोंको नमस्कार किया। आखिर खम्ब और नोंगबान बाघ पकड़नेके लिए किलेके अन्दर घुस गए।

× × × × × × × × ×

ग्यारहवाँ परिच्छेद

कै-फावा

(बाघ पकड़ना)

किलेके अन्दर नोंगबानने खम्बसे कहा "मित्र ! तुम दक्षिण दिशामें बाघको खोज करो और मैं उत्तरकी तरफ खोजूँगा।" नोंगबानकी सब बातें खम्बने मान लीं।

इसके बाद कोंगयानबने उत्तरकी तरफ बाघकी तालाशमें जङ्गलमें प्रवेश किया और खम्ब भी ईश्वरकी आराधना करके दक्षिणकी ओर घुस गया।

असलमें उत्तरके घोर वनमें बाघ रहता था। सहसा नोंगबानके घुसते ही बाघ निकला। बाघको देखते ही नोंगबान तुरन्त उसे * तारोनतासे भागना चाहता था। बरछाको बाघने अपने पंजेसे गिरा दिया, बरछा भूमिपर गिर पड़ा; फिर भी कोंगयानबने फ़ौरन † हकथंगतासे बाघको मारा, पर अकस्मात उस शक्तिशाली बाघने इस शूलको दूर फेंक दिया। इसके बाद यह भयंकर बाघ नोंगबानकी ओर झटपट कूद पड़ा। नोंगबानने भी बाघकी कमरको दोनों बाहुबलने पकड़ लिया। दोनों परस्पर मल्ल-युद्ध करते रहे

दुर्भाग्यसे यकायक बाघने नोंगबानको घाव किया। जब कोंगयानबके प्राण लेनेवाला ही था। तब खम्ब कोंगयानब

* तारोनता—दूसरा भाल। † हकथंगता—पहला शूल

नोंगबानके पास शीघ्र आ गया और फौरन बाघके मुँहसे नोंगबानको छीन लिया। अन्तिम कालके समय नोंगबानने क्षीण स्वरमें कहा—"मित्र, मेरा अपराध क्षमा कीजिए, आपके प्रति मैंने हजारों दोष किये थे। पर अब मेरे प्राण पखेरु उड़नेको है। कृपया मुझे एक चुल्लूभर पानी पिलाइए।

नोंगबानकी बात सुनकर खम्बके हृदयमें प्रेम भावनाका विकास हुआ। शीघ्रातिशीघ्रसे पानी खोजकर पिलाया था। उसके बाद नोंगबानके प्राण पखेरु उड़नेमें कुछ ही शेष रह गया था। खम्ब अपने मित्र नोंगबानको लेकर बाहर आया। महाराजके समीप आराम करनेको रख गया।

वैद्य "मानामाइबा" उसका इलाज कर रहा था। खम्ब फौरन बाघके निकट चला गया, बाघ खम्बको देखते ही डरके मारे इधर उधर भागने लगा, पर खम्ब जङ्गलमें बाघके पीछे पीछे दौड़ रहा था। आखिर खम्बके दाहिने पाँवसे बाघकी पूँछको दबानेपर बाघने जब मारना चाहा तो खम्बने उसके मुँहमें हकथंता घुमाया। बाघके प्राण यमवाटमें उतारे गए। फैरोइजाम्बने इस बाघको लेकर महाराजके चरणोंमें उपस्थित दिया।

महाराज बहुत आनन्दित हो गए। सब आनन्दमें डूब गए। सारा वातावरण सुखमय था, पर नोंगबानका परिवार तो दुःखके सागरमें डूबा हुआ था। महाराजने नोंगथोन चाओबा और थोंग लेनके पास आकर कहा "दादा थोंगलेन और चाओबा, सुनो! पुरेनबका बच्चा खम्बने आज इस बाघको पकड़ लिया है, इसलिए

मैं प्रसन्न हूँ। खम्बके पिताकी अपने जीवन कालमें राजमहलमें लालन-पालन अच्छी तरहसे नहीं हुआ, इसलिए खम्बको * खामेन चतपा धोती पहना दी।'

यह कहते हुए स्वर्णकंगन, गहना, स्वर्ण माला, कुण्डल, चादर आदि पारितोषिक महाराजने दिये। पुरेनबकी तरह तीन उपाधियाँ दी गई हैं। ताउथोंग इलाकेमें १२५ एकड़की जमीन दी गई। तोरबुङ्के नाककी खान भी दी गई, लोकताक झीलके तीन सोई (मछली पकड़नेका स्थान) भी दिये गये। खम्बको तीन हाउखुल (नागाके गाँव) का सरदार बनाया गया। कबोके (बर्मा) गाँवका सरदार भी बन गया। उसे इसी तरह नाना प्रकारकी भेंट दी गई। उसके उपरान्त खम्बको पालकाके ऊपर खोइरेनताकसे राज सभातक जानेका अधिकार था। साथ ही फेरोइजाम्बकी भी महाराजने प्रशंसा की। थोंगतेन और चाओबको एक एक तांबुल दिया गया। इसके बाद महाराज और प्रजागण बाघ पकड़नेकी धूमधामसे उत्सव समाप्त होनेके पश्चात् अपने अपने घरमें लौट गए।

मचानपर कबुइ सलांग थौबने नोंगबानके प्राण बचानेके लिए भरसक कोशिश की पर व्यर्थ हो गयी। नोंगबान सदाके लिए सो गया। नियमके अनुसार उसका शव संस्कार किया गया।

---

* खामेन चतपा - यह इनामके रूपमें दी जानेवाली धोती। इसमें पाखंगबका चित्र अंकित होता है। यह राजसी वस्त्र है। यह राजाज्ञाके बिना कोई साधारण आदमी पहन नहीं सकता।

फेरोइजाम्ब अपने दास मुबके साथ खम्बके घरमें आया। अर्द्ध पथमें समाचार पानेकी इच्छासे राजकुमारी थोइबी, खमनु और सेनु तीनों प्रतीक्षा करती रहीं। फैरोइजाम्बने सब खबरें सुनायीं। इस मंगलकी बात सुनते ही वे बहुत प्रसन्न हो गयीं। सब घरमें लौट गयीं।

महाराज प्रजाके साथ राजमहलमें धीरे धीरे वापस चले गये। उस समय चिंखुब युवराजने खम्बको वर दिया। सब मुखिया अपने अपने गृहस्थलमें लौट गये।

× × × × × × × × ×



६ । जि. ब्रजमणि शर्मा कुम्फाल, आर्ट कालेज

खम्ब-थोइबीका शुभ-विवाह

नोंगवानके स्वर्गवास होनेके उपरांत खम्बका कोई खास विरोधका नहीं रहा। कोई शत्रु नहीं रहा गया। उसे पूरी शान्ति मिली। युवराज चिंखुबके मनमें तरह तरहकी भावनाएँ जाग उठीं। सोइरेनताकका बाघ मारनेके छः दिनोंके बाद युबराजने अपनी प्रियसी पुत्री थोईबी को बुलाकर खम्बके साथ बड़ी धुमधामसे शास्त्रानुसार विवहा किया। दहेजमें नाना प्रकारके रंग-विरंगे बस्त्र, तैंतीस आदमी नौकरके रूपमें दिये गये।

भिन्न-भिन्न वर्तन, सोना, चाँदी सब थोईबीको दहेजमें मिला। अपनी इच्छा पुरी होनेपर थोइबी अपने परमप्रिय पतिकी सेवामें हर समय लगी रहती थी। इसके बाद खम्बकी बड़ी बहन खमनुका फ़ीरोइजाम्बसे व्याह किया गया। कुछ बर्षोंके बीत जानेपर खम्बका एक पुत्र पैदा हुआ था। उसका नाम नमगन-यांब सराब रखा गया। आखिर थोइबीने उसकी सहचरी सेनुको लादजा निंङोनलाकपाके साथ शादी कर दी।

थोड़े इन दिनों खम्बका नया भवन बन गया, वह द्वितीय राज महल था। प्रतिदिन खम्ब कांजा-राजदरबारमें जाते वक्त पालकीपर चढ़ा था और लौटते समय घोड़ेपर सवार होकर आया। द्वितीय महाराजके समान खम्ब बहुत दिनोंतक ऊँचे पदपर बिराजित रहा। श्रीमती थोइबी भी महारानी की भाँति अपने प्रियतम पतिकी सेवामें चिरजीवन बिताती रही।

× × × × × × × × ×

परिचय-परिच्छेद

उपसंहार

(अवतार)

खम्ब "नोंगपोक निंगथौ पांगलब" देवताके अवतार थे। थोइबी भी "पानथोइबी देवी" के रूपमें अवतीर्ण हुई थी। कौंगयानब नोंगबान 'तरंखोइनुजा" नामक देवताके अवतार थे। तीनोने थांगजि की इच्छासे जन्म लिये थे। थांगजि ईश्वरकी लीला प्रकट करनेकेलिए वे तीनों इस प्रांतमें (मोइरांग) नर -नारीके रूपमें आविर्भूत हो गये।

प्राचीन कालमें (लगभग ईसवी सन् १०९३) मोइरांग राज्यमें लाइजिंखु तेलहैबा नामक एक राजा राज्य करता था। उनकी पंद्रह रानियाँ थी। दुर्भाग्यसे महाराजका कोई संतान नहीं थी। उनका एक छोटा भाई था, उसका नाम था चिखुब अर्थात चिंखुतेनहैबा। उसको युवराजके पदपर नियुक्त किया गया। युबराजकी ग्यारह पत्नियाँ थीं। उनकी बड़ी पत्नी चिंखुराकपीके गर्भसे सर्वांग सुन्दरी एक लड़कीका जन्म हुआ।

कहा जाता है कि थांगजि ईश्वरकी लीलासे एक दिन यह छोटी सी बाला जिसकी उम्र करीब दो-तीन सालकी थी, राज वाटिकामें मन्द गतिसे टहलती थी इतनेमें थांगजि ईश्वरने एक मायाकी बालिका भेजदी जिसने थोइबीका पूरा रूप धारण किया था। वह लड़की राज महलमें प्रवेशकर गयी, भय-चिंता

रहीत होकर चिंखुराकपी की गोंदमें आकर बैठी। इस समय चिंखुराकपीके हृदयमें वात्सल्य प्रेम जाग उठा, उसने सोचा कि यह बच्ची अपनी ही है। ईश्वरकी लीला है, अतः इस बालिका को बहुत प्रेम करती थी।

थोड़ी देरमें चिंखुराकपी की पुत्री राज महलमें लौट आयी, अपनी माता चिंखुराकपीके पास पहुँची। इस वक्त माताकी गोदमें एक सुन्दर बालिका अमृत पान कर रही थी। इस दृश्यको देखते ही उस छोटी सी बाला को आँखोंसे आँसुओंकी धारा बह रही थी। वह अचरज होकर खड़ी रही वह लड़की हिचक-हिचककर रोने लगी चिंखुराकपीने इस लड़कीको खींचकर अपनी गोदमें रखा। यह समाचार राज-परिवारमें फैल गया कि दैवयोगसे एक अनाथ बालिका आज ही मिली, उसका नाम सेनु रखा गया। सेनुका अर्थ है दासिनीके रूपमें सेवा करनेवाली, घरकी रक्षिकी भी कहते हैं। दूसरी लड़की, इस बालासे (सेनु) अधिक सुन्दर और उत्तन थी; इस कारण उसका नाम थोइबी रखा गया। थोइबी और सेनु दोनोंका छुटपनसे राज-महलमें पालन-पोषण किया गया।

खम्बके पिताजीका नाम पुरेनब था। पुरेनबके पिताजीका दादा खुमन परिवारमें पैदा हुआ था। खुमनके बारेमें कुछ कहना अनुचित न होगा। आदि कालसे मणिपुरके सात विभाग थे उनमेंसे इम्फाल, मोइरांग, और खुमन (मयांगइम्फाल) ये तीन प्रान्त प्रमुख थे। वर्णके अनुसार मैतै लैबाक (मणिपूर) में सात

संप्रदाय होते है— (१) निंथौजा, (२) अङोम, (३) मोइरांग, (४) खावा-ङानबा, (५) खुमन, (६) सारांग लैशांथेम् या चेंले और (७) लुवांग उसकी तरह सात वर्ण हैं। निंथौजा सलाइ (वर्ण) इम्फालमें राज्य करते थे। खुमन सलाइ मयांगइम्फालमें और मोइरांग सलाइ मोइरांग नगरमें राज्य करते थे।

खम्बकी सतान खुमन थी, उसके दादाओंका राज्य खुमन लैबाकमें (मयांग इम्फाल) था। खुमन-संतानके सम्बन्धमें कुछ बातें संक्षेपमें दी जा रही हैं

पुराने कालमें लगभग साठ सौ वर्ष पहले खुमन राज्यमें तीन भाई रहते थे। बड़ेका नाम था हाउरमहन, दूसरेका नाम हाउरम निंगोई याइमा और तीसरेका नाम हाउरमतोन था। पहले और तीसरे भाईका बिवरण निम्न प्रकार है:—

बहुत दिन महले वर्तमान इकोप झीलके किनारेपर एक गूलरका पेड़ था, इसके पास एक दिन एक बुढ़िया मछली पकड़नेकेलिए एक जाल लेकर आयी। उस समय इस पेड़के नीचे *नोंगथ्रै की माला भूमिपर पड़ी रही। इस बुढ़ियाने इस मालाको उठा लिया। तुरंत घरमें लौट आई, अपने पतिको सौंप दी। पतिने यह माला खुमन महाराजको भेंट की। यह माला अतिसुन्दर थी। यह एक शर्तके साथ तीनों भाईयोंको वारीसे एक एक महीनेतक पहन लेनेका फैसला किया गया। एक दिन छोटे भाईकी माला पहननेकी बारी आयी, पर बड़े भाईने नोंगथ्रै

* नोंगथ्रै = एक बिशेष पड़ेका फल - प्रवालकी तरह।

माला पहनी थी। इस हेतुसे छोटे भाईके मनमें बहुत क्रोध आया। इसी कारण छोटे भाईने बड़े भाईको मार डाला। छोटे भाईसे डर कर मझले भाई हाउरम याइमाको मोइरांगमें शरण लेनी पड़ी। वह पहले मोइरांगके पुइदिंग नामक घासके मैदानके पास एक वर्ण कुटिर बनाकर अपना समय काटता रहा। इस कारणसे लोग कहते हैं कि उसको पुइदिंगजम उपनाम दिया गया। पुइदिंगजाम्बने (हाउरम याइमा) मोइरांग की एक कन्यासे विबह कर लिया। उस नारीके गर्भसे एक पुत्र जन्म हुआ। उसका नाम पारेनबा था। तत्पश्चात् पारेनबका वर्ण पुखे्म नामसे विख्यात था। पारेनबने भी अपने पिताके समान एक मोइरांग बालिकासे व्याह किया। उसने पुरेनबा नामक एक गुणवान लड़का पैदा किया, इससे उसका उपनाम "युरेनजम" के नामसे प्रचलित हुआ।

पुरेनबने डांखरैमा नामक एक सुन्दरी कन्याका पाणिग्रहण किया। दोनोंने खमनु और खम्बको जन्म दिया। खमनु लड़की थी और खम्ब लड़का था। खमनु और खम्बके प्रसंग पहले उलेख किया गया है।

पुरेनब कौन है? पुरेनब मोइरांग महाराजके प्रधान-मन्त्री थे। वे बहुत प्रतापी, भरकम शरीर वाले और राजनीतिज्ञ थे। राज-शासनका भार उनके ऊपर था।

एक घटना हुई कि एक वार वे चांखलवाई-गाँवमें टहलने गए। वहाँ दैव्यगतिसे एक सुन्दरी कन्यासे उनकी मुलाकात

हुई इस कन्याको देखते ही वे उसके पास बढ़े और पूछने लगे ''युवती, तुम कौन हो ?

युवतीने कहा "मैं देव कन्या हूँ।"

पुरेनबने निर्भय होकर फिर कहा 'किस कारणसे अकेली यहाँपर रहती हो, किसका इनजार कर रही हो ?"

युवतीने उत्तर दिया "मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

पुरेनब चकित होकर बोला 'क्या चाहती हो देव-कन्ये !"

युवतीने फिर मुस्कराकर कहा—पतिके रूपमें आपको सेवा करना चाहती हूँ।"

उसकी मधुर बातें सुनकर पुरेनब इस युवतीको महाराजके पास लाए। महाराजके समीप इस युवतीको उपस्थित कर उपरोक्त घटनाके बारेमें सब कुछ कह सुनाया। इस बातको सुनकर महाराजने पुरेनबसे कहा "ठीक है, पुरेनब यह युवती देव-कन्या है, इसका ब्याह तुम्हारे साथ अनुचित है, यह तो मेरेलिए योग्य है।" यह कहते हुए महाराजने रानीके रूपमें पुरेनबके हाथोंसे इसी कन्याको ले लिया था। इसके बाद पुरेनब निराश होकर अपने घरमें लौट आए।

महाराजकी कई रानियाँ थीं, उनके बीच सबसे सुन्दर और रूपवती डांखरैमा थी। वह देव कन्या है, वह डांखलबाई नामक गाँवसे मिली है, इससे उसका नाम "डांखरैमा" रखा गया।

वर्तमान मोइरंगकी दक्षिण दिशामें एक गाँवका नाम तोबुंग है यही जगह प्राचीन कालमें भी प्रसिद्ध थी। वहाँ घोर

जंगल था, परन्तु एक उत्सावके उपलक्षमें एक दिन मोइरांग महाराज इसी जगहमें जंगली पशुके शिकार करनेकेलिए अपने मुखियोंके सहित आए थे। इस समय पुरेनब भी महाराजकी सेवामें उपस्थित था। वहाँ कालाबाघ पकड़ने केलिए कोशीश की गयी। चारों ओर मचान बन गई थी, सहसा सात भयंकर बाघ घोर जंगलसे गरज गरजकर निकले। सबलोग भयके मारे भागने लगे, सिर्फ महाराज और पुरेनब उसी जगहमें थे। महाराज भी इन बाघोंसे भयभीत थे, इस वक्त पुरेनब महाराजको मदद् करनेकेलिए आगे बढ़े। पुरेनबने इन सात काले-बाघोंको विना हाथियारसे मार डाला। इस तरह महाराजके प्राण बच गये। इस घटनासे महाराजने पुरेनबके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। महाराजने पुरेनबको अपनी रानियोंसे सबसे सुन्दर रानीको वर दान देनेका निश्चय किया।

इसके उपरान्त सबलोग आनन्दके साथ राज भवनमें लौट आए। राज महलमें पहुँचते ही महाराजने अपनी महारानीके सिवा दस रानियोंको वदनपर पर्दा डाले, पुरेनबके सामने खड़ा किया और पुरेनबसे कहा—"पुरेनब! तुम्हारे अद्‌भुत कार्य मुझे प्रसन्न है, आज तुमको इनाम स्वरूप मेरी दस रानियोंमेंसे एक रानी जो तुम पसंद करते हो उसे देना चाहता हूँ। उसके बाद जितना तुम मांगना चाहो, मांगलो, मैं देता हूँ।

महाराजकी आज्ञापाते ही पुरेनबको डाखालेमकी याद आयी पर घुंघट खोलने की क्षमता उसके पास नहीं थी, इस कारणसे

डांखलैमाका चेहरा नहीं देखा सका। पर एक उपाय है, उसका चेहरा न दिखाई देनेपर भी पादकी निशानिसे डांखरैमाकी पहचान की गई। इसीलिए पुरेनबने डांखरैमाकी अपनी पत्नी रूपमें चुन लिया। इस हेतुसे पुरेनबकी स्त्री डांखरैमा थी। एक गोपनीय बात है कि उस समय डाखरैमाका पाँव भारी हो गया था एक बच्ची जन्मी, उसका नाम खमनु रखा गया। पुरेनबके घरमे उसका जन्म हुआ। इसके बाद खम्बका जन्म हुआ।

× × ×　　× × ×　　× × ×

पुरेनबकी मृत्यु

पुरेनब, थांगलेन और नोंगथोन-चाआब तोनोंमे घनिष्ट मित्रता थी। तीनोंके बारेमे एक पुरानी कथा प्रचलित है। आदि कालमे एक दिन वांगब्रेन, लोकनिगथौ और एक प्रताप शाली पुरुष दक्षिण तरफसे आये।

वतमान शुग्नुमे दोनों देवता वांगब्रेन और लौकनिंथौ ठहरे। जो पुरुष उत्तरकी तरफ आया था, वह वतमान इम्फाल कांगलाके पश्चिममें किसी बड़े पेड़पर "काकयेल-पक्षी" (चील पक्षी) बनकर जा बैठा।

वह पक्षी वहाँका शासन-प्रणाली और अन्य अवस्थाएं देख रहा था पाना (परगना) के बारेमें प्राचीन कालमें मणिपुरमें

मुख्य चार विभाग थे। ये है:—याइस्कूल पाना, वांखै पाना, ख्वाइ पाना और खुराइ पाना। याइस्कूल पानाकी राजधानी इम्फाल कंगलामें थी वहाँ एक राजा राज्य करता था। इसके राज्य कालमें यह काकयेल पक्षी पुरुषका रूप फिर धारण करके महाराजके पास आया और अपनी शक्ति दिखाया। उसकी शक्तिको समझकर महाराजने उन्हें प्रधान मन्त्रीके पदमें नियुक्त किया। तब राज कार्यका भार उसके ऊपर था। उसका नाम "काकयेल सुजा अथौबा" रखा गया।

इस वक्त याइस्कूल पानामें सात भाई थे। वे आपसमें प्रेम रखते थे। वे "लालोइ तरेत" के नामसे विख्यात थे। छोटेका नाम "लालोइ तोम्बा" था। वह बहुत चलाक था, वह महाराजका एक प्रसिद्ध मुखिया भी था। सुजा अथौबा की शक्तिके आगे उनकी कुछ भी न चली इससे सुजाको मार डालनेकी सोची गई। सुजा काकयेलको मारना उनका सामर्थ्य के बाहर था। इसीलिए उसने अपनी औरत को मारनेकी चेष्टा की।

एकबार सुजा काकयेल अथौबा राज कार्यकेलिये राज महल छोड़कर चले गए। उस रातमें याइस्कूल लालोइ तरेत सुजाके घरमें घुस गए। भीतर सुजाके औरत और बच्चा थे। सात भाइयोंको देखते ही उसने कहा "भाइयो, आपको क्या चाहिए? तुम्हारा मित्र तो घरमें नहीं।" लालोइ तरेतने उत्तर दिया— "तुझे मारनेकेलिए हम आये हैं।" उसने अपने प्राण बचानेके लिए बार-बार प्रर्थना की पर उसकी बातें किसीने नहीं सुनीं। तुरंत इस औरतका सिर काट दिया और उसका काटा-मुंड

लेकर चुपचाप वे चले गए। यह छोटा सा बच्चा प्राण हीन माँका अमृत पान कर रहा था कितना करूणाजनक दृश्य था। यह्ा बच्चा सुजाकी औलाद था। थोड़ी देरके बाद काकयेल सुजा अथौब अपने घरमें लौट आया, बाहरसे पुकारता था— "अरे देवी! दरवाजा खोलो। उत्तर नहीं मिला। सुजा अथौब शीघ्र घरमे घुस गया। आहा! उसकी स्त्री सिर हीन होकर चिर निद्रामें सो रही थी।

इस घटनाको देखकर सुजा चकित रह गया! थोड़ी देर वह ध्यान करता रहा, तुरन्त उसने अपने छोटे बच्चेको कन्धे पर उठालिया और पापी अत्याचारोंसे बदला लेनेकेलिए हाथमें तलवार पकड़कर वह बाहर निकला।

इस वक्त लालोइ तरेत दक्षिणकी ओर चले गए। वे एक छोटी सी पहाड़ीमें छिप रहे थे। पहाड़ीका नाम लोकपा-चींग कहलाता है। इसी जगहमें काकयेल सुजा अथौब भी जल्दी पहुँच गया। संयोगसे सात लालोइको मिला। सात भाइयोंको देखते ही सुजाके साथ घोर युद्ध हुआ। आखिर सुजा अथौब ने छः लालोइको मारा।

इतनेमें सबसे छोटा भाई लालोइतोन अपने प्राण बचानेके लिए फौरन दक्षिण तरफ दौड़ने लगा। दौड़ते दौड़ने वह मोइरांग नगरमें आ पहुँचा। सुजाने केवल छः भाइयोंके सिर काट लिए, पर उसे मिले सात सिर; असलमें एक सिर तो उसकी स्त्रीका सिर था। उसने सोचा कि सात भाइयोंके सिर काट लिये गए।

वह सात मुण्ड लेकर अपने घरमें आया। रातका समय था। उसने घरमें लौटते ही देखा कि एक सिर उसकी औरत का था। इस हेतु वह फिर लालोइतोन को मारने के लिए घरसे निकला।

मोइरांग पहूँचते ही लालोइतोन महारानीके पास आया और सविनय अपने प्राण बचानेके लिए कहा—"हे महारानी! मेरे प्राणोंकी रक्षा कीजिए, सुजा अथौबा मुझे मारनेकेलिए पीछा कर रहा है।

उसकी बात सुनकर रानीने कहा "तुम्हारे प्राण बचाना मेरी शक्ति के बाहर है, मुझे अधिकार भी नहीं, मोइरांगमें तुम्हारे प्राण बचाने के लिए कोई भी आदमी नहीं है, सिर्फ एक पुरूष है। उसकी शरणमें जाओ और प्रार्थना करो, जिससे तुम्हारा प्राण बच सके।

रानीकी बात सुनकर लालोइतोनने भयभीत होकर कहा—"बताईए महारानी! वह कौन है?"

रानीने फिर जबाब दिया- वह पुरेनब-मन्त्री है। उसके पास जाकर अनुनय-विनय करो। रानीके आदेशानुसार लालोइतोन पुरेनबके पास आया और उसने उसके चरण छूकर दण्डवत प्रणाम करके कहा—"हे वीर मेरी प्राण-रक्षा करो, मुझे मारनेके लिए सुजा अथौव आ रहा है, इसलिए आपकी शरणमें आया हूँ।

पुरेनबने पुछा "आप कौन हैं? पहले अपना परिचय बताईए। इसके बाद अपना मत प्रगट करता हूँ। पुरेनबकी बाद सुनकर लालोइतोन ने कहा "मैं इम्फाल के महाराजका एक मुखिया हूँ।

राजनीतिके विषयमें हम और सुजा काकयेल अथौबके बीच झगड़ा हुआ। इस कारणसे मेरे भाइयोंको उससे मारा। मैं अकेला ही बच गया। अब आपने प्राण बचानेकेलिए आपके पास आया हूँ। कृपाकरके मेरे प्राण बचानेकेलिए प्रतिज्ञा कीजिए।"

पुरेनबने कहा—"अच्छा मेरे दोस्त, चिन्ता न करो, मैं तुम्हारे प्राण बचाऊँगा।"

लालोइतोनने फिर कहा--"मुझे पूरा विश्वास नहीं बातोंपर अन्य प्रतिज्ञा कीजिए।"

लालोइतोनको बात सुनकर मन्त्री हँसकर बोला - "विश्वास करो मित्र, मैं मन्त्री हूँ, इस राज्यका। सत्य है, ङिब थांगजि इसका साक्षी ही हैं। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारे प्राण बचानेके लिए मैं सब कुछ न्योछावर कर दूँगा।" यह आश्वासन देते हुए लालोइतोनका अपने घरमे स्वागत किया गया।

थोड़ी देरके बाद सुजा अथौब हाथमें तलवार पकड़ कर, कन्धेपर छोटा बच्चा लेकर पुरेनबके पास आ पहूँचा। सुजाको आते देखकर पुरेनबने जोरसे पुकारा और कहा—"आइए मित्र! किस काम केलिए मेरे घरमें आए हैं? पुरेनबका मधुर बचन सुनकर सुजाने कहा—"मन्त्रीवर। आपके पास लालोईतोन है? वह विस्वास घातक अपराधी है, क्यों कि मेरी स्त्रीको उन्होंने विना दोष मारा है, इस कारणसे उन्हें मारना मेरा कर्तव्य हो गया है। यह सत्य है या नहीं? सोचिए मन्त्री जो, मेरे कन्धे-पर एक छोटासा बच्चा है, उसकी माँको पापी लालोइतोनने

मारा है। इसलिए मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि लालोइको पाते ही उन्हें प्राण-दण्ड दूंगा। इसलिए तुम्हारे यहाँ लालोइतोन हो तो उसको मेरे हवाले करो।

सुजा अथौबकी सची बातें सुनकर मन्त्री जी के मनमें नाना प्रकारकी भावनाएं हिल उठीं। फिर कहा "नाराज मत होओ मित्र ! यही विवरण जाननेके पहले प्राण बचानेकेलिए मैंने प्रतिक्षा की थी। इसलिए उसके प्राण बचानेके लिए मैं आखिर निवेदन करता हूँ।"

सुजाने खिल-खिलाकर कहा - 'मित्र आपकी तरह मैं भी प्रतिक्षा कर चुका हूँ उसके प्राण बचानेका आपकी अधिकार नहीं यदि आप उसके प्राण बचाना चाहे तो मैं आपके प्राण यमके घाटमें जरुर उतारुँगा नहीं तो उसके प्राण कैसे बच सकते हैं ?"

पुरेनबने फिर मुस्काराकर कहा 'ठीक ही हैं मित्र ! मुझे शरणागत के धर्मका पालन करना चाहिए साथ ही मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। अतः आप मुझे मारना चाहें तो मार सकते हैं।

पुरेनब जैसे बहादुरकी बातें सुनकर सुजाने प्रसन्न होकर कहा "आप शूरवीर हैं अच्छा आप मुझे अपना मित्र समझो। अब तुम्हारा मुकाबला मुझे नहीं करना चाहिए, पर मेरे जादू -मन्त्रकी शक्ति देख लो, कल राज-दरबारमें तुम्हारा प्राण पखेरू उड़ जाएगा।"

इस वक्त पुरेनबने सुजासे सविनय कहा "कृपा करके लालोइ-तोनको अपना मित्र बनाइए। सुजाने उत्तर दिया "हाँ ठीक

बात है, मैं राजी हूँ। मेरे सामने लालोइतोन को निकाल दो।" सुजाकी बाणीके अनुसार पुरेनब ने लालोइतोनको उसके आगे कर दिया और कहा "मित्र लाजोइतोन, आप सुजाके मित्र बनिये। आजसे बैरको भावना भूल जाइए खुशी खुशीसे मित्र बनिये।

पुरेनबकी बात सुनकर लालोइतोनने फिर कहा मुझे विश्वास नहीं यदि सुजाके पुत्रको मेरी जिम्मेदारीमें रखा जाय तो मैं पूरा विश्वास करूँगा।

मैं पापी हूँ, उसके प्रति मैं अपराधी हूँ, क्योंकि बिना दोषसे इसे इस बच्चेकी माँको मारा, इस कारणसे इस बच्चेका लालन-पालन करना मेरा कतव्य है। यदि मुझे यह बच्चा मिल गया तो सुजाको मित्र हो समझूंगा। नहीं तोविश्वासनहीं कर सकता।

इसके बाद पुरेनब उसके मित्र सुजाको घरमें नाना प्रकारके भोजन खिलाकर ठहरानेका प्रबंध किया।

मोइरांगमें रहकर सुजा काकयेल अथौबका नाम "थोंगलेन अथौब।" में बदल गया। उसी तरह लालोइतोनका नाम भी "चाओब" रखा गया

दूसरे दिन राज दरबारमें मुखिया आदि प्रमुख शासन कर्ता सब इकट्ठे हुए। महाराज और युवराज भी कंगलामें आ बिराजे। इतनेमें पुरेनब थोंगलेन अथौब बच्चेके सहित और चाओब राजदरबारमें हाजिर हो गए। सब समाचार महाराजको सुनाया गया।

पुरेनबकी बातें सुनकर महाराज आश्चर्यान्वित हो गए। इस समय थोंगलेन अथौबने कहा "पुरेनब! आपके प्रणके अनुसार आज आपको मन्त्र द्वारा मारा जायगा। इस अंतिम समयमें अपने इष्ट देवता का नाम स्मरण करो।

सत्यवादी थोंगलेन का वचन सुनकर पुरेनब ने हाथ जोड़कर महाराजसे सविनय कहा 'हे राजन् मैं आज सबसे चिर विदा ले रहा हूँ, कृपा करके मेरे पदपर मित्र थोंगलेन को नियुक्त किया जाय" पुरेनब की बातोंसे महाराज राजी हो गए।

इसके पश्चात् पुरेनब ने फिर कहा "चाओब भी मेरा मित्र है, कृपया उसको किसी पदपर नियुक्त कीजिए।" पुरेनब की अंतिम प्रार्थना महाराज ने मान ली। इसके बाद पुरेनब ने थोंगलेन से कहा 'हे मित्र आपका छोटा बच्चा चाओब के पास पुत्रकी भाँति रहेगा। उससे मित्रता रखो, इसके बाद मेरे प्राण आप ले सकते हैं।

थोंगलेन उसके बच्चे को चाओबा को पोष्य-पुत्रकी तरह सौंप दिया। स्वयं चाओब ने भी इस बच्चे को अपने बच्चेकी भाँति लेकर गोदमें उठालिया, इस कारणसे इस बच्चेका नाम "फैरोइजाम्ब" रखा गया। चाओब और थोंगलेन राजदरबारमें प्रतिज्ञा करनेके पश्चात् आलिंगन करते हुए मित्र बने। उसके उपरान्त थोंगलेन ने अपने प्रणकी रक्षा करनेकेलिए तथा पुरेनबके प्राणलेनेको महा जादू मन्त्रका प्रयोग किया और म्यानसे तलवार

निकालकर भूमिपर सात लकीरें अंकित कीं। एकाएक पुरेनबका शरीर राजदरबारमें शिथिल पड़ गया।

राज दरबार भंग हो गया। पुरेनब अपने घरमें पहूँचा और बीमारी की शय्यामें लेट रहा। अंतिम अवस्था आनेपर पुरेनब ने खमनु और खम्ब दोनोंको थोंगलेन की निगरानीमें रखा और कहा 'मित्र, मेरी कन्याको चाओबके बच्चे फैरोइजाम्ब को वाग्दान दिया जाय।' इसके बाद पुरेनब का प्राण पखेरु उड़ गया।

पुरेनब के मरनेके बाद थोंगलेन को प्रधान मन्त्रीके पदमें नियुक्त करनेका प्रस्ताव किया गया, पर थोंगलेन राजी न हुआ। पर वह बड़े मन्त्रीका भार तो संभाल कर रहा। साथ ही उसने सेनापतिका भार भी संभाला। फिर चाओब को "नोंगथोन" (मंत्री पदपर नियुक्त किया गया। पहले वह गोदामका संचालक बना, बादमें मन्त्रीके रूपमे कार्य करता रहा।

कुछ वर्षोंके बाद एक दिन थोंगलेनके पीछे खमनु और खम्ब घरसे बाहर निकले। वे दैवयोगसे पहाड़ियोंके एक गाँवमें पहुंचे। इस गाँवका नाम मकंग थगाल हाउ खुल था। वहाँ माङ्गका राज्य था, कबुइ सालांग उसी गाँवका विशेष मुखिया या प्रतिनिधि था। वह कबुइ तोम्बका पुत्र था। लोग कहते है, वहाँका राजा "खुल्लाकपा" (गाँवका सरदार) है। वह पुरेनब का पुराना मित्र था कई वर्षोंतक यहाँ भाई और बहिन दोनों कबुइ

खालांग खुल्लाकप के वहाँ अपना समय काटने लगे। इसके बाद लौंगै झीलके किनारे फिर रहते थे। इसका विवरण पहले परिच्छेदमें उल्लेख किया गया है।

× × ×   × × ×   × × ×

प्रेम परीक्षा

नोंगबान की मृत्युके पश्चात् खम्ब अपने पिताजी पुरेनबकी तरह मोइरांग राज्यके प्रधान मन्त्रीके पदपर विराजमान थे। दुःखकी बात है कि एक दिन खम्ब अपनी प्रियसी थोइबीके प्रेमकी परीक्षा लेने केलिए, आंधी रातके समय अपने घरमें अन्य -पुरूष वेषमें बनकर अपनी आवाज और स्वभाव बदलकर थोइबीका मजाक किया और पुकारा "थोइबी! थोइबी!! तुम्हारा पति खम्ब कहाँ गया।"

इस समय राजकुमारी थोइबी अपने कमरेमें अकेली रहती थी। नाना प्रकारके सुख-शान्तिमें भावनासे डूबी रही। यह आवाज सुनते ही उसने सोचा कि "यह अन्य पुरुष है, किसलिए पतिकी अनुपस्थितिमें आंधी रातमें मुझे हंसी मजाक क्यों करता है? इस विपरीत बुद्धिसे राजकुमारी आग बाबुला हो गई। क्रोधकी सीमा न रही। सहसा उसने दरवाजा आंधा खोलकर एक तेज छूरी फेंक दी।

आहा! यह अस्त्र अपने पतिके हृदयमें विंध गया, उसके प्राण मृत्युके घाटमें उतरने लगे।

आहतको आवाज सुनते ही एकाएक राजकुमारी एक मशालके द्वारा बाहर निकली। अभाग्यसे अन्य पुरुष नहीं था, अपना पति खम्ब ही था, वह भूमिपर गिर पड़ा; मरे हुए आदमी की तरह। इस घटनाको देखकर अभागिनी सती थोइबी के शोककी सीमा न रही। अपने बारबार अपने पतिको हृदयमें आलिगन करते हुए बिलाप किया, पर सब व्यर्थ। अपने पतिके प्राण बचानेकेलिए खूब सेवा की। हाय, विधिकी लीला है, आयु रोकने की शक्ति सतीके हाथमें नहीं थी। इस कारणसे वह हिचक हिचक कर रोने लगी। उपाय हीन था। मरने के अलावा कोई उपाय न था, इसलिए वह उसी छूरीको हाथमें पकड़कर पतिकी अनुगामिनी बननेकेलिए आत्माघाट करनेकी तैयारी की। स्वय अपने हृदयमें छूरी बिधकर आत्माघाट किया। उसी तरह प्रेमा प्रेमिकाओंके प्राण एक युवक-युवतीके रूपमें दैव्य-रथसे स्वर्ग चढ़ गए। वही, चिङुब-थांगजिको लीला है

* समाप्त *

ॐ शान्ति !! शान्ति !! शान्ति !!!

× × × × × × × × ×